टाल्सटाय

की

कहानियाँ

अनुवादक

श्री रामचन्द्र टण्डन

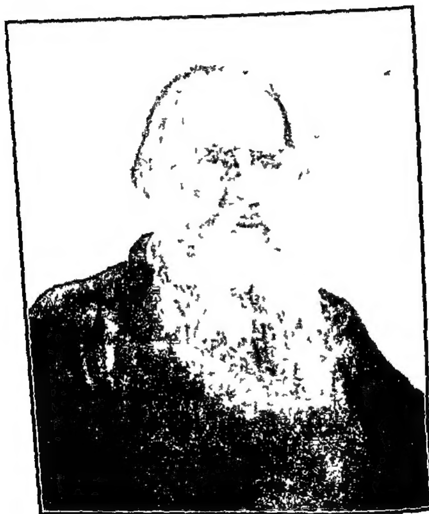
प्रकाशक

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

१९२९

मूल्य १॥)

Published by K. Mittra at the Indian Press, Ltd., Allahabad



काउन्ट लिओ टालसटाय

टाल्सटाय की कहानियां

इलियास

एक समय की बात है, ऊफा* के परगने में, इलियास नामक एक बाशकर† रहा करता था। उसका बाप, उसके विवाह के एक ही साल के पीछे मर गया और विशेष जायदाद भी नहीं छोड गया। बाप की मृत्यु के समय इलियास के पास केवल सात घोडिया, दो गायें और लगभग बीस भेडें थीं। परन्तु इलियास प्रबन्धकर्ता अच्छा था। थोडे ही दिनों में उसने इस संख्या को बढा लिया। उसकी स्त्री भी कामकाजी थी। दोनो सवेरे से लेकर रात तक काम-धन्धे में लगे रहते थे। औरों से पहले उठते और औरों के बाद बिस्तर पर जाते। फल यह हुआ कि उनकी सम्पत्ति दिन-दिन बढने लगी। इस प्रकार इलियास ने धीरे धीरे बहुत सम्पत्ति बढ़ा ली। पैंतीस वर्ष के अनन्तर उसके-

---

* रूस देश में है।

† एक जाति विशेष।

पास २०० घोडे, १५० गाय-बैल और १२०० भेडें हो गईं, नौकर-चाकर भी हो गये। मजदूर लोग उसकी गायोंके झुण्ड और भेडों के गल्ले को चराते, और मजदूरिनें घोडियो और गायो को दुह कर कुमिस*, मक्खन और पनीर तैयार करतीं। इलियास के पास सभी वस्तुये बाहुल्य से थीं और उसके ऐश्वर्य को देखकर जिले के सभी लोग मुँह मे पानी भर लाते और कहते कि—

"इलियास बडा भाग्यवान् है। उसे किसी वस्तु की कमी नही है। ससार में उसके ऐसा सुखी कौन होगा!"

बडे बडे लोग, इलियास का नाम सुनकर, उससे मिलने को आते। दूर-दूर के लोग उससे भेट करने आते। इलियास सब का स्वागत करता, उन्हे खिलाता पिलाता। चाहे कोई भी अतिथि आता, कुमिस, चाय, शरबत और भेड के मास से उसका सत्कार होता। जब अभ्यागत आ जाते तब एक भेड जबह की जाती। कभी-कभी दो भेडें भी जबह होती और यदि बहुत से अभ्यागत आ जाते तो इलियास एक घोडी जबह करा देता।

इलियास के तीन सताने थीं—दो बेटे और एक बेटी। वह इन तीनों का ब्याह कर चुका था। जिस समय इलियास गरीब था, उसके बेटे भी उससे मिल-जुलकर काम किया करते थे। उसके गाय-बैल, भेडो की आप देख रेख किया करते थे। लेकिन

* घोडी के दूध से बना हुआ एक प्रकार का मद।

जब उसके पास पैसा हो गया तब लड़के भी बिगड़ गये। एक को शराब पीने की बान पड़ गई। बड़े लड़के ने एक झगड़े में जान गँवाई। छोटे ने एक दुष्टा स्त्री से विवाह कर लिया। उसी के कहने मे रह कर बाप की आज्ञा न मानता। बाप-बेटे का साथ न निभ सका।

इससे दोनो अलग हो गये। इलियास ने अपने बेटे को एक घर दे दिया। कुछ जानवर भी दे दिये। यहीं से इलियास की सम्पत्ति का ह्रास आरम्भ हो गया। कुछ समय बाद, इलियास की भेड़ो मे बीमारी फैली, और बहुत सी भेड़ें मर गई। इसके बाद एक फस्ल मारी गई। चारा भी न हुआ। इस कारण जाड़े के दिनो में बहुत से गाय-बैल भी मर गये। फिर क्या हुआ, कि किरग़ीज़ ※ लोग उसके सबसे अच्छे घोडों को लूट ले गए। इस प्रकार इलियास की सम्पत्ति चुक गई। सम्पत्ति तो उसकी नित्य घटती ही गई, साथ ही साथ उसका बाहु-बल भी घटता गया। यहा तक कि जब वह सत्तर वर्ष का हुआ तब इलियास को क़ीमती खालों की पोशाकों, क़ालीनों, खेमों, और काठियों के बेचने की नौबत आ गई। अन्त में एक-एक करके बचे बचाये जानवर भी बिक गये और उसे दरिद्रता का सामना करना पड़ा। जब-तक अपनी अवस्था को सँभालने का प्रयत्न करे तब तक उसका सब

※ बृमरी जाति विशेष।

कुछ नाश हो गया और बुढापे में उसे तथा उसकी स्त्री को रोटी के लिए दूसरे की नौकरी करनी पडी। इलियास के पास शरीर पर के कपड़ों व जूतों को छोडकर एक खाल का लबादा शेष रह गया। उसकी स्त्री, शम-शमेगी भी बुड्ढी हो गई थी। उसका बेटा अलग होने के बाद दूर देश को चला गया था। उसकी बेटी भी मर चुकी थी। अतएव इस बुड्ढे जोडे का अब कोई सहारा न रह गया।

मुहम्मद शाह नाम के एक पडोसी ने उन पर तरस खाई। मुहम्मद शाह न अमीर ही था और न गरीब। अपने खाने-पीने से अच्छा था। आदमी भी भला था। उसे इलियास की पुरानी दावतें याद आईं और उसने उस पर तरस खाकर कहा—

"इलियास, तुम अपनी बुढिया को लेकर मेरे यहा आ जाओ। गर्मियो में, जहा तक तुम्हारा पौरुष चले, हमारे खरबूजे के खेतों में काम किया करना और जाड़ों मे गाय-बैलों को चारा डाल दिया करना। शम-शमेगी घोडियो को दुह कर कुमिस बनाया करेगी। हम, तुम दोनों को खाना-कपडा देंगे और जब तुम्हें किसी वस्तु की आवश्यकता हो तो बताना, मिल जायगी।"

इलियास ने अपने पड़ोसी को धन्यवाद दिया और अपनी स्त्री के सहित मुहम्मद शाह के यहा रह कर मजदूरी करने लगा। पहले तो उसे अपनी अवस्था बहुत कठिन जान पड़ी लेकिन कुछ दिनों बाद अभ्यास पड गया। बुड्ढे बुड्ढी जो कुछ बन पडता काम करते और पड़े रहते।

ऐसे आदमियो को अपने यहा रखने मे मुहम्मद शाह को भी लाभ था। क्योंकि इन लोगो का भी किसी समय जमाना था। इन्तजाम करना जानते थे। आलसी न थे। जहा तक बन पडता काम किया ही करते। तो भी ऐसे आदमियों के बुरे दिन देखकर मुहम्मद शाह को दु ख होता था।

एक बार मुहम्मद शाह के यहा दूर से कुछ सम्बन्धी उससे भेट करने आये। उनके साथ एक मुल्ला भी था। मुहम्मद शाह ने इलियास से एक भेड मारने को कहा। इलियास ने भेड मार कर उसकी खाल अलग की और मास पकाकर अतिथियों के सामने भेजा। अतिथियों ने मास खाया, थोडी-सी चाय पी, इसके बाद कुमिस पीने लगे। लोग घर के मालिक के साथ क़ालीन के फर्श पर गद्दिया लगाये बैठे थे, बात-चीत करते हुए कुमिस पी रहे थे। इसी बीच मे, इलियास, अपना काम समाप्त करके, उधर, खुले द्वार से, निकला। मुहम्मद शाह ने उसे निकलते देखकर अपने एक अतिथि से कहा—

"उस बुड्ढे आदमी को, जो इधर से गया है, तुमने देखा ?"

अतिथि ने कहा—"हा, उसमें कौन सी देखने की बात है ?"

मकान के मालिक ने फिर कहा—"कुछ नहीं,—यही कि किसी समय यह यहा का सब से अमीर आदमी था। इसका नाम इलियास है। शायद तुमने इसका नाम सुना होगा।"

अतिथि—"इलियास! सुना क्यों नहीं है? मैंने इसे कभी देखा तो नहीं है लेकिन मशहूर तो यह दूर-दूर तक है।"

मुहम्मद शाह—"हाँ, लेकिन अब बेचारे के पास क्या रहा है। मेरे ही यहाँ रह कर मजदूरी करता है और इसकी बुढिया भी है—घोडियों का दूध दुहती है।"

अतिथि को बडा आश्चर्य हुआ। जीभ चटकार कर उसने सिर हिलाया और कहा—"भावी चक्र की तरह घूमती है। किसी को उठाती है तो किसी को गिरा देती है। यह बुड्ढा आदमी अपने दिनो को याद करके पछताता न होगा?"

मुहम्मद शाह—"कौन जाने? हमारे यहाँ तो चुपचाप, शान्तिपूर्वक रहता है और काम भी ठीक करता है।"

अतिथि—"मैं इससे पूछकर देखूँ! इसका कुछ हाल जानना चाहता हूँ।" घर के मालिक ने कहा—"पूछो न।" यह कह उसने बैठक से आवाज लगाई।

"बाबे* जरा यहाँ आ जाओ। थोडी सी कुमिस पीलो! बाबी को भी बुलाते आना।"

इलियास अपनी स्त्री के साथ आ गया। अपने स्वामी और अतिथियों से सलाम बन्दगी करके कुछ प्रार्थना की और फिर द्वार के पास बैठ गया। उसकी स्त्री परदे के पीछे मलकिन के पास जा बैठी।

---

* बाशकिर भाषा में इसका अर्थ "दादा" हुआ।

इलियास के सामने कुमिस का एक प्याला बढा दिया गया। उसने अपने स्वामी और अतिथियों की दुआ की और फिर थोडी-सी पीकर प्याला रख दिया।

वह अतिथि, जो प्रश्न करना चाहता था, बोला—"दादा यह बताओ कि हम लोगों की अवस्था देख कर तुम्हें दुःख नहीं होता ? तुम्हे अपनी अमीरी के दिन याद आने पर दुःख होता होगा ?"

इलियास मुसकुराया और बोला—"अगर मैं आप से कहूँ कि सुख क्या है और दुःख क्या है तो आप मेरा विश्वास न मानेंगे। आप मेरी स्त्री से पूछ देखें। वह स्त्री है और जो कुछ उसके मन मे है वही उसकी जीभ पर भी है। वह आप लोगों से सब सच सच बता देगी।"

अतिथि ने परदे की तरफ मुँह फेरा। "अच्छा दीदी तुम्हीं बताओ कि तुम्हारे पहले सुख मे और आजकल के दुःख मे क्या भेद है ?"

शम-शमेगी ने परदे की ओट से जवाब दिया।

वह बोली—"मेरे मन की बात तो यह है कि पचास वर्ष तक अपने पति के साथ रह कर मैं सुख की खोज करती रही। लेकिन हमे सुख न मिला। सुख तो हमें अब दो बरसों से—जब से मजदूरी कर रही हूँ—मिला है। हम लोग जैसे हैं बहुत अच्छे हैं। इससे बढ कर हमे कोई अभिलाषा नहीं है।"

अतिथियों को बडा आश्चर्य हुआ। घर के मालिक को भी बडा आश्चर्य हुआ। बुढिया का मुँह देखने के लिए उसने परदा हटा दिया। वह हाथ बाँधे खडी थी और अपने बुड्ढे पति की ओर देखकर मुसकुरा रही थी। उसका पति भी उसे देखकर मुसकुराया। बुढिया बोली —

"मै सच कहती हूँ, हँसी नहीं करती। पचास बरस तक हम सुख की खोज मे रहे। लेकिन जब तक अमीर रहे सुख न मिला। अब जब हमारे पास कुछ न रह गया और मजदूरी करके पेट भरने लगे, तब हम बडे चैन से हैं। और हमे किसी बात की लालसा नहीं है।"

अतिथि ने पूछा—"लेकिन तुम्हे सुख मिला किस बात मे ?"

बुढिया—"इसी मे तो। जब हम अमीर थे तब मेरे पति को और मुझे न जाने कितनी चिन्तायें लगी रहती थीं। आपस में बात करने तक का समय न मिलता, न अपनी आत्मा की चिन्ता करने का, न मालिक की इबादत करनेका। कभी मेहमान आ गये तो उनकी आवभगत की फिक्र करनी पडती। उन्हे क्या खिलायें, क्या नजर करें, जिसमें वह बुरा न माने। उनके जाने पर मजदूरो की देख-रेख करनी पडती। वे लोग खाना तो अच्छा से अच्छा माँगते लेकिन अपना काम एक दूसरो पर ठेला करते। हम लोग इस चिन्ता मे रहते कि काम इनसे कस कर लेना चाहिए। इस तरह हम पाप ही करते। फिर यह चिन्ता रहती कि भेडिया घोडी

या गाय के बछड़ो को न मार ले जाय, चोर घोड़े न चुरा ले जायँ। रात को भर नींद सोते न थे। यह सोचा करते कि कहीं भेड़े अपने बच्चों को न कुचल दें, बार-बार उठ कर देखा करते कि सब ठीक तो है। एक काम पूरा करते तो दूसरा खड़ा हो जाता था। कभी यही फिक्र रहती कि जाड़े में चारा कहाँ से आवे। इसको भी छोड़ो। कभी-कभी हमारी और हमारे बूढे की सलाह न पटती। वह कहता ऐसा ऐसा होना चाहिए मैं कुछ और कहती। यह भी पाप करती। एक दुःख के बाद दूसरा दुःख, और एक पाप के बाद दूसरा पाप लगा ही रहता, चैन कभी न मिलता।"

"अच्छा अब ?"

"अब मेरा बूढा और मैं सवेरे सोकर उठते हैं तो प्रेम से दो बातें तो करने को मिल जाती हैं और शान्ति में रहते हैं, कोई झगड़े की बात नहीं। स्वामी को प्रसन्न रखने को छोड़ कर दूसरी फिक्र नहीं। जहाँ तक पौरुष चलता है खुशी-खुशी काम करते हैं—जिसमें मालिक का नुकसान न हो, फायदा ही हो। काम करने के बाद खाने को मिल जाता है। पीने को कुमिस भी मिल जाती है। जाड़े में तापने को लकड़ी मिलती है। फिर अपना खाल वाला गरम लबादा भी है। दो बातें करने का, आत्मा की सोच करने का, विनती करने का समय मिल जाता है। पचास बरसों तक सुख की खोज में रहे, लेकिन सुख तो अब आ के मिला है।"

अतिथि लोग हँसने लगे।

लेकिन इलियास ने कहा—"दोस्तो, हँसो न। यह हँसी की बात नहीं है। जिन्दगी का सार यही है। हम भी पहले मूर्ख थे। धन के चले जाने पर रोते थे। किन्तु मालिक ने सच्चा रास्ता दिखा दिया। मैं अपने आप को समझाने के लिए ऐसा नहीं कहता। आप ही के भले की बात है।"

मुल्ला भी बोल पड़ा "बहुत ठीक बात है। इलियास ने बहुत सच्ची बात कही है। यही हमारे पाक कुरान में भी लिखा है।"

अतिथियों की हँसी जाती रही और वे लोग विचार करने लग गये।

परीक्षा



व्लादिमिर नगर में ईवान दीमित्रिच अक्षयानफ़ नाम का एक युवा सौदागर रहता था। नगर में उसकी दो दुकानें थीं और एक घर भी था। अक्षयानफ़ एक सुन्दर युवक था, उसके बाल मुलायम और घुघराले थे, हँसोड था और उसे गाने का बडा शौक़ था। जब वह लडका था तब शराब पिया करता था और जब ज्यादा पी जाता तब हुल्लड भी मचाता। परन्तु जब से उसने विवाह किया तब से यह लत छोड दी। ऐसे ही कभी इच्छा होने पर पी लिया करता।

एक-बार गर्मी के दिनों में अक्षयानफ़ नीजनी के मेले में जाने लगा। अपने परिवार से जिस समय विदा होने लगा उस समय उसकी स्त्री ने कहा—"ईवान, आज तुम यात्रा न करो। मैंने तुम्हारे सम्बन्ध में एक बुरा स्वप्न देखा है।"

अक्षयानफ़ हँसा और बोला—"तुम डरती हो कि मैं मेले में जाकर बहक न जाऊ।"

उसकी स्त्री ने उत्तर दिया—"किस बात का मुझे डर है, यह तो मैं नहीं जानती, लेकिन मैंने स्वप्न बहुत बुरा देखा है। मैंने देखा है कि जब तुम नगर में लौटे हो—और तुमने अपनी टोपी उतारी है तब तुम्हारे बाल बिल्कुल सफ़ेद हो गये हैं।'

अक्षयानन्द हँसा, फिर बोला—"यह तो अच्छा शकुन है। अबकी बार अपना सब माल बेचकर न लौटूं तभी कहना। तुम्हारी भेंट के लिए भी मेले से चीजें लाऊंगा।"

इस प्रकार वह अपने बाल-बच्चों से विदा हुआ और गाड़ीपर सवार होकर चला।

आधा रास्ता जाने के बाद एक दूसरे सौदागर से उसकी मुलाकात हो गई। इसे वह पहले से जानता था। वे दोनों रात को एक ही सराय मे ठहरे, साथ ही चाय-पानी किया और फिर बराबर के कमरे में सोये।

अक्षयानन्द की देरतक सोने की आदत न थी, और इस विचार से कि ठंडे मे कुछ दूर निकल चलें, उसने अपने साईस को जगाया और उससे घोडा जोतने को कहा।

इसके बाद वह सराय के भठियारे के पास गया और उसका हिसाब चुकता करके अपनी राह ली।

पचीस मील की यात्रा के बाद घोड़ों को खिलाने के लिए वह रुका। अक्षयानन्द ने थोडी देरतक सराय की दहलीज़ में दम लिया, उसके बाद बाहर आकर पानी गरम करने के लिए अंगीठी जलाने को कह कर बैठ गया और अपना सितार निकाल कर बजाने लगा।

अचानक गाडी की घंटी बजी और तीन घोड़ो की एक गाड़ी वहीं पर आकर खड़ी हो गई। उसपर से एक अफ़सर दो सिपा-

हियों को साथ लिये हुए उतरा। वह अहयानक के पास आकर उससे सवाल करने लगा कि तुम कौन हो और कहा से आ रहे हो? अहयानक ने उसके सवालों का ठीक-ठीक जवाब दिया। उसके बाद कहा—"आइए, कुछ चाय-पानी कीजिए" लेकिन वह अफ़सर जिरह करता गया कि "तुम कल रात कहा ठहरे थे? तुम अकेले थे या तुम्हारे साथ और कोई सौदागर था? तुम भोर होने से पहले ही सराय से क्यो चले आये?"

अहयानक को आश्चर्य हो रहा था कि उससे ऐसे प्रश्न क्यों किये जा रहे हैं, लेकिन उसने पूरा-पूरा हाल बता दिया और उसके बाद कहा—"आप तो मुझ से ऐसे प्रश्न कर रहे हैं मानो मैं चोर या डाकू हूँ। मैं अपने धंधे से यात्रा कर रहा हूँ, मुझसे इन सब सवालों से मतलब?"

इसके बाद अफ़सर ने सिपाहियों को बुलाकर कहा—"मैं इस जिले का पुलिस-अफ़सर हूँ और मैं तुमसे यह सब सवाल इसलिए कर रहा हूँ कि जिस सौदागर के साथ तुम रात रहे हो उसका गला कटा मिला है। हम तुम्हारी तलाशी लेंगे।"

वे लोग मकान में घुस गये। सिपाहियों ने और पुलिस-अफ़सर ने अहयानक का असबाब खोलकर तलाशी ली। अचानक अफ़सर ने थैले से एक चाकू निकाला और चिल्लाकर बोला—"यह चाकू किसका है?"

अक्षयानफ़ ने देखा तो चाकू मे खून के दाग थे और ऐसे छुरे को अपने बेग मे निकलते देखकर वह काप उठा।

"इस छुरे पर खून के दाग कैसे आये ?"

"अक्षयानफ़ ने उत्तर देना चाहा मगर उसकी घिग्घी बध गई। हिचकता हुआ बोला—"मैं-मैं नहीं जानता, मेरा नहीं है।"

इसपर पुलिस-अफसर ने कहा—"आज सवेरे, बिस्तर पर, सौदागर का गला कटा हुआ पाया गया है। अगर यह काम तुमने नहीं किया तो फिर किसने किया ? मकान मे बाहर से ताला लगा हुआ था, कोई दूसरा आदमी वहा था नहीं। तुम्हारे बेग में खून से सना हुआ छुरा मिल रहा है, तुम्हारी शकल और हरकत सब क़िस्सा कहे देती हैं। तुम मुझसे साफ बताओ कि उसे कैसे मारा और उसका कितना रुपया चुराया ?"

अक्षयानफ़ ने सौगन्ध खाई कि यह काम मेरा नहीं है। साथ चाय पीने के बाद मैंने सौदागर को देखा ही नहीं। उसके पास निज के आठ हजार रूबल * थे, चाक़ू उसका नहीं था। लेकिन उसकी आवाज उखडी हुई थी। उसका चेहरा पीला पड गया था और डर से वह ऐसा काप रहा था कि मानो यह काम उसी का है।

पुलिस-अफसर ने सिपाहियो को हुक्म दिया कि अक्षयानफ़ को बाध लो और गाडी में डाल दो। जब सिपाहियो ने उसके पैरो को

* करीब १५०००) रुपये।

बाध कर गाडी मे डाल दिया तब तो अक्सयानफ पडा हुआ रोने लगा। उसके रुपये और असबाब छीन लिये गये और वह सब से निकट के नगर में ले जाकर कैद किया गया। उसके चाल-चलन के बारे मे व्लाडिमिर मे पूछ-ताछ हुई। वहा के सौदागरा तथा अन्य निवासियों ने बतलाया कि पहले तो यह मद जरूर पीता था और आवारगी करता था लेकिन इधर इसका चाल-चलन अच्छा हो गया था। इसके बाद अदालत मे मुकदमा चला और वह एक रयाजान के सौदागर की हत्या करने और उसका बीस हजार रूबल चोरी करने के लिए अपराधी ठहराया गया।

उसकी स्त्री पर पहाड़ टूट पडा, उसकी समझ ही मे न आता कि क्या करूँ। उसके बच्चे अभी सब छोटे-छोटे थे, एक बच्चा तो दूध पीता था। सब को साथ लेकर वह उस नगर में पहुँची जहा उसका पति कैद था। पहले तो उसे पति से मिलने की इजाजत ही न मिली, परन्तु अफसरो की बडी मिन्नतें करने के बाद वह अपने पति से मिल पाई। जब उसने अपने पति को जेलखाने की पोशाक में, हथकड़ी पहने हुए अपराधियों और चोरो के साथ देखा तब वह मूर्छित होकर गिर पडी। बडी देर के बाद उसे सुध आई। उसने अपने बच्चों को छाती से लगा लिया और वहीं बैठ गई। उसने अपने पति से घर का सब समाचार कहा, फिर उससे सारी घटना का हाल पूछा।

अक्षयानफ़ ने सब हाल कह सुनाया। तब स्त्री ने पूछा कि "हमें अब क्या करना चाहिए ?"

"तुम्हें जार के पास प्रार्थना-पत्र भेजना चाहिए कि एक निरपराध व्यक्ति को इस प्रकार दण्ड न दिया जाय।"

स्त्री ने कहा—"जार के पास मैंने प्रार्थना-पत्र भेजा था लेकिन उसकी कुछ सुनाई न हुई।"

अक्षयानफ़ ने कुछ उत्तर न दिया, वह सिर नीचा किये देखता रहा।

उसकी स्त्री ने कहा—"मैंने जो स्वप्न देखा था कि तुम्हारे बाल पक गये हैं, वह झूठ नहीं हुआ। तुम्हें याद है ? उस दिन तुम्हें घर से न चलना चाहिए था" इसके बाद अपने पति के बालों पर हाथ फेरते हुए वह बोली—"प्रियतम, अपनी स्त्री से तो सच-सच बता दो, तुम्हारा तो यह काम नहीं है ?"

अक्षयानफ़ बोल उठा—"अरे, तो क्या तुम भी मुझ पर सन्देह करती हो ?" वह हाथ से अपना मुह ढक कर रोने लगा। इसके बाद एक सिपाही आया। उसने कहा—स्त्री-बच्चों को अब बाहर जाना चाहिए। अन्त में अक्षयानफ़ ने अपने बीबी बच्चों से अन्तिम विदा ली।

जब यह लोग चले गये तब अक्षयानफ़ ने सब बातों पर फिर से विचार किया और जब उसने यह सोचा कि मेरी स्त्री तक ने मुझपर सन्देह किया है तब तो वह अपने आप कहने

लगा—"जान पड़ता है कि सत्य को केवल भगवान जानता है, उसी से विनय करना चाहिए और उसी की दया का भरोसा करना चाहिए।"

इसके बाद अक्षयानन्द ने प्रार्थना-पत्रों का लिखना छोड़ दिया। सब आशा तोड़ दी और केवल ईश्वर की प्रार्थना करने लगा।

अक्षयानन्द को कोड़े लगने की और खानों में परिश्रम करने की सजा मिली। पहले तो उसे कोड़े लगे, उसके बाद जब कोड़ों का घाव अच्छा हो गया तब और अपराधियों के साथ वह साइबेरिया में काम करने के लिए भेज दिया गया।

अक्षयानन्द छब्बीस वर्षों तक साइबेरिया में अपराधियों की भाँति रहा। उसके बाल बर्फ की तरह सफेद हो गये। उसकी पतली दाढ़ी बढ़ आई थी और भूरी हो गई थी। उसकी हँसी लोप हो गई थी, कमर झुक गई थी। वह धीरे-धीरे चलता था, बहुत कम बोलता था, कभी हँसता नहीं था और बहुधा प्रार्थना किया करता था।

कैदखाने में अक्षयानन्द ने जूता गाँठना सीख लिया था और कुछ थोड़े से रुपये कमा लिये थे। इन रुपयों से उसने "सतों की जीवनी" नामक पुस्तक खरीद ली थी। जब तक कैदखाने में कुछ रोशनी रहती तब तक वह इस पुस्तक को पढ़ा करता। रविवार के दिन वह कैदखाने के गिरजे में जाकर पाठ पढ़ता और गीत गाता। उसकी आवाज अब तक अच्छी थी।

कैदखाने के अफ़सर लोग अक्षयानक की नम्रता के कारण उसे चाहने लगे थे। उसके साथ के क़ैदी उसका आदर करते उसे "दादा" और "देवता" कह कर पुकारते थे। जब वे लोग कैदखाने के अफ़सरो से कोई प्रार्थना करना चाहते तब अक्षयानक को अपना अगुआ बनाते और जब उनमें आपस में कोई झगडा होता तब उसे अपना पच बनाते और उसकी बात स्वीकार करते।

अक्षयानक को घर का कोई समाचार न मिलता। उसे यह भी ख़बर नहीं थी कि उसके बीबी-बच्चे जिन्दा हैं या नहीं।

एक दिन कैदखाने में अपराधियों का एक नया गोल पहुँचा। सध्या के समय, पुराने क़ैदी नये कैदियों को घेर कर बैठ गये और उनसे पूछने लगे, कि तुम लोग किस शहर या गाव से आये हो और तुम्हें किस अपराध में सजा मिली है? नये आगन्तुकों के पास जहा और लोग थे, अक्षयानक भी बैठ गया था और उदास भाव से उनकी बातें सुन रहा था।

इन नये अपराधियो में, एक हट्टा-कट्टा लबा साठ बरस का आदमी भी था। उसकी भूरी दाढी महीन छटी हुई थी और वह लोगों को अपने क़ैद किये जाने का कारण बता रहा था।

उसने कहा—"हा मित्रो, बात यह हुई कि एक घोडा पेड़ से बधा हुआ था। उसको मैंने ले लिया था। मैं पकडा गया, मुझ पर चोरी का दोष लगाया गया। मैंने बताया कि मैंने इसे इसलिए

े लिया था कि घर जल्द पहुँच जाऊ। इसके बाद मैंने इसे छोड दिया था। इसके अतिरिक्त साईस मेरा निजी दोस्त था। इससे मैंने समझा कि कोई हानि नहीं है। मगर उन लोगों ने कहा—नहीं, तुमने इसे चुराया है। लेकिन कहा और कैसे चुराया यह कोई न बता सका। एक बार मैंने सचमुच एक अपराध किया था, जिसके लिए मुझे यहा बहुत पहले आना चाहिए था, लेकिन उस दफे तो मैं पकडा न गया। अब की बार मैं व्यर्थ ही यहा भेजा गया हूँ। अरे यह सब तो मैं झूठ-मूठ कह रहा हूँ। मैं साइबेरिया की हवा एक बार पहले भी खा चुका हूँ लेकिन यहा अधिक दिनों तक नहीं ठहरा था।

किसी ने पूछा—"तुम कहा से आये हो ?"

"व्लाडिमिर से। हम लोग शहर मे रहते हैं। मेरा नाम मकार है, मुझे लोग सेम्योनिच भी कहते हैं।"

अक्षयानक ने अपना सिर उठाया। फिर पूछा—"सेम्योनिच, यह बताओ कि व्लाडिमिर के अक्षयानक सदागर के घराने का कुछ हाल जानते हो ? वे लोग अब भी जिन्दा हैं ?"

"जानने को कहते हो ? क्यों नहीं जानता हूँ ? अक्षयानक-घराने के लोग खूब अमीर हैं—लेकिन उनका पिता साइबेरिया में ही है। जान पडता है कि हमी लोगों की भाति अपराधी है। लेकिन बूढ़े दादा तुम यहा कैसे आये ?"

अक्षयानफ अपने दुर्भाग्य के विषय मे कुछ कहना नहीं चाहता था। उसने लम्बी साँस भर कर कहा—"अपने पापों का फल यहाँ कैदखाने मे छब्बीस वर्षों से भोग रहा हूँ।"

मकार सेम्योनिच ने कहा—"तुमने कौन से पाप किये हैं ?"

लेकिन अक्षयानफ ने केवल इतना कहा—"क्या बताऊ, कुछ तो किया ही होगा जिसका फल मिल रहा है। वह इससे अधिक बताना नहीं चाहता था, लेकिन उसके साथियों ने नवागन्तुक से अक्षयानफ के साइबेरिया आने का सब हाल कह सुनाया—कैसे किसी ने एक सौदागर को मार कर अक्षयानफ के असबाव में चाकू रख दिया था और अक्षयानफ को बिना अपराध दण्ड दे दिया गया था।

जब मकार सेम्योनिच ने यह हाल सुना तब उसने अक्षयानफ को अच्छी तरह देखा। फिर अपने घुटने पर हाथ मार कर कहा "हाँ, यह तो बडे आश्चर्य की बात है। सचमुच बडे आश्चर्य की बात है। लेकिन दादा, तुम तो बहुत बुड्ढे हो गये हो।"

औरो ने पूछा कि तुम इतने अचम्भे में क्यो आ गये ? क्या अक्षयानफ को इससे पहले भी देखा है लेकिन मकार सेम्योनिच ने कुछ उत्तर न दिया। उसने केवल इतना कहा—"यारो, यह बडे आश्चर्य की बात है कि हम लोग यहाँ आकर मिले।"

इन शब्दों को सुन कर अक्षयानफ ने सोचा कि कहीं यह सौदागर के हत्यारे को जानता तो नहीं है ? इससे वह बोला—

"सेम्योनिच, कदाचित् तुमने उस मामले का हाल सुना हो, या कदाचित् मुझे पहले कहीं देखा हो ?"

"सुनता क्यों नहीं ? दुनियाँ में तरह तरह की अफवाहें फैली हुई है लेकिन यह बहुत पुरानी बात है, मुझे याद नहीं क्या सुना था।"

अक्षयानफ ने पूछा—"शायद तुमने सुना हो कि सौदागर को किसने मारा ?"

मकार सेम्योनिच हँसा—फिर उसने जवाब दिया "उसी ने मारा होगा जिसके थैले मे छुरी निकली ! अगर वहा किसी दूसरे ने छुरी छिपा दिया तो कहावत है कि जबतक कोई पकड़ा न जाय तबतक चोर नहीं। जब कि थैला तुम्हारे सिर के नीचे रक्खा हुआ था तब कोई दूसरा उसमें छुरा रख कैसे सकता था, तुम जाग न जाते ?"

जिस समय अक्षयानफ ने ये शब्द सुने उसे विश्वास हो गया कि सौदागर का हत्यारा यही है। यह वहा से उठकर चला गया। रात भर अक्षनायफ को नींद नहीं आई। उसके मन में बडी अशान्ति व्याप रही थी, उसके मस्तिष्क में तरह तरह के चित्र उठ रहे थे। पहले तो उसके सामने अपनी स्त्री का चित्र आया—उस समय का जब कि वह उस से विदा होकर मेले में जा रहा था। उसे ऐसा जान पडा कि मेरी स्त्री सामने खड़ी है। स्त्री

का मुख, उसकी आखें, सामने आ गई —कानों में उसके शब्द सुनाई दिये, उसकी हँसी सुनाई दी। उसके बाद उसने अपने बच्चों को देखा, छोटे बच्चों को, ठीक जैसे उस समय थे। एक बच्चा अपना छोटा लबादा पहिने हुए था। दूसरा अपनी माता की छाती से लग रहा था। इसके बाद उसे अपने पुराने दिन याद आने लगे, जिस समय वह युवा था और प्रसन्न रहता था। जिस सराय के बरामदे में वह पकडा गया उसमें बैठ कर सितार बजाने का ध्यान आया और उसने सोचा कि उस समय मैं चिन्ताओं से कैसा मुक्त था। उसे उस स्थान का भी ध्यान आया जहाँ उसे कोडे पड़े थे, जल्लाद का और चारों ओर खड़े हुए लोगों का, अपनी बेड़ियों का, अन्य अपराधियों का, अपने छब्बीस वर्ष के बन्दी-जीवन का तथा समय से पहले बुढापा आ जाने का ध्यान आया। इन सब विचारों से वह इतना विक्षिप्त हो गया कि उसके मन में आया कि आत्म-हत्या कर ले।

अक्सयानफ ने सोचा—यह सब इस बदमाश की करतूत है!" उसे मकार सेम्योनिच पर इतना क्रोध आया कि उसके मन में जान देकर भी बदला लेने की उत्कट इच्छा उत्पन्न हुई। रात भर उसने प्रार्थना में बिताई लेकिन उसे शान्ति न मिली। दिन में वह मकार सेम्योनिच के पास न गया और न उसको आखें उठाकर देखा।

एक पखवारा इसी तरह बीत गया। अक्षयानफ को रात में नींद हराम थी और वह इतना परीशान था कि उसकी समझ में न आता था कि मैं क्या करूं।

एक रात में वह कैदखाने में टहल रहा था। उसने देखा कि जिन आल्मारियों पर कैदी सोते हैं उनमें से एक के नीचे से कुछ मिट्टी निकल रही है। यह देखने के लिए कि है क्या, वह ठहर गया। अचानक पटरे के नीचे से मकार सेम्योनिच चुपके से निकल आया और भयभीत होकर उसने अक्षयानफ की ओर देखा। बिना उसकी ओर देखे हुए अक्षयानफ आगे बढ़ जाना चाहा। लेकिन मकार ने उसका हाथ पकड़ लिया और कहा—मैंने दीवार के नीचे से सुरंग लगा ली है। जब कैदी काम करने चले जाते थे तब मैं अपने बड़े जूते में भर-भर कर मिट्टी बाहर फेंक देता था।

"देखो बुड्ढे, यह बात किसी को मालूम न होने पावे। फिर इसी से तुम भी भाग चलना। अगर तुमने यह हाल किसी से कह दिया तो मारे कोड़ों के मेरी जान तो लेही ली जायगी मगर समझ रखना कि पहले तुम्हें मार कर मरूंगा।"

अपने वैरी की ओर देखकर अक्षयानफ गुस्से के मारे थर्राने लगा। अपना हाथ छुड़ाकर वह बोला—"मुझे भाग निकलने की इच्छा नहीं है। मुझे मारना बिल्कुल फिजूल है। तुम तो

बहुत दिन हुआ मुझे मार चुके। रही कहने की बात, सो मैं कहूँगा या नहीं, यह ईश्वर की इच्छा पर निर्भर है।

दूसरे दिन जब कैदी लोग काम पर ले जाये जा रहे थे उस समय पहरेदार सिपाहियों ने देखा कि किसी क़ैदी ने जूते से भर कर मिट्टी गिराई है। कैदखाने की तलाशी हुई और उस सुरङ्ग का पता चला। कैदखाने का अध्यक्ष आया। उसने सब कैदियों से जाँच की कि यह सुरङ्ग किसने खोदी है। सब ने जानकारी से इन्कार किया। जो लोग जानते थे वे मकार सेम्योनिच के साथ दगा नहीं करना चाहते थे क्योंकि वह मारे कोड़ों के अधमरा कर दिया जाता। अन्त में अध्यक्ष ने अक्षयानफ की ओर घूम कर, जिसे ईमान्दार जानता था, बोला—"बुड्ढे आदमी, तुम सच कहोगे। ईश्वर को साक्षी देकर कहो कि यह सुरंग किसने खोदी है?"

मकार सेम्योनिच ऐसा खड़ा था कि मानो कुछ जानता ही नहीं। वह अध्यक्ष की ओर देख रहा था, अक्षयानफ की ओर उसने निगाह भी नहीं उठाई। अक्षयानफ के होंठ और हाथ काँप रहे थे। लेकिन बड़ी देर तक उसके मुंह से एक शब्द भी न निकला। उसने सोचा—"जिसने मेरे जीवन का सत्यानाश किया है, उसे मैं क्यों बचाऊं? जो कष्ट मैंने उठाया है उसका फल उसे भोगने दूं। लेकिन यदि मैं बता दूं तो लोग मारते-मारते इसकी जान ले लेंगे और कौन जाने कि

मेरा ही सन्देह गलत हो। फिर इन सबसे मुझे क्या मिल जायगा ?"

अध्यक्ष ने फिर कहा—"हाँ, बुड्ढे आदमी, हमें सच-सच बताओ, यह दीवार किसने खोदी ?"

अक्षयानक ने एक दृष्टि मकार सेम्योनिच पर डाली, फिर कहा—"हुजूर, मैं नही बता सकता। ईश्वर की इच्छा नहीं है कि मैं बताऊ! आप मेरा जो चाहे कर ले, मैं आपके हाथो मे हूँ।"

अध्यक्ष ने कितना ही पूछा, लेकिन अक्षयानक ने इससे अधिक कुछ न कहा। अन्त मे बात वहीं पर छोड देनी पडी।

उसी रात, अक्षयानक अपने बिस्तर पर लेटा था और ऊघना शुरू किया था कि कोई आदमी चुपके से उसके बिछौने पर आकर बैठ गया। अन्धकार में देखकर उसने मकार को पहिचान लिया।

अक्षयानक ने पूछा—"अब मुझ से और क्या चाहते हो ? मेरे पास अब क्यो आये हो ?"

मकार सेम्योनिच चुप था। इस पर अक्षयानक उठ बैठा और बोला—"तुम क्या चाहते हो ? चले जाओ, नहीं तो मैं पहरे-दार को पुकारता हूँ।"

मकार सेम्योनिच, अक्षयानक की ओर झुककर कान मे कहा—"आइवर डीमित्रिच, मुझे क्षमा करो।"

जहाँ प्रेम है, वहां परमेश्वर है।



किसी नगर में मार्टिन अवदीच नाम का एक मोची रहा करता था। सडक के किनारे उसकी तहखाना सी एक छोटी कोठरी थी, जिसका आधा हिस्सा सडक से धँसा हुआ था और आधा हिस्सा सडक से ऊपर था। सड़क की ओर एक खिड़की थी। इस खिडकी से, सडक पर आने-जाने वालों के केवल पैर दिखाई देते थे। लेकिन मार्टिन लोगों को, जूते देख कर ह, पहिचान लेता था। वहाँ रहते हुए उसे बहुत दिन हो गए थे और मार्टिन की बहुत से लोगों से जान पहिचान थी। पडोस में शायद ही ऐसा कोई रहा हो, जिसका जोडा उसके यहाँ दो बार न आ चुका हो। अपने मरम्मत किये जूते उसे खिडकी से अक्सर दिखाई पडते। किसी में उसने नया तला लगाया था और किसी-किसी में तो नये थपल्ले भी लगाये थे। काम की उसे कमी नहीं थी, क्योंकि वह काम अच्छा करता, माल अच्छा लगाता, दाम भी वाजिब लेता और काम वादे पर देता। जब वह देख लेता कि काम अमुक दिन तक निपट जायगा तब तो वह उसे उठाता, नहीं तो साफ जवाब दे देता और झूठे वादे कभी न करता। इससे लोग उसे खूब जान गये थे और उसे काम की कोई तगी न रहती।

मार्टिन सदा का भला आदमी था, लेकिन बुढापे में अपनी आत्मा के लिए और भी सचिंत हो गया, और भी ईश्वर का भक्त हो गया। अपनी निज की दूकान कर लेने के पहले वह एक जगह नौकर था, उसी समय उसकी स्त्री एक तीन बरस का लडका छोड कर मर गई थी। इससे पहले जो सन्ताने हुई थीं सब बचपन ही मे मर गई थी। पहले तो मार्टिन ने सोचा कि इस छोटे लडके को गाँव मे बहिन के पास कर दें। लेकिन बच्चे को छोडते हुए मोह लगता था। उसने सोचा—"मेरा छोटा कपिटान पराये घर मे कैसे रह सकेगा, मैं इसे अपने ही पास रक्खूगा।"

मार्टिन ने नौकरी छोड दी और अपने बेटे को लेकर अपना मकान कर लिया। लेकिन बच्चों का सुख उसे बदा ही नहीं था। जब लडका पाल-पोश कर बडा हुआ और इस योग्य हुआ कि बाप की सहायता करे, बुढापे में उसका हाथ बँटा कर उसका जी खुश करे, तब वह एकाएक बीमार पड गया। सात दिन तक बडे जोर का ज्वर चढा रहा, उसके बाद वह इस दुनियाँ से सिधार गया। मार्टिन ने अपने बेटे को मिट्टी दी। लेकिन उसका जी ऐसा टूट गया और उसे ऐसा धक्का पहुँचा कि वह भगवान् तक को कोसने लगा और दुख के मारे, उसने बार-बार प्रार्थना की कि "भगवान् मुझे उठा ले। तूने मेरे प्यारे, इकलौते बेटे को क्यों उठा लिया, जब कि मैं बुड्ढा, जिन्दा हूँ।" इसके बाद मार्टिन ने गिरजे का जाना छोड दिया।

एक दिन मार्टिन के गाँव का एक बूढ़ा आया। यह आदमी आठ वर्ष से तीर्थ-यात्रा कर रहा था और इस समय ट्रायसा मठ से लौट रहा था। उसने सोचा, मार्टिन से भेंट करते चलें। मार्टिन ने जी खोलकर उससे अपना दु:ख कहा।

बोला—"भगत! अब मुझे जीने की भी तनिक इच्छा नहीं है। भगवान् से यही चाहता हूँ कि मुझे जल्दी उठा ले। अब संसार में कोई आशा नहीं रह गई।"

बुड्ढे ने उत्तर दिया—"मार्टिन, तू बड़ी अनुचित बात कह रहा है। ईश्वर की बातों पर हम विचार नहीं कर सकते। हमारी बुद्धि से कुछ नहीं होता। जो कुछ होता है, ईश्वर की इच्छा से होता है। यदि ईश्वर की यही इच्छा है कि तेरा बेटा मर जाय और तू जिये, तो यही होना चाहिए। रही तुम्हारी निराशा की बात—सो उसका कारण तो यह है कि तुम अपने ही सुख के लिए जीना चाहते हो।"

मार्टिन—"तो फिर दूसरी किस बात के लिए आदमी जीता है?"

बुड्ढा—"ईश्वर के लिए। मार्टिन, वही तुम्हें जीवन देता है, उसी की इच्छानुसार तुम्हें रहना चाहिए। उसी की इच्छानुसार जब तुम जीवन व्यतीत करोगे तब दु:ख करना छोड़ दोगे। सभी बातें तुम्हारे लिए सहज हो जावेंगी।"

मार्टिन कुछ देर तक चुप था। उसके बाद उसने पूछा—लेकिन, कोई ईश्वर के लिए किस प्रकार जी सकता है ?"

बुड्ढे ने कहा—आदमी ईश्वर के लिए कैसे जीता है यह ईसोह ने हमें सिखाया है। तुम पढ तो सकते हो ? तो सुसमाचार की पुस्तक मोल ले लो और उसे पढो। उससे तुम जान सकोगे के ईश्वर तुमसे किस प्रकार जीवन व्यतीत करने की आशा करता है। उसमें सब कुछ लिखा है।"

मार्टिन के जी में यह बात बैठ गई। उसी दिन वह मोटे अक्षरों की एक इञ्जील खरीद लाया और उसे पढने लगा।

पहले तो उसने सोचा था कि इसे छुट्टियों के दिन पढा करेंगे। लेकिन एक बार जब उसने आरम्भ कर दिया तब उसके पढने में उसका जी ऐसा लगा कि वह रोज उसका पाठ करने लगा। कभी-कभी वह पढने में ऐसा लिप्त हो जाता कि जब तक बत्ती का तेल चुक न जाता तब तक वह पढता रहता। ज्यों-ज्यों उसने उस पुस्तक को पढा त्यों-त्यों उसे ईश्वर के आदेशों का पता चलता गया, साथ ही उसे मालूम हुआ कि ईश्वर के आदेशो के अनुसार कैसे जीवन व्यतीत करना चाहिए। साथ ही साथ उसके जी का बोझ भी उतरता गया। पहले उसकी यह दशा थी कि वह जब रात को बिछौने पर जाकर लेटता तब उसे अपने नन्हें कपिटान की याद आती और उसका जी भर आता। लेकिन अब

वह सोते समय बार-बार यही कहता—"तेरी महिमा है भगवान
तेरी महिमा है। तेरी इच्छा पूर्ण हो।"

उस समय से मार्टिन के सम्पूर्ण जीवन में परिवर्तन हो गया
पहले मार्टिन सराय में जाकर छुट्टियो के दिन चाय पी आ
करता था। कभी-कभी एक दो गिलास मद से भी इनकार
करता। कभी-किसी मित्र के साथ दो घूट मद जो पी लेता
सराय से नशे में चूर होकर तो नहीं लेकिन ठिठोली करता हु
निकला करता और मुँह से बेतुकी बाते निकालता। लोगो को दे
कर चिल्लाता और उन्हे चिढाता। लेकिन अब यह सब ब
उससे बहुत दूर चली गई और उसका जीवन शान्त और प्रस
हो गया। सवेरे अपने काम पर बैठ जाता और जब दिन
काम समाप्त हो जाता तब वह दीवाल पर से बत्ती उठा लेता औ
उसे मेज पर रख देता और आल्मारी से किताब लाकर उसे खो
कर पढने बैठ जाता। जितना पढता, उतना ही अधिक समझ
बातें स्पष्ट होती जाती और उसका मन प्रसन्न होता जाता।

एक बार ऐसा हुआ कि मार्टिन पुस्तक में लीन होकर ब
रात तक बैठा रह गया। वह ल्यूक की धर्म पुस्तक पढ रहा थ
छठे अध्याय में उसे ये वाक्य मिले—

जो तेरे एक गाल पर तमाचा मारता है उसके सामने
अपना दूसरा गाल भी फेर दे और जो तुझसे तेरा ओढ
छीनता हो उसे अपना कोट भी दे दे। जो कोई तुझसे याच

करे उसे पूरा कर और जो तेरी वस्तु ले जाय, उसे तू उससे मत माग और जैसा तू चाहता है कि दूसरे तेरे साथ व्यवहार करें, वैसा व्यवहार तू दूसरो के साथ कर।'

आगे उसने प्रभु के ये वाक्य भी पढे—"तू मुझे प्रभु प्रभु कह कर क्यों पुकारता है, जब तू मेरे आदेश के अनुसार काम नहीं करता। जो मेरे निकट आता है और मेरे आदेशो को सुनता है और उनका पालन करता है, जानते हो वह किस की भाति है? वह उस मनुष्य की भाति है जिसने अपना घर बनाया, तो नींव खोद कर बहुत गहरी और पत्थर की दी। फिर जब बाढ आई और लहरे मकान पर बडे जोर से टकराने लगी तब वह घर न हिला। क्योंकि उसकी नींव पत्थर की थी। परन्तु जो मेरे आदेशो को सुनता है और उनका पालन नहीं करता वह उस मनुष्य की भाति है जो बालू पर घर बनाता है। जब लहरें आकर उससे वेग से टकराती हैं तो वह तुरन्त गिर जाता है और वह घर बिलकुल नष्ट-भ्रष्ट हो जाता है।"

जब मार्टिन ने ये शब्द सुने तब उसकी आत्मा भीतर से बहुत सन्तुष्ट हुई। उसने अपना चश्मा उतार कर पुस्तक पर रख दिया और जो कुछ पढता था उस पर विचार करने लगा। उन्हीं बातो की कसौटी पर अपने जीवन को कसने लगा। उसने अपने आपसे पूछा—"मैंने अपना मकान पत्थर के ऊपर बनाया है या बालू के ऊपर। यदि वह पत्थर पर बना है तो ठीक है। यहा

अकेले बैठे हुए पाप से बचना बहुत सहज जान पडता है। ऐसा जान पडता है कि ईश्वर की सब आज्ञाओं का मैंने पालन किया, लेकिन जहा सचेत न रहा, पाप करने लग जाता हूँ। तो भी . से बचने का निरन्तर प्रयत्न करूँगा। इससे बडा आनन्द मिलता है। भगवान् मेरी सहायता करे।"

यह सब विचार करते हुए वह सोने को जाने लगा लेकिन पुस्तक छोडने का मन नहीं होता था। इससे सातवा परिच्छेद पढने लगा। उसने सेनापति का हाल पढा, विधवा के बेटे का हाल पढा, मोहन के शिष्यो को जो उत्तर मिला था, उसके विषय में पढा फिर उस फलवान् फरीसी का हाल पढने लगा जिसने को " को अपने घर मे उबन्न करने के लिए निमन्त्रण दिया था। यहा पर उसने उस पापी स्त्री का हाल पढा जिसने मसीह के पैरो पर सुगन्धित तेल मला और उसे अपने आसुओं से धोया और किस प्रकार मसीह ने उसे क्षमा किया। आगे निम्न वाक्य पढे—

"उस स्त्री की ओर घूमकर, मसीह ने सीमन* से कहा, तू इस स्त्री को देखता है ? मैं तेरे घर मे आया, लेकिन तूने मुझे पैर धोने के लिए जल नहीं दिया। लेकिन इस स्त्री ने मेरे चरणों को अपने आसुओं से धोया, और अपने केशों से पोंछा है। तूने मुझे चुम्बन नहीं किया, लेकिन जब से यह आई है इसने बार बार मेरे

* इस फरीसी के यहा मसीह निमन्त्रित हुए थे।

रणो को चूमा है। तूने मेरे सिर पर तेल नही रक्खा, लेकिन सने मेरे पैरो पर सुगन्धित तेल मला है।"

मार्टिन ने इन वाक्यों को पढ कर इन पर विचार किया "उसने मु के चरण धोने को जल नहीं दिया, न उनका चुम्बन किया, न नके सिर पर सुगन्धित तेल लगाया " फिर मार्टिन ने अपना चरमा उतार कर पुस्तक पर रख दिया और ध्यान में निमग्न हो गया।

उसने सोचा—'वह फरीसी मेरी ही भाति रहा होगा। वह भी अपने ही स्वार्थ का विचार करता था। अपने चाय पीने का, ठडसे बचने का और आराम से रहने का ध्यान उसे भी था। अपने अतिथि का उसे ध्यान नहीं था। वह केवल अपनी ही सोचता था। अपने अतिथि की सेवा से वह विमुख था और वह अतिथि भी कौन था? स्वय प्रभु थे। यदि वह मेरे अतिथि होते तो क्या मैं भी वैसा ही व्यवहार करता?"

यही विचार करते हुए मार्टिन ने अपने दोनों बाँहों पर सिर रख दिया और उसे गहरी नींद आ गई।

उसे अचानक ऐसा जान पडा कि कानों के पास किसी ने "मार्टिन" कह कर पुकारा है।

उसकी नींद उचट गई, उसने पूछा "कौन है?"

उसने घूमकर द्वार पर देखा, वहा भी कोई नहीं था। लेकिन उसे ये शब्द स्पष्ट सुनाई दिये—"मार्टिन! मार्टिन! कल सड़क पर देखते रहना, मैं आऊगा।"

मार्टिन सचेत हुआ। कुर्सी छोड कर उठा और उसने अपनी आखे मला' लेकिन वह समझ न पाया कि ये शब्द उसने नींद मे सुने थे या जागृत अवस्था में सुने थे। बत्ती बुझा कर वह सो गया।

दूसरे दिन वह भोर होने से पहले उठा। प्रार्थना करने बाद अँगीठी जलाई और अपने लिए तरकारी का शोरबा और गेहूँ की दलिया तैयार की। इसके बाद चायदानी मे पानी गरम करने के लिए चढा कर, काम करने वाला कपडा पहिन कर खिडकी के सामने काम करने के लिए जा बैठा। बैठे-बैठे वह काम करता जाता था और रात की बातें। सोचता जाता था। कभी सोचता कि मैंने सचमुच शब्द सुने। उसने सोचा—इससे पूर्व, ऐसी घटनायें हो चुकी हैं, अनहोनी बात नहीं है।

वह खिड़की के पास बैठा काम करता जाता था, लेकिन बार-बार सडक पर देखता जाता था। जब कोई ऐसा व्यक्ति उधर से निकलता जिसके जूते अपरिचित होते तब झाक-झाक कर उसके मुह की ओर भी देख लेता। एक दरबान नम्दे का नया जूता पहिन कर उधर से निकला। उसके बाद एक भिश्ती भी निकला। फिर निकोलास, अगले राजा के समय का एक सिपाही फावडा लिये हुए खिडकी के पास आया। मार्टिन ने उसे जूतों से पहचान लिया। उसके जूते नम्दे के बहुत भद्दे बने थे और उन पर चमडे का टुकडा लग रहा था। उस बुड्ढे का नाम

टपानिच था। पडोस के एक व्यापारी ने दया करके उसे घर ा रख लिया था। स्टिपानिच घर के दरवान की सहायता किया रता था। वह मार्टिन की खिडकी के आगे गिरा हुआ वर्फ साफ रने लगा। मार्टिन ने एक बार उसकी ओर देखा और फिर प्रपना काम करने लगा।

अपने मन के विचार पर हँसते हुए मार्टिन ने सोचा—"बुढापे के कारण मैं सनक तो नहीं गया हूँ। स्टिपानिच यहा वर्फ साफ करने आया है और मैं समझ रहा था कि ईसा मसीह मुझसे भेंट करने आये हैं। मुझ बुड्ढे की अक्ल मारी गई।"

दस-बारह टाके लगाये होंगे कि फिर खिड़की की ओर देखने की इच्छा प्रबल हुई। उसने देखा कि स्टिपानिच ने अपना फावडा दीवाल से लगा कर रख दिया था और दीवाल के सहारे खडा होकर तनिक गर्म हो जाने का यत्न कर रहा था। आदमी बुड्ढा था—और उसका पौरुप टूट गया था। जान पडता था कि वर्फ बुहारने का भी उसमें दम नहीं है।

मार्टिन ने सोचा—"चायदानी तो चढ ही रही है। इसे भीतर बुलाकर थोडी चाय न पिला दू ?"

सूजे को वहीं पर लगा छोड कर वह उठा और चायदानी को मेज पर रखकर उसमें चाय डाली। इसके बाद उसने खिडकी को अगुलियों से थपथपाया। स्टिपानिच खिडकी के सामने आ

गया। मार्टिन ने उसे अन्दर आने का इशारा किया और आ. दरवाजा खोलने के लिए बढ़ा।

इसने कहा—"भीतर आकर जरा गर्मा लो। तुम्हें सर्दी लग रही होगी।"

स्टिपानिच बोला—"भगवान् तुम्हारा भला करे। मारे के मेरी हड्डिया दुख रही हैं।" वह भीतर आ गया, पहिले तो उसने बदन पर से बर्फ झाड डाला फिर फर्श पर धब्बा न पड़े, इस ख़याल से वह पैर पोछने लगा। लेकिन पैर पोछते वक्त बेकाबू होकर लुढकने लगा और गिरते-गिरते बचा।

मार्टिन ने कहा—"पैर झाडना रहने भी दो। मैं फ़र्श साफ़ कर दूगा। यह तो मेरा नित्य का काम है। आओ मित्र, बैठ कर थोडी सी चाय पी लो।"

मार्टिन ने दो प्यालों में चाय भरी। एक आगन्तुक के सामने कर दी और अपनी चाय तश्तरी में उडेल कर मुँह से फूक कर पीने लगा।

स्टिपानिच ने प्याला खतम कर दिया और उसे उलट रख दिया। जो चीनी का डला बच रहा था उसे ऊपर रख दिया और वह मार्टिन को धन्यवाद देने लगा। लेकिन साफ़ प्रकट होता था कि कुछ थोडीसी और पीने की लालसा उसे बनी है।

मार्टिन ने आगन्तुक का और अपना प्याला भरते हुए कहा--एक प्याला और पी लो। "मार्टिन चाय पीता जाता था और सडक पर निगाह लगाये था।"

आगन्तुक ने पूछा,—"क्या किसी की वाट देख रहे हो ?"

'किसी की वाट देख रहा हूँ ? भाई क्या बताऊँ, तुम से कहते लज्जा लगती है। वात यह है कि मैं वाट किसी की नहीं देख रहा हूँ। लेकिन रात को मैं ने कुछ ऐसी वात सुनी जो सिर से निकल नहीं रही है। न जाने स्वप्न है, न जाने सच, समझ में नहीं आती। वात यह है, मित्र, मैं रात मे धर्म-पुस्तक में प्रभु मसीह का वृत्तान्त पढ़ रहा था। किस प्रकार उन्होंने पृथ्वी पर अवतार लिया और क्या-क्या दुख सहे, यह सव तुमने सुना ही होगा।

स्टिपानिच ने कहा—"मैं ने सुना तो है। लेकिन मैं मूर्ख हूँ। पढा नहीं हूँ।"

"अच्छा, सुनो, मैं यह पढ रहा था कि मसीह ने पृथ्वी पर क्या-क्या किया। देखो, उस प्रसग पर आया, जहा वह एक फरीसी के घर गये और वहा उनकी अच्छी आवभगत न हुई। तो मित्र मैं यह पढ कर सोच रहा था कि उस मनुष्य ने प्रभु मसीह का पूर्ण सत्कार नहीं किया। मैं सोच रहा था कि अगर वह मेरे घर आये होते तो उन के सत्कार के लिए क्या न करता, लेकिन उस मनुष्य ने उनका सत्कार नहीं किया। अच्छा मित्र, मैं यही सोच

रहा था, सोचते-सोचते ऊघने लगा। जब ऊघने लगा तब ऐसा जान पडा कि कोई मेरा नाम लेकर पुकार रहा है। मैं जागा, तो जान पडा, कोई कान मे कह रहा है कि 'कल मैं आऊगा, मेरी प्रतीक्षा करना।' दो बार ऐसा ही सुना और सच बात तो यह है कि यह बात मेरे मन मे धँस गई, यद्यपि यह कहते मुझे लज्जा आती है कि मैं, प्रिय स्वामी की प्रतीक्षा कर रहा हूँ।

स्टिपानिच ने चुप-चाप सिर हिलाया। अपने प्याले की चाय पी ली और उसे अलग रख दिया। लेकिन मार्टिन ने खडे होकर उसे फिर भर दिया।

"तुम्हारा भला हो, लो, एक प्याला और पी लो। और मैं यह भी सोच रहा था कि जब प्रभु ने पृथ्वी पर अवतार लिया तब किसी को घृणा से न देखा, अधिकतर वह गरीबो के बीच मे रहा। वह सादे मनुष्यों के साथ रहता था और हम तुम जैसे मज़दूरों और पापियो को चेला बनाता था। उसने कहा है—"जो अपने को उठा कर चलता है उसका मान खण्डित होता है और जो दीनता से रहता है, वही उठ कर रहेगा"। उसने कहा है, कि "तुम मुझे स्वामी कहोगे तो मैं तुम्हारे चरण धोऊँगा"। और यह भी कहा है कि "जो सब से बडा होना चाहता है उसे यही करना चाहिए। क्योंकि धन्य हैं वे लोग जो कि दरिद्र, दीन, विनीत और दयावान् है।"

स्टिपानिच चाय पीना भूल गया। वह बुड्ढा आदमी था। हज मे आखो मे आसू आ जाते थे। वह बैठा यह सुन रहा था, स के गालो पर आसू बह आये।

मार्टिन ने कहा—"आओ, थोडी सी और पी लो"। परन्तु स्टिपानिच ने क्षमा मागी, धन्यवाद दिया और अपना प्याला हटा कर उठ खडा हुआ।

वह बोला—"उदार हृदय मार्टिन बहुत-बहुत धन्यवाद है। तुम ने हमारे शरीर और आत्मा दोनो को भोजन देकर शीतल किया है।"

मार्टिन ने कहा—"फिर आना, अपना ही घर समझो, ऐसे अतिथियो से जी बहुत प्रसन्न होता है।

स्टिपानिच चला गया। मार्टिन ने चाय उडेल कर अन्तिम याला खतम किया। इसके बाद चाय का सब सामान हटा दिया और फिर काम पर बैठ गया और एक जूते का भितल्ला सीने लगा। वह सीता जाता था और खिडकी पर देखता जाता था। मसीह की प्रतीक्षा कर रहा था और उन्हीं की कृतियों पर ध्यान कर रहा था। उस के मस्तिष्क मे मसीह के उपदेश भर रहे थे।

उधर से दो सिपाही निकले, एक तो सरकारी जूते पहिने हुए था दूसरा अपने निज के। तब पडोस के मकान का मालिक चमकीले रबड के जूते पहिने हुए निकला। फिर, एक रोटीवाला एक एक टोकरी लटकाये हुए घर से गया। ये सभी आये और चलते

गये। इस के बाद एक स्त्री फटे पुराने मोजे और देहाती जूते पहिने हुए आई। खिड़की के सामने से निकल कर वह दीवार सहारे खड़ी हो गई। मार्टिन ने खिड़की में झांक कर उसे देखा। वह कोई परदेशी थी। कपड़े फटे पुराने पहिने थी और उस की गोद में एक बालक था। वह दीवाल के किनारे हवा की पीठ कर के खड़ी हो गई और बच्चे को ओढ़ाने लगी—यद्यपि ओढ़ाने के योग्य उसके पास कोई कपड़ा था नहीं। स्त्री बहुत हल्के कपड़े पहिने हुई थी और वह भी मैले और फटे पुराने थे। मार्टिन ने खिड़की से बालक के रोने की आवाज़ सुनी। वह बालक को चुप करा रही थी, लेकिन वह किसी तरह चुप नहीं होता था। मार्टिन उठा और दरवाज़े से निकल कर ऊपर आया।

उसने पुकारा—"बेटी, ओ बेटी"।

स्त्री, स्वर सुन कर उस की ओर फिरी।

"तुम ठंड में बच्चे को लिये हुए क्यों खड़ी हो? भीतर आ जाओ। यहां गर्म है, तुम बच्चे को अच्छी तरह ओढ़ा सकती हो। इस रास्ते से चली आओ।"

अपने काम करने के कपड़े पहिने हुए, नाक पर चश्मा हुए, एक बुड्ढे को इस तरह पुकारते देख कर पहिले तो स्त्री आश्चर्य हुआ लेकिन वह भीतर आ गई।

दोनों सीढ़ी से उतर कर छोटी कोठरी में पहुँचे। बुड्ढे उस स्त्री को बिछौना पर बिठलाया।

बुड्ढा—"बेटी, यहा अगीठी के पास बैठ जाओ। जरा आग ताप लो और बच्चे को दूध पिला लो।"

स्त्री—"दूध हो तब तो पिलाऊ! आज सवेरे से मैं ने कुछ खाया नहीं है, दूध कहा से उतरे।" लेकिन स्त्री बच्चे को छाती से लगाये रही।

मार्टिन ने सिर हिलाया। वह एक कटोरा और रोटी निकाल लाया। इसके बाद उस ने चूल्हे पर से बर्तन से थोडासा शोरवा कटोरे मे गिराया। दलिया भी देखी, लेकिन अभी तय्यार नहीं हुई थी। इस से उस ने मेज पर कपडा फैला कर शोरवा और रोटी ही परोस दिया।

बुड्ढा—"आओ बेटी, यहा बैठ जाओ और खा लो। मैं बच्चे को खेलाता रहूँगा। हा, मेरे भी तो बच्चे थे। मैं उन्हें सभालने जानता हूँ।"

स्त्री—धन्यवाद देकर मेज पर खाने बैठ गई और मार्टिन ने बच्चे को बिछौने पर लिटा दिया और आप भी उसी के पास बैठ गया। वह बच्चे को पुचकारता रहा लेकिन उसके मुँह पोपले थे इससे अच्छी तरह पुचकार न पाता। बच्चा रोता ही रहा। तब मार्टिन उसके मुँह में अँगुली देने लगा। वह बच्चे के मुँह पर अगुली ले जाता और झट हटा लेता। ऐसा उसने कई बार किया। उसने बच्चे को अँगुली चूसने न दिया क्योंकि उसकी अँगुली में चर्बी लगी थी। बालक पहिले तो अँगुली देखकर

चुप हो गया, पीछे से हँसने लगा। मार्टिन भी बहुत प्रसन्न हुआ।

स्त्री भोजन करती जाती थी और बातें करती जाती थी। उसने मार्टिन से अपना हाल कह सुनाया कि वह कहा से आई और कौन थी। वह बोली—"मैं एक सिपाही की स्त्री हूँ। आठ महीने हुए मेरा पति कहीं बहुत दूर भेज दिया गया। तब से उसका कोई हाल मुझे न मालूम हुआ। जब तक यह बच्चा नहीं हुआ था, तब तक मैंने रसोई बनाने का काम उठा लिया था, बच्चा होने पर वे मुझे रखने पर राजी न हुए। तीन महीने से भटक रही हूँ, कहीं जगह मिल जाय, लेकिन कोई काम नहीं मिलता। जो कुछ मेरे पास था, बेच कर खा गई। मैंने चाहा कि दूध पिलाने के लिए कहीं दाई का काम करलूँ, लेकिन कोई मुझे पूछता नहीं। लोग कहते हैं कि तू बहुत दुबली और टूटी हुई है। इस वक्त मैं एक सौदागर की स्त्री के यहा गई हुई थी। मेरे गाँव की एक स्त्री उसके यहाँ पहिले से है। कहा तो है कि मैं तुम्हे रख लूँगी। मैंने सोचा, चलो दुख दूर हुआ, लेकिन वह कहती है कि सात दिन बाद आना। उसका घर भी दूर है। थक गई हूँ। बच्चा बेचारा भूखों मर रहा है। कुशल की बात यह है कि मेरे घर की मालकिन मुझपर तरस खाकर मुझसे रहने का भाड़ा नहीं लेतीं, वहाँ मुफ्त रहती हूँ नहीं तो न जाने कैसी बीतती।"

मार्टिन ने आह भर कर पूछा—"तुम्हारे पास और कोई गर्म कपडा नहीं है ?"

स्त्री—"गर्म कपडा कहा से हो ? एक ऊनी चादर बच रही थी उसे भी कल छ आने पर गिरवी रख आई हूँ।"

इसके बाद स्त्री ने आकर अपने बच्चे को ले लिया और मार्टिन वहाँ से उठा। दीवार पर कुछ कपडे टगे थे। उसमे से जाकर मार्टिन एक पुराना लबादा निकाल लाया। बोला, "यह लो, पुराना तो हो गया है, लेकिन बच्चे को लपेटने के लिए क्या बुरा है ?"

स्त्री ने लबादे की ओर देखा, फिर बुड्ढे की ओर देखा और लबादे को लेकर, रोने लगी। मार्टिन दूसरी ओर चला गया फिर बिछौने के नीचे से ढूँढ कर एक छोटी सी सदूक निकाली। स्त्री के पास बैठ कर उसे हाथ से टटोलने लगा। स्त्री ने कहा —

"बाबा, ईश्वर तुम्हारा भला करे। आज मानो मसीह ने ही मुझे तुम्हारे द्वार पर भेजा, नही तो बच्चा मारे ठड के मर जाता। जब मैं निकली थी तब हवा मन्द चल रही थी, अब तो देखो कैसी ठड पडने लगी है। निश्चय करके मसीह ने मेरे ऊपर तरस खाई। तुमने खिड़की मे झाका और मुझ दरिद्रिन पर तरस खाई।"

मार्टिन मुसकुराया, बोला—"सच कहती हो। मसीह की प्रेरणा मुझे हुई। मैंने अचानक थोडे ही झाका था।"

बुढिया—"मैं इसे ऐसा बताऊँगी कि साल भर तो याद करे। मैं इस लुच्चे को थाने ले जाऊँगी।"

मार्टिन बुढिया से विनय करने लगा—"बुढ़िया माई जाने दो, अब ऐसा काम कभी न करेगा। मसीह के नाम पर छोड़ दो।"

बुढिया चुप हो गई। लडका भागना चाहता था लेकिन मार्टिन ने उसे पकड़ कर कहा—"बुढिया माई से क्षमा मांगो और ऐसा काम फिर न करना। मैंने तुझे सेव उठाते अपनी आंखों से देखा है।"

लडका रोने लगा और क्षमा मांगने लगा।

"बस ठीक है। अच्छा अब एक सेव यह ले लो।" यह कह कर मार्टिन ने टोकरी से एक सेव उठाकर लड़के को दिया और कहा "बुढिया माई, इसके पैसे मैं अभी देता हूँ।"

बुढिया—"लुच्चे लडके ऐसे ही तो खराब जाते हैं। अरे इस तो ऐसे कोडे पडने चाहिए कि सात दिन तो याद रक्खे।"

मार्टिन—"अरे बुढिया माई, ऐसा क्यो कहती हो। यह तो हम तुम करते हैं, भगवान् ऐसा थोडे ही करता है। जो इस लडके को एक सेव चुराने पर कोडे पडें तो फिर हमे अपने पापो का क्या दण्ड मिले?"

बुढिया चुप रही।

मार्टिन ने बुढिया से उस स्वामी की कथा सुनाई जिसने अपने एक नौकर का बहुत कर्ज माफ कर दिया था परन्तु नौकर

अपने कर्जदार का जाकर गला दबाया। बुढिया ने यह सब सुना और लडका भी सब सुनता रहा।

मार्टिन ने कहा—"ईश्वर की आज्ञा है कि हम दूसरों को क्षमा करते रहें नहीं तो हमें वह क्षमा न करेगा। प्रत्येक आदमी को क्षमा करना उचित है फिर एक नासमझ बालक की कौन कहे।"

बुढिया ने सिर हिलाकर एक आह भरी। वह बोली—

"यह सब बहुत सच है, लेकिन ये लोग आज।कल बिगड रहे हैं।"

मार्टिन—"तो फिर हम बूढों को उन्हें सीधे मार्ग पर लाना चाहिए।"

बुढिया—"यही तो मैं भी कहती हूँ। मेरे खुद सात बच्चे हुए और केवल एक लडकी बच रही है।" इसके बाद बुढिया बताने लगी कि मैं अपनी लडकी के साथ कहा रहती हूँ और उसके कितने पोते-पोतिया हैं। फिर कहा—"देखो, अब मुझमें बहुत कम बल रह गया है लेकिन मैं अपने पोते-पोतियों के लिए इतनी मेहनत करती हूँ। वे बच्चे बडे ही अच्छे हैं। मुझे देखकर दौडे चले आते हैं। नन्ही ऐनी तो पीछा नहीं छोडती। "नानी, मेरी प्यारी नानी" की धुन लगाये रहती है।" यह कहते-कहते बुढिया का जी मुलायम पड गया। लडके की ओर संकेत करके बोली—'हा इसका लडकपन तो था ही, भगवान इसका भला करे।"

इसके बाद बुढ़िया अपनी बोरी कधे पर उठाने ही को थी कि लडका आगे आकर बोल उठा—"दादी, मैं भी तो उसी ओर चलता हूँ। लाओ इसे तुम्हारे घर तक पहुँचा दूँगा।"

बुढिया ने सिर हिलाया और बोरे को लडके की पीठ पर दिया, दोनो साथ-साथ चले। बुढ़िया मार्टिन से सेब के दाम मागना भी भूल गई। वह दोनो बाते करते निकल गये और मार्टिन वहा खडा यह देखता रहा।

जब वे आँखो से ओझल हो गये तो मार्टिन अपनी में लौटा। सीढी पर उसका चश्मा गिरा पडा था—वह टूटा फूटा नहीं था। मार्टिन अपना सूजा उठा कर काम करने लगा। कुछ काम किया, लेकिन थोडी ही देर मे अँधेरा हो गया और छेद में ठीक तागा न डाल सकता था। उसी वक्त देखा कि ... पर बत्ती जलाने वाला जा रहा है। उसने सोचा, "जान पडता है अब बत्ती जलाने का समय हो गया।" इससे उसने बत्ती ... और उसे टागकर काम करने लगा। उसने एक जूता तैयार किया। उलट कर देखा ठीक था। इसके बाद अपने औजार उठाये। कतरनी को झाडा, आरी, सूजे, तागे को अलग किया और लैम्प को उठा कर मेज पर रख दिया। इसके बाद उसने आलमारी से धर्म-पुस्तक उठा ली। कल जहा तक पढा था उस जगह चमडे की एक कतरन रख दी थी। वहीं पर किताब खोलना चा... दूसरा पन्ना खुला। मार्टिन ने उसे जैसे देखा, कल का स्वप्न

आ गया और उसे ऐसा जान पड़ा कि किसी के पैरों की आहट है। मार्टिन ने घूमकर पीछे देखा तो उसे जान पड़ा कि अँधेरे कोने मे कुछ लोग खडे हैं। मार्टिन यह न समझ सका कि ये लोग कौन हैं। उसके कान में आवाज़ आई—"मार्टिन, मार्टिन, मुझे नहीं पहिचानते।"

मार्टिन—"कौन है?"

स्वर ने कहा—"यह तो मैं हूँ" उस अँधेरे कोने से स्टिपानिच आगे बढा और मुस्कराकर बिजली की भाँति गायब हो गया।

स्वर ने फिर कहा—"यह तो मैं हूँ"। और उस अँधेरे कोने में से वह बच्चेवाली स्त्री आगे बढी। वह भी मुसकराई, बच्चा भी मुसकराया, और फिर वे गायब हो गये।

स्वर ने एक बार फिर कहा—"यह तो मैं हूँ।" और वह सेब वाली बुढिया और लडका दोनों आगे आये ओर इसके बाद यह भी लोप हो गये।

मार्टिन की आत्मा प्रसन्न हुई। उसने वन्दना की। चश्मा पहिना और धर्म पुस्तक पढने लगा। जहाँ पर खुली थी। उस पृष्ठ के ऊपर ही लिखा था —

"मैं भूखा था, तूने मुझे भोजन दिया, मैं प्यासा था तूने मुझे जल दिया, मैं परदेशी था, तूने मुझे जगह दी।"

पृष्ठ के अंत में लिखा हुआ था —

"जो तूने यह सब मेरे एक दीन भाई के साथ किया वह मानो मेरे ही साथ किया।"

अब मार्टिन समझ गया कि मेरा स्वप्न सच था। उसका भेद उसकी समझ मे आया और वह समझने लगा कि आज सचमच मसीह उसके द्वार पर आये और उसने उनका अभिनन्दन किया।

अनोखी ढोल



एमिलियान नाम का एक मजदूर था, वह अपने स्वामी की नौकरी करके पेट भरता था। एक दिन खेत से होकर अपने काम पर जा रहा था। अचानक एक मेंढक उसके सामने उछल कर आ गया। वह कूद कर अलग हो गया। मेंढक दबने से बाल-बाल बच गया। उसी समय उसे ऐसा जान पड़ा कि मानो कोई पीछे से पुकार रहा है।

एमिलियान ने घूम कर देखा तो उसे एक सुन्दरी कुमारी दिखाई दी। उस कुमारी ने पूछा—"एमिलियान, तुम अपना ब्याह क्यो नहीं कर लेते ?"

एमिलियान ने कहा—"मेरी सुन्दरी, मै ब्याह कैसे करूँ ? मेरे तन पर जो कपड़े हैं, उन्हे छोड़ कर मेरे पास धरा ही क्या है ? कौन मुझे अपना पति बनावेगा ?"

कुमारी ने कहा—"मेरे साथ ब्याह कर लो।"

एमिलियान को कुमारी पसन्द आ गई। उसने कहा—"मैं ब्याह तो बड़ी ख़ुशी से कर लूँ, लेकिन हम लोग कहाँ और कैसे रहेंगे ?"

कुमारी ने कहा—"इसकी चिन्ता न करो। आदमी काम अधिक करे और सोवे कम, फिर तो चाहे जहाँ रहे, खाने-पहिनने भर को कमा लेगा।"

एमिलियान ने कहा—"अच्छी बात है, आओ फिर करलें। हम लोग कहाँ चल कर रहेंगे ?"

"चलो हम लोग शहर मे चलकर रहे।"

एमिलियान कुमारी के साथ शहर में चला गया। वहां शहर के ठीक बाहर अपनी झोपडी बनाली और व्याह करके अपनी गृहस्थी में लगे।

एक दिन राजा अपनी सवारी पर हवा खाने निकला। सवारी एमिलियान की झोपडी के सामने से निकली। एमिलियान की स्त्री राजा को देखने के लिए निकल आई। की निगाह उस पर पडी तब उसे बडा आश्चर्य हुआ।

उसने सोचा—"यहाँ ऐसी सुन्दरी कहाँ से आ गई ?" सवारी रोक कर एमिलियान की स्त्री को बुलाकर उससे "तुम कौन हो ?"

उसने उत्तर दिया—"मैं एमिलियान नामक एक किसान स्त्री हूँ।"

राजा ने कहा—"तुमने इतनी सुन्दरी होकर एक से क्यों व्याह किया ? तुम्हे तो रानी होना चाहिए।"

स्त्री ने कहा—"यह तो आप की कृपा है जो आप ऐसे हैं, मुझे तो अपना किसान पति ही बहुत अच्छा मालूम पडता है।"

राजा उससे दो चार बातें करके चला गया। महल में पहुँ परन्तु एमिलियान की स्त्री का ध्यान उसके चित्त मे न उत

त भर उसे नींद न आई। यही सोचता रहा कि किस तरह उसे पनी बनाऊँ। जब कोई उपाय उसकी समझ में न आया तब सने अपने नौकरों को बुलाया और उनसे कहा कि उस स्त्री को ाने के लिए 'कोई उपाय निकालो।'

राजा के नौकरों ने कहा—"महाराज, एमिलियान को महल ं आकर काम करने का आज्ञा दें। फिर हम लोग उसे ऐसा ाम देंगे कि वह काम के बोझ से मर जायगा। उसकी स्त्री वेधवा हो जायगी, तब आप उसे ग्रहण कर सकेंगे।"

राजा ने उनकी सलाह मान ली। आज्ञा दी 'कि एमिलियान महल में आकर मजदूरी करे और वहीं आकर स्त्री सहित रहे।'

राजा के दूतों ने आकर एमिलियान को समाचार दिया। उसकी स्त्री ने कहा—"एमिलियान, जाओ! दिन-दिन भर काम करना लेकिन रात में घर लौट आना।"

एमिलियान वहाँ से चला। जब महल में पहुँचा तब राजा के दरबान ने पूछा—"तुम अकेले क्यों आये, स्त्री को क्यों छोड़ आये?"

एमिलियान ने कहा—"मैं उसे साथ साथ क्यों लये फिरूँ? उसके घर नहीं है, क्या?"

महल में दो आदमियों का पूरा काम उसे अकेले करने को दिया गया। उसने काम में हाथ तो लगाया, परन्तु उसे यह आशा नहीं थी कि समाप्त कर सकेगा। परन्तु जब सन्ध्या हुई तब

एमिलियान ने कहा—"अच्छी वात है, आओ फिर॰ करलें। हम लोग कहाँ चल कर रहेंगे ?"

"चलो हम लोग शहर में चलकर रहें।"

एमिलियान कुमारी के साथ शहर में चला गया। शहर के ठीक वाहर अपनी झोपडी वनाली और व्याह अपनी गृहस्थी में लगे।

एक दिन राजा अपनी सवारी पर हवा खाने निकला। सवारी एमिलियान की झोपडी के सामने से निकली। एमिलि यान की स्त्री राजा को देखने के लिए निकल आई। जब॰ की निगाह उस पर पडी तब उसे वडा आश्चर्य हुआ।

उसने सोचा—"यहाँ ऐसी सुन्दरी कहाँ से आ गई ?" सवारी रोक कर एमिलियान की स्त्री को बुलाकर उससे॰ "तुम कौन हो ?"

उसने उत्तर दिया—"मैं एमिलियान नामक एक किसान॰ स्त्री हूँ।"

राजा ने कहा—"तुमने इतनी सुन्दरी होकर एक से क्यों व्याह किया ? तुम्हे तो रानी होना चाहिए।"

स्त्री ने कहा—"यह तो आप की कृपा है जो आप॰ हैं, मुझे तो अपना किसान पति ही वहुत अच्छा मालूम पडता है।"

राजा उससे दो चार वातें करके चला गया। महल में॰ परन्तु एमिलियान की स्त्री का ध्यान उसके चित्त से न उतरा

इस प्रकार लोग एमिलियान का काम नित्य बढाते गये।
न्तु वह सदा अपना काम ठीक समय पर समाप्त करके सोने
लिए अपनी झोपडी में लौट आता। एक सप्ताह व्यतीत हो
या, राजा के नौकरो ने देखा कि वे मोटे काम से उसे मारने मे
सफल हुए। तब वे उसे ऐसे कार्य देने लगे जिनमे कुशलता
ी आवश्यकता पडती। बढईगीरी और थवईगीरी का काम
ने लगे। परन्तु वे चाहे जो काम देते एमिलियान ठीक समय
र उसे समाप्त करके रात मे अपनी स्त्री के पास चला जाता।
स प्रकार दूसरा सप्ताह भी बीता।

तब तो राजा ने नोकरों को बुला कर कहा, "तुम लोग हराम
ा खाना खाते हो। देखते हैं कि दो सप्ताह बीत गये और
ुमने अभी तक कुछ न किया। तुम कहते थे कि एमिलियान
ो काम से थकाकर मार डालेंगे लेकिन मैं तो अपनी खिडकी से
खता हूँ कि यह नित्य सन्ध्या समय खुशी-खुशी गीत गाता हुआ
अपने घर चला जाता है। क्या मुझे तुम लोग बेवकूफ बना
हे हो ?"

राजा के नौकर अपनी सफाई देने लगे। बोले—"हमने मोटे-
मोटे काम देकर उसे थकाने का बहुत प्रयत्न किया, परन्तु कैसा
ही कठिन काम दिया जाता है उसे कुछ मालूम ही नहीं पडता।
बातकी बात मे कर डालता है, थकना वो जानता ही नहीं। इसके
बाद हमने उसे ऐसे कार्य दिये, जिनमे कुशलता की

देखता क्या है, कि उसका काम सब हो गया था। दरबान देखा कि काम समाप्त हो गया, दूसरे दिन के लिए उसे काम बता दिया।

एमिलियान घर लौटा। यहाँ सब वस्तुयें साफ सुथरी थीं अँगीठी में आग जल रही थी। खाना पका पकाया तैयार था। उसकी स्त्री मेज़ के पास बैठी सीने पिरोने में लगी थी और उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। उसने एमिलियान का प्रेम से किया। मेज पर खाना सजाया और उसे खिला-पिला कर काम का हाल-चाल पूछने लगी।

एमिलियान ने कहा—"अरे, बड़ा बुरा काम है। इतना काम मिलता है कि मेरी सामर्थ्य के बाहर है। काम देकर मुझे मार डालना चाहते हैं।"

स्त्री ने कहा—"काम से न घबड़ाओ। आगे पीछे न देखो न यह देखो कि कितना काम समाप्त हो चुका है और कितना करने को बाक़ी है। बस काम किये जाओ, ईश्वर की दया से सब ठीक ही होगा।"

एमिलियान पड़ कर सो रहा। सवेरे फिर अपने काम पर चला। बिना इधर-उधर देखे दूसरे दिन भी वह काम पर जुटा रहा। जब सन्ध्या हुई तब उसका सब काम समाप्त हो चुका था। अँधेरा होने से पहले वह घर लौट आया।

इस प्रकार लोग एमिलियान का काम नित्य बढाते गये। न्तु वह सदा अपना काम ठीक समय पर समाप्त करके सोने लिए अपनी झोपडी में लौट आता। एक सप्ताह व्यतीत हो या, राजा के नौकरों ने देखा कि वे मोटे काम से उसे मारने में सफल हुए। तब वे उसे ऐसे कार्य देने लगे जिनमें कुशलता ी आवश्यकता पडती। बढईगीरी और थवईगीरी का काम ने लगे। परन्तु वे चाहे जो काम देते एमिलियान ठीक समय र उसे समाप्त करके रात में अपनी स्त्री के पास चला जाता। स प्रकार दूसरा सप्ताह भी बीता।

तब तो राजा ने नौकरों को बुला कर कहा, "तुम लोग हराम का खाना खाते हो। देखते हैं कि दो सप्ताह बीत गये और तुमने अभी तक कुछ न किया। तुम कहते थे कि एमिलियान को काम से थकाकर मार डालेंगे लेकिन मैं तो अपनी खिड़की से देखता हूँ कि यह नित्य सन्ध्या समय खुशी-खुशी गीत गाता हुआ अपने घर चला जाता है। क्या मुझे तुम लोग बेवकूफ बना रहे हो ?"

राजा के नौकर अपनी सफाई देने लगे। बोले—"हमने मोटे-मोटे काम देकर उसे थकाने का बहुत प्रयत्न किया, परन्तु कैसा ही कठिन काम दिया जाता है उसे कुछ मालूम ही नहीं पड़ता। बातकी बात में कर डालता है, थकना तो जानता ही नहीं। इसके बाद हमने उसे ऐसे कार्य दिये, जिनमें कुशलता की आवश्यकता

काम समाप्त करने को शेप है। जो काम शेप था उसे करने
और सध्या तक सब काम समाप्त हो गया।

राजा सोकर उठा और महल से बाहर झॉक कर
गिरजाघर तैयार था, एमिलियान जहाँ-तहाँ कांटियाँ लगा
था। राजा को गिरजाघर देख कर प्रसन्नता तो क्या होती
और भी चिढ गया। उसने देखा कि एमिलियान की स्त्री
नहीं लग रही है। उसने अपने नौकरो को बुलाकर कहा
"एमिलियान ने यह काम भी पूरा कर लिया। अब उसे
का क्या बहाना होगा? यह काम भी उसके लिए
ठहरा। अब तुम लोग कोई दूसरा उपाय सोचो, नहीं तो उसके
साथ ही साथ तुम्हारे सिर भी कटवा लूँगे।

अतएव उसके नौकर और उपाय सोचने लगे। सोचा कि
एमिलियान से महल के चारो ओर एक ऐसी नदी बनाने को
कहा जाय जिसमे जहाज चल सके। राजा ने एमिलियान को
बुलाकर यह नया काम सौंपा।

उसने कहा—" जब तुमने एक रात मे एक गिरजाघर तैयार
कर दिया तो तुम यह काम भी कर सकते हो। कल सब काम
समाप्त हो जाना चाहिए नहीं तो मैं तुम्हारा सिर कटवा लूगा।"

एमिलियान पहले से भी अधिक हताश हुआ और जी
बहुत दुखी होकर अपनी स्त्री के पास आया।

स्त्री ने पूछा—"तुम इतने दुखी क्यों हो ? क्या राजा ने
; और नया काम बताया है ?"

एमिलियान ने सारा हाल कह सुनाया। बोला—"अब तो
ा चलना ही अच्छा है।"

परन्तु स्त्री ने उत्तर दिया—"सिपाहियों से भाग कर कहाँ
ोगे ? हम चाहे जहा जायँ पकड़े जावेंगे। आज्ञा-पालन के
तिरिक्त और कोई उपाय नहीं है।"

अतएव एमिलियान पड़ कर सो गया। सवेरे उसकी स्त्री ने
से जगाकर कहा—"अब सीधे महल को चले जाओ। सब
ीजें तैयार हैं। महल के सामने घाट के पास केवल एक ढूहा
ह गया है। कुदाली से उसे बराबर कर देना है।"

राजा सोकर उठा तो देखता क्या है कि जहाँ नदी का कोई
नेशान भी नहीं था वहाँ नदी बनी तैयार है। उसमें जहाज आते
ते हैं और एमिलियान कुदाल से एक ढूहा बराबर कर रहा
। राजा को बड़ा आश्चर्य हुआ परन्तु वह न तो नदी देख
र प्रसन्न हुआ और न जहाजों को देख कर। एमिलियान को
ड न दे सकूगा, इस बात पर वह और भी चिढ गया। उसने
सोचा—"कोई ऐसा काम ही नहीं है जिसे यह न कर सके।
इस दशा मे करना क्या चाहिए ?"

उसने अपने नौकरों को बुला कर फिर सलाह मागी। कहा,
"कोई ऐसा काम बताओ जो एमिलियान न कर पावे। जो कुछ

काम समाप्त करने को शेष है। जो काम शेष था उसे करते
और संध्या तक सब काम समाप्त हो गया।

राजा सोकर उठा और महल से बाहर झाँक कर देखा
गिरजाघर तैयार था, एमिलियान जहाँ-तहाँ कांटियाँ लगा
था। राजा को गिरजाघर देख कर प्रसन्नता तो क्या होती
और भी चिढ गया। उसने देखा कि एमिलियान की स्त्री
नहीं लग रही है। उसने अपने नौकरों को बुलाकर कहा-
"एमिलियान ने यह काम भी पूरा कर लिया। अब उसे
का क्या बहाना होगा? यह काम भी उसके लिए
ठहरा। अब तुम लोग कोई दूसरा उपाय सोचो, नहीं तो उसके
साथ ही साथ तुम्हारे सिर भी कटवा लेंगे।

अतएव उसके नौकर और उपाय सोचने लगे। सोचा,
एमिलियान से महल के चारों ओर एक ऐसी नदी बनाने
कहा जाय जिसमें जहाज चल सकें। राजा ने एमिलियान
बुलाकर यह नया काम सौंपा।

उसने कहा—" जब तुमने एक रात में एक गिरजाघर तैयार
कर दिया तो तुम यह काम भी कर सकते हो। कल सब का
समाप्त हो जाना चाहिए नहीं तो मैं तुम्हारा सिर कटवा लूंगा।

एमिलियान पहले से भी अधिक हताश हुआ और जी
बहुत दुखी होकर अपनी स्त्री के पास आया।

ने आज्ञा दी है कि कहीं नहीं चले जाओ और कुछ ले आओ।"

बुढिया दादी ने अन्त तक सब समाचार सुन लिया और ा रोना भी बन्द किया। मन में गुनगुनाने लगी कि "अब ख्य समय आ गया है"। फिर उससे बोली—"बेटा, अच्छी है। अभी बैठ जाओ। मैं तुम्हें कुछ भोजन तो करा ।"

एमिलियान ने भोजन किया। इसके बाद बुढिया दादी ने या कि क्या करना चाहिए। उसने कहा—"यह लो, यह ा का एक गोला है। इसे अपने सामने ढुलका देना और जहाँ-जहाँ जाय पीछे-पीछे तुम भी चले जाना। तुम्हें दूर ना पड़ेगा। जब समुद्र आ जाय तो रुक जाना। समुद्र के नारे एक नगर देखोगे। शहर में चले जाना। शहर के ्कुल नुक्कड पर एक सराय मिलेगी। उसी में रात भे ठहर ना। जो वस्तु तुम ढूँढ रहे हो वहीं पर मिल जायगी।"

एमिलियान ने पूछा—"दादी, मैं उस वस्तु को पहिचानूँगा ने ?"

जब तुम कोई ऐसी वस्तु देखना जिसके आगे लोग अपने माँ-प तक का कहना नहीं मानते तो समझ जाना कि स्तु है। उसे लेकर तुम राजा के पास ने राजा के पास ले जाओगे तो

उसने उत्तर दिया—"राजा ने।"

सिपाहियो ने कहा—"जिस दिन से हम लोगो ने ‍ गीरी की है उसी दिन से हम लोग आप ही कहीं नहीं जा हैं परन्तु अभी तक वहाँ पहुँच नही पाये। और हम भी कुछ नहीं की खोज मे हैं परन्तु वह मिला नहीं। हम तुम्हारी क्या मदद कर सकते हैं ?"

कुछ देर तक एमिलियान सिपाहियो के पास बैठा रहा, से फिर चल पडा। कई मील चलने के बाद एक वन मि उस वन मे एक झोपडी थी और उस झोपडी मे एक वृद्ध स्त्री बैठी थी। यही किसानो और सिपाहियो की माता थी बैठी हुई चरखा कातती जाती थी और रोती जाती थी और अगर अँगुलियो को गीला करना होता तो अँगुली मे न लगाती वरन् आँसुओ से भिगो लेती। जब बुढ़ि ने एमिलियान को देखा तो वह चिल्ला उठी। बोली—" यहाँ क्यों आये" एमिलियान ने उसे टेकुआ देते हुए कहा, मेरी स्त्री ने मुझे भेजा है।

बुढिया उसी दम ठंढी पड गई और उससे समाचार लगी। एमिलियान ने अपने जीवन का सारा हाल कह सुनाया कुमारी से ब्याह करने का, नगर मे जाकर रहने का, महल काम करने का, गिरजाघर बनाने का, जहाज-सहित नदी का, सब हाल कह सुनाया। फिर यह भी बताया कि

ने आज्ञा दी है कि कहीं नहीं चले जाओ और कुछ
ले आओ।"

बुढिया दादी ने अन्त तक सब समाचार सुन लिया और
रोना भी बन्द किया। मन में गुनगुनाने लगी कि "अब
य समय आ गया है"। फिर उससे बोली—"बेटा, अच्छी
है। अभी बैठ जाओ। मैं तुम्हें कुछ भोजन तो करा
"

एमिलियान ने भोजन किया। इसके बाद बुढिया दादी ने
या कि क्या करना चाहिए। उसने कहा—"यह लो, यह
का एक गोला है। इसे अपने सामने ढुलका देना और
जहाँ-जहाँ जाय पीछे-पीछे तुम भी चले जाना। तुम्हें दूर
पड़ेगा। जब समुद्र आ जाय तो रुक जाना। समुद्र के
रे एक नगर देखोगे। शहर में चले जाना। शहर के
कुल नुक्कड पर एक सराय मिलेगी। उसी में रात में ठहर
। जो वस्तु तुम ढूँढ रहे हो वहीं पर मिल जायगी।"

एमिलियान ने पूछा—"दादी, मैं उस वस्तु को पहिचानूँगा
?"

जब तुम कोई ऐसी वस्तु देखना जिसके आगे लोग अपने माँ-
तक का कहना नहीं मानते तो समझ जाना कि यह वही
है। उसे लेकर तुम राजा के पास चले जाना। जब तुम
राजा के पास ले जाओगे तो राजा कहेगा कि 'यह

ठीक वस्तु नहीं है'। तब तुम जवाब देना कि "यदि वस्तु नहीं है तो इसे तोड डालना चाहिए" और यह कह तुम उसे पीटने लगना और नदी पर ले जाकर तोड डालना उसे जल मे फेंक देना, तब तुम अपनी स्त्री को फिर से पाओगे और मेरे आँसू भी सूखेंगे।"

एमिलियान ने दादी से विदा माँगी और गोले को सामने ढुलकाता हुआ चला। गोला ढुलकता-ढुलकता अन्त समुद्र तक पहुंचा। समुद्र के किनारे एक बहुत बडा नगर हुआ था और उस नगर के एक छोर पर एक बहुत बडा घर था वहीं पर एमिलियान रात मे जाकर ठहरा। वह पड कर सो सबेरे उठा। सुनता क्या है कि एक बाप अपने बेटे से कह " कि जाकर जलाने के लिए लकडी काट लाओ। बेटा बाप" आज्ञा पालन नहीं करता, कहता है, 'अभी बहुत सबेरा है, बडा वक्त पडा हुआ है।" इसके बाद एमिलियान ने सुना कि भी कह रही है कि "जाओ, बेटा, तुम्हारे बाप की हड्डिया ‍ हैं। क्या तुम यह चाहते हो कि वह आपही जायँ ? देखो " उठने का समय हो गया।

परन्तु बेटा कुछ गुनगुनाया, उसके बाद फिर पडकर रहा। वह सोया ही था कि सडक पर किसी वस्तु के की आवाज आई। लडका उसी दम कूद कर उठ बैठा और से कपडे पहिन कर सडक की ओर दौडा। एमिलियान भी

ौर उसके पीछे देखने के लिए दौड़ा कि यह कौनसी वस्तु
से लड़का माँ-बाप की आज्ञा से बढ़ कर समझता है। उसने
क्या कि एक आदमी सड़क पर चला जा रहा है—अपने
र कोई वस्तु बाँधे हुए है जिसे कि वह छड़ियो से पीट
। और यही भड़भड़ा रही थी, इसी की आवाज़ पर बैठा
ड़ा था। एमिलियान ने दौड़ कर बड़े ध्यान से देखा कि वह
छोटे पीपे के समान गोल है। दोनो ओर चमड़ा मढ़ा हुआ
सने पूछा—इसको कहते क्या हैं?

जवाब मिला—"ढोल"

"और यह पोली है?"

"हां, यह पोली है।"

एमिलियान को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने उससे कहा कि
मुझे दे दो। लेकिन उसने ढोल उसे न दी। इस पर
लियान ने ढोल माँगना तो छोड़ दिया परन्तु ढोलकिये के
हो लिया। दिन भर यह पीछा किये रहा। अन्त मे संध्या
समय ढोलकिया ढोल रखकर सो गया तो एमिलियान ढोल
र भाग खड़ा हुआ।

भागते-भागते अन्त में वह अपने नगर में आ गया। पहिले
पर अपनी स्त्री को देखने के लिए गया परन्तु उसकी स्त्री घर
न थी। जिस दिन वह गया था उसके दूसरे ही दिन राजा
उसे बुला लिया था। अब एमिलियान महल पर पहुँचा और

ठीक वस्तु नही है'। तव तुम जवाव देना कि "यदि यह वस्तु नहीं है तो इसे तोड डालना चाहिए" और यह कह तुम उसे पीटने लगना और नदी पर ले जाकर तोड़ डालना। उसे जल मे फेक देना, तव तुम अपनी स्त्री को फिर से जाओगे और मेरे आँसू भी सूखेंगे।"

एमिलियान ने दादी से विदा माँगी और गोले को सामने ढुलकाता हुआ चला। गोला ढुलकता-ढुलकता समुद्र तक पहुँचा। समुद्र के किनारे एक वहुत वडा नगर वसा हुआ था और उस नगर के एक छोर पर एक वहुत वड़ा घर था वहीं पर एमिलियान रात में जाकर ठहरा। वह पड़ कर सो सवेरे उठा। सुनता क्या है कि एक वाप अपने वेटे से कह कि जाकर जलाने के लिए लकडी काट लाओ। वेटा वाप आज्ञा पालन नही करता, कहता है, 'अभी वहुत सवेरा है, वड़ा वक्त पडा हुआ है।" इसके वाद एमिलियान ने सुना कि भी कह रही है कि "जाओ, वेटा, तुम्हारे वाप की हड्डिया हैं। क्या तुम यह चाहते हो कि वह आपही जायँ ? देखो उठने का समय हो गया।

परन्तु वेटा कुछ गुनगुनाया, उसके वाद फिर पडकर रहा। वह सोया ही था कि सडक पर किसी वस्तु के की आवाज आई। लडका उसी दम कूद कर उठ वैठा और मे कपडे पहिन कर सडक की ओर दौडा। एमिलियान भी

राजा अपनी खिड़की से चिल्लाने लगा और सिपाहियों से
ने लगा कि एमिलियान के पीछे न जाओ। परन्तु उन्होंने
ा की बात एक न सुनी और वे एमिलियान के पीछे हो लिये।

जब राजा ने यह हाल देखा तो उसने आज्ञा दी कि एमिलि-
ान की स्त्री को शीघ्र उसके पास पहुँचा दो और एमिलियान
से कहलाया कि ढोल मुझे दे दो।

एमिलियान ने कहा, "ऐसा नहीं हो सकता।" सिपाही उसके
पीछे-पीछे थे। जब एमिलियान नदी पर पहुँचा तो उसने ढोल
को चूर-चूर कर डाला और उसके टुकड़े जल में फेंक दिये। इस
पर सब सिपाही भाग गये।

एमिलियान अपनी स्त्री को लेकर अपने घर आया। राजा
ने फिर उनको कभी तङ्ग नहीं किया और दोनों सुखपूर्वक रहने
लगे।

कार्य, मृत्यु और रोग

यह कहानी दक्षिण अमरीका के आदिम-निवासियो मे प्रचलित है।

कहते हैं कि जिस समय ईश्वर ने मनुष्य को पहिले बनाया, उस समय उनको काम करने की कोई आवश्यकता नहीं थी। न उन्हे मकानो की आवश्यकता थी और न वस्त्र और भोजन की। सभी सौ वर्ष तक जीते थे और रोग का कोई नाम भी न जानता था।

जब कुछ काल के अनन्तर, ईश्वर ने चाहा कि देखें मनुष्य किस भाँति रहते हैं तो उसने देखा कि मनुष्य अपने जीवन में सुखी तो क्या हो, आपस मे एक दूसरे से लडते हैं। प्रत्येक व्यक्ति केवल अपनी चिन्ता करता है और ऐसी अवस्था पहुँच गई है कि मनुष्य जीवन का आनन्द तो क्या उठावें, उसे कोसते हैं।

तब ईश्वर ने अपने मन मे सोचा—"यह प्रत्येक मनुष्य के अलग-अलग और अपने ही निमित्त रहने का फल है।" और उस व्यवस्था का परिवर्तन करने के लिए ईश्वर ने ऐसा क्रम रचा कि मनुष्य का जीवन कार्य किये बिना असम्भव हो गया। शीत और क्षुधा से बचने के लिए इस बात की आवश्यकता हुई कि वह मकान बनावे और धरती को जोत कर फल और अन्न उपजावे।

ईश्वर ने सोचा कि "कार्य इन लोगों में आपस में मेल करावेगा। सभी कार्य एक मनुष्य तो कर न सकेगा। हथियार बनाना, मकान के लिए लकड़ी काटना और ढोना, मकान बनाना, खेत बोना और काटना, सूत कातना और बुनना, कपड़े तैयार करना—यह सब कार्य अकेला मनुष्य नहीं कर सकेगा।"

"ऐसा करने से उन्हें इसका ज्ञान हो जायगा कि जितने ही उत्साह के साथ वे मिलकर काम करेंगे, उतना ही उन्हें लाभ होगा और उतना ही उनका जीवन सुखी होगा। इससे उनमें ऐक्य उत्पन्न होगा।"

कुछ काल और बीता, ईश्वर ने फिर आकर देखा कि मनुष्य किस भांति रह रहे हैं और यह देखना चाहा कि अब वे सुखी हैं।

परन्तु उसने देखा कि लोगों का रहन-सहन पहिले से भी बुरा है। वे लोग मिलकर काम अवश्य करते थे, क्योंकि इसके बिना कोई निपटारा नहीं था। परन्तु सभी लोग मिलकर नहीं काम करते थे। सबों ने अपने छोटे-छोटे गुट्ट बना लिये थे। प्रत्येक गुट्ट दूसरे गुट्टों से काम लेने का प्रयत्न करता था और इस प्रकार प्रत्येक के कार्य में रुकावट पड़ती थी। आपस के झगड़ों में समय नष्ट होता था। सभी की दशा बिगड़ी हुई थी।

ईश्वर ने जब देखा कि यह व्यवस्था भी सन्तोष-जनक नहीं है तो उसने ऐसा क्रम रचना चाहा कि मनुष्य अपनी मृत्यु का

समय न जान सके। मनुष्य चाहे जब मर जाया करे। इस बात की घोषणा उसने मनुष्यों को दे दी।

ईश्वर ने सोचा कि "जब मनुष्य यह समझ लेंगे कि उनका न जाने कब शरीरान्त हो जाय तो वे इस थोड़े जीवन के लिए छोटी-छोटी वस्तुओं पर जान देकर अपने जीवन के नियमित दिवसों को भ्रष्ट न करेंगे।

परन्तु इससे भी कुछ लाभ न हुआ। ईश्वर ने जब फिर आकर देखा कि मनुष्य किस भाति रहते हैं तो उसने पूर्ववत् दुर्दशा देखी।

जो लोग सब से अधिक बलवान् थे उन्होने इस बात का लाभ उठाकर कि मनुष्य जब कभी भी मर सकता है दुर्बलों को मार कर और मारने की धमकी देकर उनपर अधिकार कर लिया। और परिणाम यह हुआ कि बलशाली लोग और उनकी सन्तान कुछ काम न करती और बेकारी से थक कर दुख झेलती और उधर गरीब लोग बेचारे अपने बल से अधिक काम करते और उन्हें विश्राम भी न मिलता। एक दल के लोग दूसरे से डरते और उनसे घृणा करते। ऐसी अवस्था मे मनुष्य का जीवन और भी अधिक दु खमय हो गया।

यह सब देखकर ईश्वर ने व्यवस्था को सुधारने के लिए एक अन्तिम उपाय किया। उसने मनुष्यों मे नाना प्रकार के रोग चला दिये। ईश्वर ने सोचा कि जब सभी लोगो को व्याधि की

आशङ्का रहेगी तो मनुष्य यह समझने लगेंगे कि जो लोग नीरोग हैं उन्हें रोगियो पर दया करनी चाहिए तथा उनकी सहायता करनी चाहिए, जिसमे जब वे स्वय रोग ग्रस्त हों तो दूसरे नीरोग लोग भी उनकी सहायता करें।

ईश्वर फिर चला गया, परन्तु जब वह अबकी बार यह देखने आया कि मनुष्य किस भाँति रहते हैं जब कि वे रोग के पञ्जे मे हैं तो उसने देखा कि उनका जीवन पहले से भी बुरा है। उसी व्याधि ने, जिसका ईश्वरीय तात्पर्य लोगों मे ऐक्य उत्पन्न करना था लोगो मे और भी पृथक्भाव उत्पन्न कर दिया। बलशाली लोग जो कि दूसरो से काम लिया करते थे अब उन्ही से बलात्कार से सुश्रूषा लेने लगे। परन्तु जब वे लोग बीमार होते तब बलशाली लोग उनका कुछ भी ध्यान न करते और इस प्रकार दूसरो के लिए काम तथा सुश्रूषा करने पर जो लोग बाधित होते वे कार्य करते-करते इतने थकित हो जाते कि उन्हे अपने रोगियो के देख-भाल तक का समय न मिलता, इससे वे रोगी बिना देख-भाल रह जाते। बीमार लोगों का दृश्य धनियो के आराम मे खलल न पहुँचावे, इस विचार से ऐसे मकानो का प्रबन्ध किया गया जहाँ वे कष्ट मेल कर मर जाय और जो उन लोगो के निवास से सुदूर हो, जिनकी सहानुभूति द्वारा गरीबो को सान्त्वना मिल सकती, और जहाँ भाडे पर काम करनेवाले उनकी सुश्रूषा करें जो कि रोगियों को बिना दया भाव देखते हैं। इसके अतिरिक्त लोग बहुत सी

बीमारियों को छूत की बीमारी मान कर, छूत से बचने के लिए, रोगियो से ही दूर नही रहते थे वरन् उनके सुश्रूषकों से भी दूर रहते थे।

तब ईश्वर ने अपने मन मे सोचा—"यदि इस उपाय से भी मनुष्य सुख का मार्ग नहीं पा सकते तो अब उन्हें दुख उठाने दो और उसी से शिक्षा पाने दो" ईश्वर ने ऐसा सोच कर मनुष्य को अपनी राह पर जाने दिया।

इस प्रकार अपनी राह पर छोड़ दिये जाने पर भी मनुष्य ने कहीं बहुत दिनो बाद जाकर यह समझना शुरू किया कि उसे सुखी रहने के लिए क्या करना चाहिये। केवल इधर थोड़े दिन मे कुछ थोड़े से लोग यह समझने लगे हैं कि काम कोई जुज्जू नहीं है वरन् सब के लिए, एक सुखमय धधा है जिससे कि मनुष्य में ऐक्य फैलता है। वे यह भी समझने लगे हैं कि मृत्यु सबके सिर पर प्रतिक्षण सवार है इसलिए प्रत्येक मनुष्य को अपने क्षण, घटे, दिवस, मास और वर्ष ऐक्य और प्रेम के साथ व्यतीत करना चाहिए। वे यह समझने लगे हैं कि रोग का मनुष्य को पृथक् करना तो दूर रहा, विपरीत इसके इस बात का अवसर देता है कि लोग प्रेम-सूत्र मे बँधकर एक दूसरे के साथ रहे।

आग की चिंगारी

किसी समय एक गाव में ईवान चरवेकाफ नाम का एक किसान रहा करता था। जवानी मे वह बडे सुख से रहा, उसके तीन बेटे थे और सभी अपने हाथ-पैर के हो गये थे। सब से जेठे का विवाह हो गया था, मँझले का होने वाला था, तीसरा भी अच्छा सयाना हो गया था, घोडा हाँकने लगा था, और हल चलाने लगा था। ईवान की पत्नी काम-काज मे चतुर और घर-सँभालू स्त्री थी और सौभाग्य से उन्हे शान्त और काम-काजिन पतोहू भी मिल गई थी। ईवान और उसके कुटुम्ब के सुख को भङ्ग करनेवाली कोई बात नहीं थी। घर में केवल एक आदमी अपने हाथ-पैर का नहीं था—और वह आदमी था ईवान का पिता-उसे दमे का रोग था और आज सात वरसों से वह ईंट की अँगीठी के पास खाट लिये पडा था। ईवान के पास जरूरत की सभी वस्तुए प्रस्तुत थीं, तीन घोडे थे, एक बछेडा था। गाय के आगे भी एक बछडा था और पद्रह भेडें थीं। स्त्रिया घर के खर्च के लिए कपडा बना लेती थीं और खेत के काम में भी हाथ बटातीं थीं। मर्द लोग धरती जोतते थे। एक फस्ल मे सदा इतना अनाज होता कि दूसरी फस्ल तक बल्कि उससे भी अधिक चलता था। अकेली बाजडे की खेती बेचकर मालगुजारी तथा ऊपरी खर्च

निकल आता। अतएव, यदि ईवान से और उसके पडोसी (गोर्दी इवानफ के पुत्र) लँगडे जिबरयल गोरदी से झगडा न हो जाता, तो वह अपने बाल बच्चो सहित बडे आनन्द से जीवन व्यतीत करता।

जब तक वृद्ध गोरदी जीवित था, और ईवान का पिता घर का काम सँभालता था तब तक यह किसान लोग ऐसे रहते थे जैसे पडोसियो को रहना चाहिए। अगर किसी घर की स्त्रियों को चलनी या परात की आवश्यकता होती, वा मर्दों को वोरे की आवश्यकता होती या किसी गाडी का पहिया टूट जाता और बनने मे देर होती तो लोग दूसरे घर से माँगकर अपना काम चला लेते। एक-दूसरो को पडोसियों की भाति सहायता करते। एक का बछडा जो दूसरे के खलियान मे चला जाता तो उसे वह बाहर करके दूसरे से कह देता—"देखो हमारा अनाज बाहर पडा है, यह फिर न आ जाय।" खलियान में या ओसारे मे ताला लगाने का, या अपनी वस्तु को छिपाये रखने का, या एक-दूसरे की चुगली करने का तो उस समय किसी के मन मे विचार भी न पैठा था।

यह तो बुड्ढे के समय की बात है। जब बेटे घर के मालिक हुए तो सब बातें ही बदल गईं।

झगडा एक जरा सी बात पर शुरू हुआ।

ईवान की पतोहू की मुर्गी ने मौसम से पहिले ही अंडे देना आरम्भ कर दिया था और पतोहू अंडों को ईस्टर के त्योहार के लिए इकट्ठा करती जाती थी। गाडी के ओसारे में उसे नित्य एक अंडा मिल जाता। लेकिन एक दिन लड़कों ने मुर्गी को चमका दिया। वह चार दीवारी लाँघ कर पडोसी के हाते में उडकर जा बैठी और वहां पर उसने अंडा दे दिया। ईवान की पतोहू ने मुर्गी का कुडकुडाना सुना तो, लेकिन उसने सोचा, 'अभी धंधे में फँसी हूँ। एतवार सिर पर है, घर साफ करना है। अंडा फिर उठा लाऊँगी।' शाम को वह गाडी के पास गई लेकिन अंडा वहां न मिला। उसने आके सास से और देवर से पूछा कि अंडा तो किसी ने नहीं उठाया। सबने 'नहीं' कर दिया। लेकिन छोटे देवर टरास ने कहा—'तुम्हारी मुर्गी ने पडोसी के हाते मे अंडा दिया है। वहीं पर कुडकुडा रही थी। पीछे से दीवार लाँघ कर यहा आ गई है।

उस स्त्री ने वहा जाके मुर्गी को देखा। जो चिडियों के साथ बसेरे पर पहुँची थी और नींद से उसकी आँखें मुंद रही थीं। मुर्गी बोल तो सकती न थी जो उससे पूछ देखती।

तब वह पडोसिन के घर पर गई। जिबरियल की माँ बाहर निकल आई। बुढिया ने पूछा—"बेटी, क्या, कुछ काम है ?"

"दादी, यही देखती हूँ कि सबेरे हमारी मुर्गी उडकर इधर आ गई थी, कहीं अंडा तो नहीं दिया है ?"

यहीं खतम करो! क्रोध को पेट में रक्खोगे तो यह तुम्हारे ही बुरे की बात है।"

लेकिन गर्म खून वाले बुड्ढे की बात कब सुनने लगे। वह समझते कि यह व्यर्थ बकता-झकता रहता है। ईवान पडोसी के सामने नीचा क्यों देखने लगा।

उसने कहा—"मैंने उसकी दाढी कब उखाडी। उसने आप उखाड ली है। लेकिन उसके बेटे ने मेरे अङ्गे के सब बन्द तोड दिये हैं और फाड दिया है देखो न।"

ईवान भी अदालत मे पहुँचा। पहिले छोटे, तब ज़िला के इजलास में मुक़द्दमा चला। यह सब हो ही रहा था कि इसी बीच में जिबरियल की गाडी का धुरा गुम हो गया। जिबरियल के घर की औरतों ने ईवान के बेटे पर चोरी लगाई। वह कहतीं कि "हमने उसे रात को अपनी खिडकी के पास से गाडी के पास जाते आप देखा है और फलाना पडोसी कहता है कि वह धुरे को सराय में भठियारे के हाथों बेच रहा था।"

इस पर भी मुक़द्दमे-बाजी हुई और घर पर कोई दिन ऐसा न बीतता कि बिना झगडा हुये रहता। अपने बडो को देख कर बच्चे भी एक दूसरे को गालियाँ देना सीख गये। जब स्त्रिया नदी के किनारे कपडा धोने जातीं और वहाँ उन लोगों की देखा-देखी हो जाती तो फिर क्या था। कपडा धोने के लिये

जितना हाथ न चलता उतना उन लोगों की जीभ चलती और ऐसे बुरे-बुरे शब्द मुँह से निकालतीं कि क्या कहे जायँ।

पहिले तो ये किसान लोग एक दूसरे को गालियाँ ही दिया करते और बुराई किया करते, पीछे से ऐसा हो गया कि सच-मुच, एक दूसरे की चीजें हाथ लग गई तो उड़ा दिया करते। लड़के भी देखा-देखी यही सीख गये। जिन्दगी उनके लिये अपार होती गई। ईवान चरवेकाफ और लँगड़े जिब्राइल के बीच में, गाँव की पचाइत मे, सदर में और बड़े न्यायाधीश के यहाँ मुकदमे चलते ही रहे। यहाँ तक कि सभी न्यायाधीश लोग भी आजिज आ गये। कभी जिबराइल ईवान पर जुर्माना करा देता और सजा करा देता, कभी ईवान का दाव लगता तो वह भी ऐसा ही करता। जितना एक-दूसरे को नीचा दिखाते उतना ही उनका और क्रोध बढ़ता। कुत्ते जितनी देर आपस में लड़ते हैं उतने ही खून के प्यासे हो जाते हैं। यही दशा इन लोगों की थी। दोनों में मुकदमे-बाजी हुआ करती। कभी इस पर जुर्माना हुआ, कभी उस पर, कभी यह सजा काट आया, कभी वह। आपस में कहा करते, "रहो इसका बदला चखाऊंगा।" छ बरस तक यही हाल रहा। अकेला एक बुड्ढा, अगीठी के पास खाट पर लगा हुआ बार-बार समझाता कि "बच्चो यह क्या कर रहे हो। बदला लेने के पीछे न पड़ो।

अपने काम मे लगो, जी से कीना दूर करो, इसीमे भलाई है। जितना जी मे कीना रक्खोगे उतनी ही बुराई है।"

मगर उस बेचारे की कोई न सुनता।

सातवें बरस, एक शादी के अवसर पर, ईवान की पतोहू ने जिवराइल की निन्दा की, कहा—जिवराइल घोड़ा चुराते पकडा गया है। जिवराइल नशे में था, क्रोध का आवेश न रोक सका, उसको ऐसा घूसा लगाया कि उसने सात दिन तक चारपाई पकडी। स्त्री उस समय पेट से थी। ईवान प्रसन्न हुआ। मजिस्ट्रेट के पास जाकर नालिश करने का मौका तो मिला। "अबकी इससे पीछा छूटेगा। अबकी बिना सजा काटे या साबेरिया गये यह बच नहीं सकते।" लेकिन ईवान की इच्छा पूरी न हुई। हाकिम ने मुकदमा खारिज कर दिया। ईवान ने सबसे बडी अदालत में फरियाद की। मुक़दमा उठ कर सदर अदालत मे आ गया। ईवान ने कुछ और जोर लगाया सदर अदालत के मुशी और पेशकार को दो बोतलें भेंट की और जिबराइल पर कोडे लगने की सजा करवा दी। मुशी ने फैसला जिबराइल के सामने पढ सुनाया। फ़ैसला था—"इज लास, जिवराइल गोरदी किसान को, सदर इजलास मे बीस बेंत लगाने की सजा देती है।"

ईवान ने फैसला सुना और जिवराइल की ओर देखा कि उसका क्या रग है। जिवराइल का चेहरा एक दम पीला प

गया और फिर वह घूम कर बाहर हो रहा। ईवान भी अपना घोडा सँभालने के लिये बाहर निकला। उसके कान मे जिवराइल के ये शब्द पड गये—"बहुत अच्छा! यह मुझे बेंत लगवाये, मेरी पीठ जले। देखो मे मैं ऐसी जगह आग लगाता हूँ कि वह भी याद करे।"

इन शब्दों को सुन कर ईवान चट अदालत में फिर पहुँच कर कहने लगा—"धर्मावतार, मेरे घर मे आग लगाने को कहता है। सुन लीजिये हुजूर, चार आदमियो के आगे की बात है।"

जिवराइल बुलाया गया। उससे पूछा गया कि तुमने ऐसा कहा है?

उसने उत्तर दिया—"मैंने कुछ नहीं कहा है। आपको अधिकार है आप मुझे बेत लगवा दे, जो करे। भले भी रहूँ तब भी दण्ड मुझी को मिलेगा—और यह मनमानी करे, तो इससे कोई पूछने वाला नहीं।

जिवराइल और भी कुछ कहना चाहता था, लेकिन उसके होठ और गाल कँप रहे थे। उसने दीवाल की ओर मुँह कर लिया। अमले भी उसे देख कर डर गये। उन्होंने सोचा—"अपने ऊपर या अपने पडोसी पर, यह कहीं कुछ कर न गुजरे।"

तब बुड्ढे न्यायाधीश ने कहा—"देखो, तुम लोग अपने मत मे आओ, आपस मे सुलह कर लो। जिवराइल तुम्हे एक गर्भिणी

स्त्री को मारना चाहिये था ? यह तो कहो कि कुशल हो गई, नहीं तो न जाने क्या हो जाता। तुम्हीं बताओ ऐसा चाहिये था ? मेरी बात मानो, इससे माफ़ी माग लो। यह तुम्हें माफ़ कर देगा और मैं तुम्हारी सज़ा पलट दूगा।"

मुशी ने यह सुना तो कहा—"हुज़ूर, दफ़ा ११७ के मुताबिक यह मुमकिन नहीं है। फरीकैन मे सुलह न हो सकी तभी तो इजलास ने फैसला सुनाया। अब फ़ैसले की तामील लाज़िम है।"

न्यायाधीश ने मुशी की बात पर ध्यान न दिया। कहा—"अजी, अपनी ज़बान ख़ामोश रक्खो। शान्ति-प्रिय ईश्वर की आज्ञा का पालन करना यह पहिला नियम है।" इसके बाद न्यायाधीश फिर किसानों को आपस मे सुलह कर लेने के लिये समझाने लगा। लेकिन नतीजा कुछ न हुआ। जिबराइल राज़ी न होता।

वह बोला—"अगले साल मैं पूरे पचास बरस का होऊँगा। एक बेटा है उसकी भी शादी हो चुकी है। अभी तक मेरे बेंत न पड़ी अब इस छिनहे ईवान ने मुझे बेंत की सज़ा करवाई है और मैं उससे क्षमा माँगू। न, अब तक बहुत सहा ईवान भी क्या याद करेगा।"

इसके बाद फिर जिबराइल का स्वर कँपने लगा। वह इस से अधिक न कह सका और घूम कर बाहर चला गया।

अदालत से गाँव सात मील पर था। जब ईवान घर पहुँचा तो अँधेरा हो रहा था। उसने अपने घोड़े की काठी उतारी,

और उसे भीतर करके, घर में गया। वहा पर कोई भी नहीं था। स्त्रियाँ जानवरों को हाँक लाने गई हुई थीं। लड़के अभी खेत से नहीं लौटे थे। ईवान भीतर गया और बैठकर सोचने लगा। जिबराइल सजा सुनकर किस प्रकार पीला पड गया था, किस प्रकार उसने दीवाल की ओर पीठ फेर ली थी उसे इसका ध्यान आया। ईवान का जी भारी हो गया। उसने सोचा कि मुझे यह दंड मिलता तो मेरी क्या दशा होती, यह सोचकर उसका दिल काँप उठा और उसे जिबराइल पर तरस आया। तब उसने, अगीठीके पास खाट पर अपने बाप को खासते सुना। बुड्ढा उठ बैठा और पैर नीचे लटकाकर धीरे-धीरे खिसकने लगा। फिर एक पीढा के पास आकर, उसी पर बैठ गया। इतने मे ही उसका दम फूल आया और वह खाँसने लगा। बडी देर में उसका गला साफ हुआ। फिर मेज पर ओट देकर वह बोला – 'तो क्या उसे सजा मिल गई।'

ईवान—"हाँ, बीस बेतों की।"

बुड्ढे ने अपना सिर हिलाया।

उसने कहा—"बहुत बुरी बात हुई। ईवान तुम बडा बुरा कर रहे हो! अरे, बड़ी बुरी बात हुई। उसके लिये इतनी बुरी नहीं, जितनी तुम्हारे लिये बुरी हुई। हा! उस पर बेंत पड़े, तो तुम्हे क्या मिल जायगा?"

ईवान—"फिर ऐसा कभी न करेगा।"

बुड्ढा—"वह क्या फिर न करेगा ? क्या उसने तुमसे भी बुरा किया है ?"

ईवान—"क्यो, उसने हमारा कितना नुक़सान किया है। मेरी स्त्री को अधमरी कर दिया और अब घर मे आग लगाने की धमकी देता है। इस पर मैं उसका उपकार मानूँ ?"

बुड्ढे आदमी ने एक लम्बी सास भरी और कहा—"ईवान तुम दुनिया में आते-जाते हो और मैं यहाँ अँगीठी के पास बरसों से पड़ा हुआ हूँ। तुम समझते हो कि मैं ही सब कुछ देखता हूँ यह कुछ नहीं देखता। अरे, बेटा। सच तो यह है कि तुम्हीं कुछ नहीं देखते। बैर ने तुम्हे अन्धा कर दिया है। दूसरों के अपराध तुम्हारी आँखों के सामने नाचा करते हैं, अपने अपराधों को पीछे कर देते हो। "उसने बुरा किया।" क्या बात कही। अगर उसी अकेले ने बुरा किया होता तो झगडा क्यों खड़ा होता ? बिना दो हाथ के कहीं ताली बजती है ? झगड़ा सदा दो के बीच होता है। वह बुरा सही, तुम भले बने रहो तो झगडा काहे को हो ? उसकी दाढी किसने उखाड ली थी ? उसके फ़ूस का किसने नाश किया था ? उसे अदालत मे कौन खींच ले गया था ? तुम सब दोष उसी पर मढते हो। तुम आप बुरी तरह जीवन व्यतीत करते हो और यही सब से बडा फसाद है बेटा। हम लोग इस तरह थोडे ही रहा करते थे। मैंने यह सब

बातें तुम्हें नहीं सिखाई हैं। उसके बाप और हम इसी तरह रहते थे? किस तरह रहते थे? क्यों? जैसे पड़ोसी रहते हैं वैसे ही रहते थे। उसके घर में आटा घट जाता तो उसके घर की कोई स्त्री चली आती, कहती—"ट्राल चाचा थोड़ा सा आटा दो।" मैं कह देता—"बेटी खलियान में चली जाओ, जो चाहो ले लो।" अगर उसके जानवर को चरानेवाला कोई न रहता तो मैं कहता "जावो, ईवान, उसके घोड़ों को देखते रहना।" मुझे किसी वस्तु की दरकार होती तो मैं भी जाता, कहता—"गोरदो चाचा, मुझे ऐसी वस्तु की जरूरत है।" कहता, "ट्राल चाचा, ले लो।" हम लोगों में तो ऐसी निबही। सुख से रहे। लेकिन अब क्या हाल है? उस दिन वह सिपाही, प्लेनाक्ष के युद्ध का हाल कह रहा था न? अरे यहाँ तो तुमने प्लेना से भी बुरा युद्ध ठान रक्खा है। यही ढंग रहने का है? बड़ा पाप कर रहे हो। अब तुम आदमी हुये, घर के मालिक हुये। जवाबदही तुम्हारी है। तुम औरतों और बच्चों को क्या सिखा रहे हो? नोच-खसोट करना और गाली-गलौज करना? अभी उस दिन की बात है, तुम्हारा ट्रास्क—कल का छोकड़ा—पड़ोसिन इरीना को गालियां सुना रहा था और उसकी माँ खड़ी हँस रही थी।

क्ष बल्गेरिया का एक नगर है। यहाँ पर १८७७ में तुर्कों और रूमानियों के बीच बहुत समय तक घोर युद्ध हुआ था।

यही चाहिये ? तुम्हीं को जवाब देना पड़ेगा। अपनी आत्मा मे विचारो ऐसा ही सब होना उचित है ? तुम एक बात कहते हो तो मैं दो बाते सुनाता हूँ। तुम एक घूंसा मारते हो मैं दो लगाता हूँ। न, बेटा ! मसीह ने जब धरती पर अवतार लिया था तो इससे बिल्कुल विपरीत शिक्षा दी थी। कोई कड़ी बात कह दे, सुन ले, उसकी आत्मा स्वय उसे बुरा कहेगी। यही प्रभु की शिक्षा है। तुम्हें कोई एक थप्पड़ मारे तो तुम अपना दूसरा गाल भी उसके सामने कर दो। "लो, मार लो, जो तुम्हें यही उचित जान पड़े।" उसकी आत्मा उसे आप ही सतायेगी। वह ठंडा पड़ेगा। तुम्हारी सुनेगा, यही प्रभु की शिक्षा है, प्रभु ने गर्व की शिक्षा नहीं दी है। बोलते क्यों नहीं ? मैं गलत कहता हूँ ?"

ईवान चुप बैठा सुनता रहा।

बुड्ढे ने खाँसा और अपना गला किसी तरह साफ करके फिर बोलना शुरू किया—"तुम समझते हो कि मसीह की शिक्षा गलत है ? क्यो ? यह सब तुम्हारे ही भले की बात है। अपने सांसारिक जीवन की ओर ध्यान दो। जब से तुम लोगों ने यह महाभारत ठानी है तब से तुम्हीं बताओ कि तुम फायदे में हो कि नुकसान में ? यही जोड़ डालो कि यह अदालत कितना रुपया खा गई है ? आने-जाने और खाने-पीने मे ही कितना बैठ चुका है ? तुम्हारे बेटे अच्छे सयाने हो चुके हैं, तुम्हारी किसी तरह निबही जा रही है। लेकिन लक्ष्मी घटने लगी है।

क्यो ? इसी मूर्खता के कारण, इसी तुम्हारे गर्व के कारण। लडकों को लेकर तुम्हें खेत में होना चाहिये था। जोतने-बोने में लगना चाहिये था। लेकिन तुम्हारे ऊपर तो शैतान सवार है। कभी अदालत मे तुम्हे घसीट ले जाता है, कभी इधर-उधर। जोतना-बोना ठीक समय पर न होगा तो धरती माता अन्न कैसे देगी। इस साल ज्वार क्यो नहीं हुआ ? तुमने बोया कितने पिछड के ? जब शहर से लौटे तब बोया। तुम्हे नफा क्या हुआ ? एक और बोझ हो गया। अरे बेटा ! अपना काम देखो। लडकों को लेकर खेत देखो, घर देखो। कोई कुछ कहता है, क्षमा करो। यही भगवान् की इच्छा है। तब जीवन भी तुम्हारा सहल हो जायगा, जी भी हल्का रहेगा।"

ईवान चुप रहा।

"ईवान, मेरे बेटे। अपने बुड्ढे बाप की भी मान लो। जाओ, घोडा जोत लो सरकार के दफ्तर में चले जाओ। इन सब बातों का अन्त करो और कल जाकर ईश्वर के लिए जिबराइल को मना लो। कल के लिये अपने घर न्योता दे आओ। (दूसरे दिन एक त्योहार था) चाय तैयार रक्खो एक बोतल वोड्का* ले आओ। यह झगडा निपटा ही दो—आगे के लिये चैन मिले और बच्चों और औरतों को भी अच्छी तरह से समझा दो।

---

* एक प्रकार की शराब

ईवान ने सास भरी, सोचा—'यह ठीक तो कह रहा है।' उसका जी कुछ हलका पडा। लेकिन वखेडा इतना वढ गया था कि उसके समझ में न आता कि किस प्रकार समझौते का आरम्भ किया जाय।

लेकिन बुड्ढे ने मानो उसके मन की वात जान ली। उसका दुविधा समझ गया। फिर से कहने लगा—"जाओ ईवान, इसे टालना ठीक नही है। आग फैलने न पावे, इसके पहिले ही उसे बुझा देना चाहिये। नहीं तो फिर बनाये नहीं वनती।"

बुड्ढा और भी कहना चाहता था लेकिन इस बीच में स्त्रियाँ, चिडियों की भाँति चाँव-चाँव करती पहुँच गई। जिवराइल को वेंत की सजा मिली और जिवराइल घर के फूकने की धमकी दी—इसका समाचार उन्हे पहिले ही मिल चुका था। उन्होंने यह सव सुना था, अपनी ओर भी नमक मिर्च लगाया और वह जिवराइल की घरवालियों से खेत ही मे जूझ कर लौटी थीं। वे कहने लगीं कि जिवराइल की पतोहू फिर से नालिश करने को कहती है। सुना है जिवराइल ने हाकिम को अपनी ओर कर लिया है अवकी फैसला उलट जायगा। स्कूल मे मुदर्रिस ने स्वय जार के पास दोहाई लिख भेजी है और अर्जी में आदि से अन्त तक ईवान का सव व्योरा लिख दिया है। धुरे के चोरी की और बागीचेवाली सभी बातें लिखी हैं। कहते हैं कि अवकी ईवान की आधी भूमि ले लेंगे। ईवान ने जब यह सब सुना तो ईवान का

फिर ठंडा पड गया। जिबराइल से सुलह करने का ध्यान जाता रहा।

खेतिहर के लिये काम की कमी नहीं रहती। ईवान स्त्रियों से कुछ बोला चाला नहीं, सीधे खलिहान और ओसारे की ओर चला गया। वहाँ झाडता-बटोरता रहा। इसी बीच में सूरज डूब गया और लडके भी खेत से लौट आये। दो घोडे लेकर वह जाडे की फ़स्ल के लिये खेत जोत रहे थे। ईवान ने उनसे काम का हाल-चाल पूछा। सब चीजें अपनी अपनी जगह पर मिल कर रखवाई। घोडे के गले का पट्टा टूट गया था। मरम्मत के लिये उसे अलग रक्खा। खलिहान में लकडिया बटोर कर रखने जा रहा था लेकिन बिल्कुल अँधेरा हो चुका था इसलिये उसे वहीं छोड दिया। गौओं को चारा डाला। फाटक खोल कर उन घोड़ो को बाहर किया जिन्हें टरास रात में खेत मे ले जानेवाला था। फिर फाटक बद कर के उसमें सिटकिनी चढा दी। सोचा अब खाना खाकर आराम करना चाहिये। घोडे क पट्टे को लेकर वह झोपड़े में चला। जिबराइल का तथा वृद्ध पिता के कहने का ध्यान उतर चुका था। लेकिन जैसे ही अपने द्वार पर पहुँचा और घर में जाने ही वाला था उसे पड़ोसी की आवाज सुनाई पड़ी। अपनी ओर तीव्र स्वर में किसी से कह रहा था—"वह शैतान है किस मर्ज की दवा?" जिबराइल कह रहा था—"उसे तो जान से मार डालना चाहिये!" इन शब्दों

को सुनकर ईवान के मन में वही पुराने कुभाव जागृत हो गये। जब तक जिब्राइल बकता-झगता रहा तब तक तो वह खड़ा सुनता रहा, बाद में अपने झोपड़े में गया।

भीतर एक बत्ती जल रही थी। पतोहू बैठी चरखा कात रही थी। स्त्री खाना तैयार कर रही थी बड़ा लड़का खड़ाऊँ के लिये लकड़ी ठीककर रहा था। मँझला मेज पर बैठा किताब पढ़ रहा था। टरास रातको घोड़ों को खेत में ले जाने का सामान कर रहा था। अगर पड़ोसी से बिगाड़ न हो गई होती तो इस झोपड़े में सभी सुख के सामान थे।

ईवान चिढ़ा हुआ भीतर आया। बिल्ली चौकी पर बैठ गई थी उसे उठा कर पटक दिया फिर स्त्रियों पर बिगड़ने लगा, "बालटी यहाँ रक्खी जाती है?" इसके बाद खिन्न होकर बैठ गया। भौं चढ़ाकर, घोड़े का पट्टा सुधारने बैठ गया। जिबराइल के शब्द उसके कानों मे गूज रहे थे। अदालत करने की धमकी का ध्यान आया। अभी जो तीक्ष्ण स्वर में कह रहा था—'उसे तो जान से मार डालना चाहिये' वह भी सिर में घूम रहा था, उसकी स्त्री ने टरास को भोजन कराया। भोजन करके टरास ने एक पुरानी भेड़ की खाल की पोशाक पहिनी; ऊपर से एक और कोट पहिना। कमर में फेंटा कसा। साथ में कुछ रोटियाँ लीं और बाहर घोड़ों को सँभालने गया। उसका बड़ा भाई उसे पहुँचाने जा रहा था लेकिन ईवान आप उठ खड़ा हुआ। बाहर

बरामदे मे गया। बाहर खूब अन्धकार हो गया था, बादल हो आये थे और हवा बडे वेग से चल रही थी। ईवान सीढी से नीचे उतरा, बेटे को घोड़ी पर सवार कराया, बछेड़े को पीछे हाँक दिया। टरास तो गाँव की ओर चल दिया लेकिन ईवान वहीं खड़ा घोड़े की टाप की आवाज सुनता रहा। टरास गाँव के और छोकडों के साथ हो लिया। जब सब दूर निकल गये तब ईवान फिरा। द्वार पर खडा हुआ था, जिब्राइल के ये शब्द उसके सिर में घूम रहे थे—"देखो, ऐसी आग लगाता हूँ कि तुम भी याद करो।"

ईवान ने सोचा—"यह जी पर आ गया है। चारों ओर फूस-फास ही है। आँधी भी चल रही है। पिछवाडे की ओर आकर वह कहीं किसी चीज में आग न छुला दे और भाग जाय। हमारा घर भी भस्म हो जायगा और वह लुचा साफ़ बच जायगा और बचा कहीं आग लगाते पकड़ लिये गये तो फिर देखें कैसे बचते हैं।"

यह विचार उसके जी में ऐसा बैठ गया कि फिर वह घर में न गया, गली में हो रहा और मोड़ से आकर निकला। "यहाँ घर के चारों ओर चक्कर लगाऊँगा, न जाने क्या कर बैठे?" ईवान दबे पाँव फाटक से निकला दूसरे घुमाव पर पहुँच कर उसने चार दीवरी को घूम कर देखा। उसे ऐसा जान पड़ा कि दूसरे कोने से कोई झट से निकल कर फिर लोप हो गया है। ईवान रुका,

चुप-चाप खडा रहा, सुनता रहा। चारो तरफ सन्नाटा था। कभी-कभी बेल की पत्तियाँ उडकर हवा मे आ जातीं, कभी-कभी फूस के झोपडो मे हवा की सनसनाहट जान पडती। पहिले तो बिल्कुल अन्धकार जान पडा पीछे से जब आँखें अँधेरे को परख गई तो दूसरा कोना दिखाई देने लगा। वहाँ पर एक हल पडा हुआ था। कुछ बँडेरे पडे थे। उसने खूब देखा, लेकिन कोई दिखाई न पडा।

ईवान ने सोचा—"भ्रम हुआ जान पडता है, तो भी चल कर देख लें।" ईवान चुपके से मडहे की तरफ जाने लगा। ईवान खडाऊ पहिने हुये भी इतने धीरे-धीरे चल रहा था कि उसे अपने पैरो की आप आहट न सुनाई देती थी। जब वह बिल्कुल कोने पर पहुँच गया तो ऐसा जान पडा कि हल के पास से कोई वस्तु भभक कर फिर लोप हो गई। ईवान का जी धडकने लगा। वह रुक गया। वह ठहरा ही था कि एक बार फिर कोई वस्तु और भी वेग से भभकी, उसीके उँजाले में, नीचे झुक कर बैठा हुआ, उसकी ओर पीठ किये, टोपी लगाये कोई आदमी स्पष्ट दिखाई दिया। वह थोडी-सी सूखी घास हाथ में जलाये हुये लिये था। ईवान का हृदय पक्षी की भाँति फड़फडाने लगा। जी कडा करके, लबे डग मारकर, चुपके से वह उसकी ओर बढ़ा, सोचा—"अब कहा जाता है। बदमाशी करते पकड़ा गया।"

ईवान पास पहुँच भी न पाया कि एक दूसरे ठौर और भी जोर से ज्वाला धधक उठी। बँडेरे के पास छप्पर जल रहा था। ऊपर छत तक लौ पहुँच रही थी। उसी के नीचे जिबराइल का पूरा शरीर स्पष्ट दिख रहा था।

जैसे बाज लवे के ऊपर टूटता है, उसी तरह ईवान लँगड़े जिबराइल के ऊपर टूटा। सोचा—'अब कहा बचकर जायगा।' जिबराइल ने चाहे उसकी आहट पाली, चाहे और कुछ समझा, वह पीछे घूमकर देखकर खलिहान के भीतर से होता हुआ खरहे की भाँति भागा। ईवान उसके पीछे चिल्लाता हुआ दौड़ा— "बच के कहाँ जायगा।"

जिबराइल को पकड़ता ही था कि जिबराइल कावा कटा गया। लेकिन ईवान ने उसके कोट का दामन पकड़ ही लिया। कोट फट कर अलग हो गया, ईवान गिर पड़ा। लेकिन फिर उठा, और "मारो! पकड़ो! चोर! हत्यारा!" चिल्लाता हुआ फिर पीछे दौड़ा। इतने मे जिबराइल अपने घर के दर्वाजे पर पहुँच चुका था। जब ईवान वहाँ पहुँचा और उसे पकड़ना चाहा वैसे ही ईवान की कनपटी पर कोई चीज पत्थर जैसी ऐसे जोर से लगी कि उसका सिर भन्ना उठा और बिलकुल बहरा-सा हो गया। जिबराइल ने दर्वाजे के पास पड़ा हुआ एक डंडा उठाकर भर जोर मारा था।

ईवान का सिर घूम गया। आँखों के सामने चिंगारिया उठने लगीं। इसके बाद अँधेरा छा गया और वह लड़खड़ा कर

गिर पडा। जब होश मे आया तो जिबराइल का वहा कहीं पता नहीं था। दिन के ऐसा उजाला हो गया था। उसके घर की ओर से ऐसी आवाज़ आ रही थी जैसे कहीं अजन चल रहा हो। ईवान ने फिर कर देखा तो उसके पिछवाडे का ओसारा तमाम जल रहा था। बगल के ओसारे में भी आग लग चुकी थी। लौ और धुवाँ और चिंगारिया उड-उड़ कर धुएँ के साथ उसके झोंपडों की ओर आ रही थीं।

हाथ उठाकर और जाँघ पीटकर ईवान चिल्लाने लगा। अरे यारो, यह क्या है? बँडेरे के नीचे से थोडा सा फूस खींचकर कुचल देने में तो काम चल जाता। यारो, यह क्या हो गया? यही वह बकता रहा। वह चिल्लाना चाहता था, लेकिन मुँह से साँस ठीक न निकलती थी। उसका स्वर जैसे चला गया हो। उसने दौडना चाहा, लेकिन उसके पैर लड़खड़ाते और टकराते। वह धीरे-धीरे चला, लेकिन फिर लडखडाया, फिर साँस फूली। जरा सास लेने रुक गया, फिर चला। जब तक पीछे के ओसारे तक पहुँचे तब तक बगल वाला ओसारा भी अच्छी तरह जलने लगा। और झोंपडे का एक कोना भी आग ने पकड लिया। फिर फाटक की छाजन भी जलने लगी। झोपडे से लौ निकल रही थी। आगन में जाना असम्भव था। एक भीड़ लग गई थी, लेकिन हो भी क्या सकता था। पड़ोसी लोग अपना ही माल असबाब घर के बाहर ढोने में लगे थे। जानवरों को

ओसारे से बाहर कर रहे थे। ईवान के घर के बाद जिबराइल के घर में आग लगी। इसके बाद हवा इतनी तेज हुई कि लपट गली के दूसरे पार पहुँच गई और आधा गाँव जल गया।

ईवान के घर में तो लोग उसके बूढ़े बाप को किसी भाँति बचा पाये। और लोग भी बस अपने बदन का कपड़ा लेकर बच गये। जो घोड़े रात को खेत में गये थे उन्हे छोड़कर और कोई वस्तु नहीं बची। सब जानवर, मुर्गियाँ, गाड़ी हल, हेंगा, औरतों के कपड़े समेत बक्स और ठेक का गल्ला—सब भस्म हो गया।

जिबराइल के घरमे जानवर तो निकाल लिये गये, कुछ और छोटी मोटी चीजें बच गईं, बाकी वहा भी सब भस्म हो गया।

रात भर आग जला की। अपने घर के सामने ईवान खडा खडा यही रटता रहा—"यारो, यह क्या हो गया? तनिक सा फूस नोच कर कुचल देने का तो काम था!" जब छत गिर गई, तो ईवान जलती आग में घुस पड़ा। एक जली हुई शहतीर पकड़ कर खींचने लगा। औरतों ने देखकर उसे पुकारा। लेकिन वह शहतीर घसीट लाया। दूसरी शहतीर लेने जा रहा था, पैर उलटा, आग में गिर गया। तब उसके बेटे ने जाकर उसे खींचकर बाहर किया। ईवान के बाल और दाढी झुलस गई थीं। कपड़े जल गये थे। हाथ भी जल गया था। लेकिन उसे कुछ जान न पड़ा। लोगों ने कहा—"इसके हवास ठीक

नही हैं। आग जली जा रही थी। ईवान खडा चिल्ला रहा था "यारो यह क्या हुआ? फूस खींचकर कुचल देने का तो काम था।

सवेरे गाव के मुखिया का लडका ईवान को बुलाने आया।

"ईवान दादा, तुम्हारे बाप का दम निकल रहा है। तुम्हे आखिरी बार देखने को बुलाया है।"

ईवान अपने बाप को भी भूल गया था। समझा नही कि क्या कहा जाता है। बोला—"कैसा बाप? किसे बुलाता है?"

"तुमसे अन्तिम भेट करने को बुलाया है, मेरी झोपडी में दम निकल रहा है। ईवान दादा, जल्दी आवो।" यह कह कर मुखिया का लडका ईवान का हाथ पकड कर खींचने लगा। ईवान लडके के पीछे चला।

भीतर से जिस समय निकाला जा रहा था उस समय फूस से बुड्ढा भी जल गया था। लोग उसे मुखिया के घर पर कर आये थे। वह गाव के दूसरे छोर पर था, वहा आग नहीं पहुँच सकती थी।

जब ईवान अपने बाप के पास आया तो उस समय वहाँ केवल मुखिया की बुड्ढी स्त्री थी और अँगीठी के पास कुछ बच्चे खेल रहे थे। और सब लोग आग के पास गये थे। बुड्ढा एक चौकी पर पडा हुआ था। हाथ में एक मोमबत्ती॰ लिये हुये बारबार

॰ मरते हुये आदमी के हाथ में मोमबत्ती दे देने की रूस में प्रथा है।

दर्वाजे की ओर देख रहा था। बेटे को आते देख तनिक खसक गया। बुड्ढी स्त्री ने आकर बुड्ढे से कहा—"तुम्हारा बेटा, आ गया" बुड्ढे ने उसे पास आने को कहा। ईवान और पास आया।

बुड्ढे ने कहा—"ईवान मैंने तुमसे क्या कहा था? किसने गाँव भर जला दिया?"

ईवान ने कहा—"उसी ने पिता। मैंने तो उसे जलाते देखा। मैंने तो उसे आग छप्पर मे रखते देखा। चाहता तो थोडी सी फूस निकाल कर पैर से कुचल देता, फिर कुछ न होता।"

बुड्ढा—"ईवान मैं तो मर ही रहा हूँ। एक दिन तुम्हारे लिये भी यही मौत का सामना रक्खा है। बताओ पाप किसका है?"

ईवान बाप की ओर चुप-चाप देखता रहा। मुँह से एक शब्द भी न निकला।

बुड्ढा—"अच्छा, ईश्वर को साक्षी देकर तुम्हीं कहो पाप किसका है? मैं तुमसे क्या कहता था?"

इतना कहने पर ईवान होश मे आया और सब समझना आरम्भ किया। सिसकी भरके कहने लगा—"पिता, दोष मेरा है!" वह घुटनों के बल गिर के कहने लगा—"पिता, मुझे क्षमा करें। तुम्हारे सामने, ईश्वर के सामने, पापी मैं ही हूँ।"

बुड्ढे ने हाथ हिलाया। बत्ती दाहिने हाथ से बाये हाथ मे कर ली। दाहिना हाथ माथे पर धर कर ईश्वर की बन्दगी करना चाहता था, लेकिन न कर सका, रुक गया।

"ईश्वर, धन्य है! ईश्वर धन्य है!" यह कह कर उसने अपने बेटे की ओर फिर आँख फेरी।

"ईवान, ओ ईवान!"

"क्या है, पिता?"

"अब तुम्हें क्या करना उचित है?"

ईवान रो रहा था।

बोला—"मैं नहीं जानता पिता कि अब हम कैसे रहेंगे?"

वृद्ध ने आँखें मूद ली। होठों को दबाया। जान पडता था कि थोडा सा बल एकत्रित करने का प्रयत्न कर रहा है। फिर आँख खोलकर कहा—"ईश्वर का नियम पालन करोगे तो निभ जायगा सब निबाह लोगे। वह रुका, फिर मुसकुराया, और कहा—"ईवान, देखो किसी से कहना न कि आग किसने लगाई। दूसरे के एक अपराध को तुम छिपाओगे तो ईश्वर तुम्हारे दो अपराधों को क्षमा करेगा।" बुड्ढे ने दोनों हाथों में मोमबत्ती थाम ली और उसे छाती में लगाकर लेट गया, और उसके प्राण निकल गये।

ईवान ने जिबराइल के विषय में कुछ नहीं कहा। किसी को यह पता न लगा कि आग किसने लगाई।

ईवान का जिबराइल पर क्रोध जाता रहा। जिबराइल को आश्चर्य होता था कि ईवान ने किसी से कहा क्यों नहीं। पहले तो जिबराइल को डर लगा करता था। थोड़े समय बाद डर

जाता रहा। दोनों ने झगड़ना छोड़ दिया; उनके कुटुम्बियों ने भी लडना छोड दिया। जब तक दोनों ने अपना-अपना झोपडा नहीं बनाया तब तक दोनों एक ही घर में रहे। जब गाँव फिर से बसा तो चाहते तो दोनों अपना घर दूर-दूर बनाते लेकिन दोनो ने घर पास ही पास बनाया और पहले की भांति पडोसी बने रहे।

फिर जैसे भले पडोसी रहा करते हैं, उसी तरह वे भी रहने लगे। ईवान चरवेकाफ को अपने पिता की आज्ञा याद थी कि ईश्वर के नियम का पालन करना चाहिये और आग जैसे लगे वैसे ही बुझाना चाहिये। अब यदि कोई उसे हानि पहुँचाता है तो वह बदला नहीं लेता, समझौता कर लेता है। कोई आदमी कुछ बुरी बात कह देता है तो उसका जवाब न देकर उसे अच्छी आदत की शिक्षा देता है। यही शिक्षा वह अपने घर की स्त्रियों को और बच्चों को भी देता है। ईवान चरवेकॉफ ने अपना घर फिर सँभाल लिया है और पहले से भी अच्छी भांति रहता है।

मुर्गी के अंडे के बराबर अन्न का एक दाना

एक दिन कुछ बालकों ने खेलते हुए चट्टान के दरारे में एक ऐसा दाना पाया जो देखने मे तो अन्न के दाने की भाँति था और उसमे बीच मे लकीर भी पड़ी हुई थी, लेकिन इतना बड़ा था जितना बड़ा कि मुर्गी का अडा होता है। उसी समय उधर से एक यात्री निकल रहा था। उसने उस दाने को देखा और लड़कों को चार पैसे देकर दाना खरीद लिया। फिर नगर में आकर यात्री ने उस कुतुहल-वस्तु को राजा के हाथो अच्छे दामों में बेच दिया।

राजा ने अपने पण्डितों को एकत्रित किया और उनसे कहा कि "बताइये यह क्या वस्तु है"? पण्डितो ने उस पर बहुत विचार किया, परन्तु कुछ भी निश्चय न कर सके कि यह है क्या। राजा ने उस दाने को एक खिड़की पर रखवा दिया। एक दिन, एक मुर्गी ने उसमें चोंच मार-मार कर एक छेद कर दिया। तब लोगों को मालूम हुआ कि यह तो अन्न का दाना है।

पण्डितों ने राजा के पास जाकर कहा —

"महाराज, यह तो अन्न का दाना है।"

इस पर राजा को बड़ा आश्चर्य हुआ और उसने पण्डितों को फिर आज्ञा दी कि अब यह पता चलाओ कि यह दाना कब और कहाँ उत्पन्न हुआ, पण्डितों ने फिर विचार किया, पुस्तकों में छान-बीन की, लेकिन दाने के विषय में कुछ भी न जान पाये। इस पर उन लोगों ने राजा के पास आकर कहा —

"महाराज! हम आपको कुछ उत्तर नहीं दे सकते। हमारी पुस्तकों में इसके विषय में कुछ भी नहीं लिखा है। आप किसानों से पूछ-ताछ करें, तो शायद कुछ पता चले। सम्भव है किसी ने अपने बाप-दादा से सुना हो कि इतना बड़ा अन्न कब और कहाँ उपजा था।"

इस पर राजा ने अपने सामने किसी बुड्ढे किसान को लाये जाने की आज्ञा दी। राजा के नौकर एक ऐसा आदमी ढूँढ कर लाये जो बहुत ही बुड्ढा था। उसकी कमर झुक गई थी। उसका रङ्ग पीली राख के समान हो गया था। उसके एक भी दाँत शेष नहीं था। दो-दो लकड़ियाँ टेकता हुआ वह किसी भाँति राज के सामने आया।

राजा ने उसे अन्न का दाना दिखाया, परन्तु वह उसे ब कठिनाई से देख पाया। उसने उसको हाथों में लेकर टटोल

राजा ने उससे पूछा —

"वृद्ध पुरुष ! क्या तुम बता सकते हो कि ऐसा दाना कहाँ पर उपजा होगा ? क्या तुमने कभी ऐसा दाना खरीदा है, या अपने खेतो में बोया है ?"

बुड्ढा आदमी इतना बहरा था कि वह राजा की बात को सुन भी न पाया। बडी कठिनाई से बात उसकी समझ में आई।

अन्त मे उसने कहा—"नही, महाराज मैंने ऐसा दाना कभी अपने खेतो मे न बोया है और न काटा, न मैंने ऐसा दाना खरीदा ही है। लेकिन आप मेरे पिता से पूँछ ले। कदाचित् उन्होंने ऐसे दाने का हाल सुना हो।"

इस पर राजा ने उसके बाप को बुलवाया। लोग उसे खोज कर राजा के सामने लाये। वह लकडी के सहारे आया। राजा ने उसे वह दाना दिखाया। बुड्ढे किसान की आखें काम देती थीं। उसने दाने को अच्छी तरह देखा। राजा ने तब उससे सवाल किया —

"हे वृद्ध ! क्या तुम बता सकते हो कि ऐसा दाना कहाँ पर उपजा होगा ? क्या ऐसा दाना तुमने कभी खरीदा या बोया है ?"

यद्यपि बुड्ढा कुछ ऊँचा सुनता था, तथापि अपने पुत्र की अपेक्षा सहज में सुन सका। उसने कहा —

"नहीं, महाराज। मैंने ऐसा दाना कभी अपने खेतों से न बोया और न काटा है, रही खरीदने की बात, सो मैंने कभी कुछ खरीदा

ही नहीं, क्योंकि मेरे समय में रुप्या पैसा नहीं चलता था। जब किसी को किसी वस्तु की आवश्यकता होती, तो लोग उसे आपस में बाँट लिया करते थे। मैं नहीं कह सकता कि यह दाना कहाँ उगा। हमारे समय का दाना आजकल के दाने से बड़ा होता था और उसमें माल भी अधिक बैठता था, लेकिन ऐसा दाना मैंने कभी नहीं देखा है। हाँ, मैंने अपने पिता से सुना है कि उनके समय में अनाज और भी बडा होता था और उसमे आटा अधिक निकलता था। आप उनसे पूछ देखें तो अच्छी बात है, शायद उनसे और हाल मालूम हो सके।

इस पर राजा ने इस बूढे मनुष्य के पिता को भी बुलवाया और लोग उसे भी बुलाकर राजा के सामने लाये। वह बिना किसी लकडी की सहायता के अपने ही बल पर, सहज मे राजा के समुख आगया। उसकी आखों मे ज्योति थी और वह कान से सुन सकता था। उसका उच्चारण भी स्पष्ट था। राजा ने उसे अन्न का दाना दिखाया। वयोवृद्ध पितामह ने उसे देखा, और अपने हाथोमे रखकर उसे उलटा पलटा।

उसने कहा—"आज बहुत दिनो बाद मैंने ऐसा सुन्दर दाना देखा है।" यह कह कर उसने दाने का एक टुकडा काट कर रक्खा।

वह फिर बोला—"हाँ ठीक वैसा ही है।"

राजा ने कहा—"पितामह, मुझे बताओ कि यह अन्न कब और कहा उपजा ? क्या तुमने ऐसा दाना कभी खरीदा, या अपने खेतो मे बोया है ?"

इस पर वृद्ध ने उत्तर दिया—"महाराज, ऐसा अन्न मेरे समय मे सभी जगह उपजता था। अपने बचपन मे ऐसे ही अन्न को खाकर पला हूँ। यही और लोग भी खाते थे। ऐसा ही अन्न हम बोते और काटते थे।"

तब राजा ने कहा—"पितामह, मुझे बताओ कि तुम अन्न खरीदते भी थे कि सब आप ही उपजाते थे ?"

इस पर वृद्ध मुसकराया।

उसने उत्तर दिया—"महाराज, मेरे समय मे अन्न बेचने और खरीदने का पाप किसी के मन मे भी नहीं आया था। मुद्रा से तो हम परिचित ही न थे। प्रत्येक मनुष्य अपने लिये बाहुल्य से अन्न उपजा लेता था।"

राजा ने कहा—"अच्छा पितामह, यह बताओ कि वह तुम्हारा कौनसा खेत है जिसमें तुम ऐसा अन्न उपजाते थे ?"

इस पर वृद्ध पितामह ने उत्तर दिया—"ईश्वर की धरती ही हमारे लिये खेत का काम देती थी। उसे कोई अपनी नहीं कहता था। जहाँ पर हल चलाया खेत बन गया। धरती बिना मूल्य थी, उस पर दाम न चढते थे और कर न लगता था। अपने

परिश्रम और मजदूरी को ही लोग अपना कहते थे। महाराज उस समय की व्यवस्था ही और थी।"

राजा ने कहा—"पितामह, मेरी दो बातो का और जवाब दे दो। पहिली बात तो यह कि धरती उस समय इतना बडा अन्न का दाना क्यों पैदा करती थी और अब भी वैसा अन्य क्यों नहीं उपजाती ? दूसरी बात यह है कि तुम्हारा पोता दो लकडियों के सहारे से चलता है, तुम्हारा बेटा एक लकडी के सहारे से, तुम बिना किसी सहारे के कैसे चलते हो ? तुम्हारी आँखों की ज्योति बनी हुई है, तुम्हारे दात मजबूत हैं, तुम्हारी बोली स्पष्ट है और कानों को भली जान पडती है। इन सब का क्या कारण है ?"

वृद्ध पुरूप ने उत्तर दिया —

"इन सब का कारण यही है कि मनुष्य ने अपने आप परिश्रम करना छोड दिया है। दूसरों के परिश्रम के सहारे रहना सीख लिया है। पुराने समय में लोग ईश्वर के नियमों का पालन करते थे, जो वह उत्पन्न करते थे उससे सन्तुष्ट रहते थे और दूसरो की उत्पन्न की हुई वस्तुओं के लिए लालच नहीं करते थे।

तीन प्रश्न

एक बार, एक राजा के मन में विचार उठा कि अगर मैं यह जान जाऊँ कि प्रत्येक कार्य के करने के लिये कौन सा उचित समय है और लोगोंकी बातो पर ध्यान देना और किनसे दूर रहना उचित है और इसके अतिरिक्त यह भी जान लूँ कि कौनसा कार्य सबसे आवश्यक है तो फिर मुझे किसी कार्य में असफल होने की आशका न रह जाय।

यह विचार उठते ही उसने अपने राज्य भर में ढिंढोरा पिटवा दिया कि जो आदमी मुझे इस बात की शिक्षा देगा कि प्रत्येक कार्य करने के लिये सबसे उचित समय कौन है और यह बतावेगा कि किन लोगों का साथ करना चाहिये और कौनसा कार्य सबसे अधिक आवश्यक है, उसे मैं बहुत बड़ा पुरस्कार दूगा।

यह समाचार पाकर राजा के पास पण्डित लोग आने लगे, परन्तु सभी ने उस के प्रश्नों के भिन्न-भिन्न उत्तर दिये।

पहिले प्रश्न के उत्तर में, किसी ने कहा कि प्रत्येक कार्य के लिये उचित समय जानने के लिये मनुष्य को अपने दिवसों, मासों, और वर्षों का कार्यक्रम निर्धारित कर लेना चाहिये और ठीक उसी के अनुसार समय व्यय करना चाहिये। इसी ढग से प्रत्येक कार्य अपने ठीक समय पर हो सकता है। औरोंने

कहा कि प्रत्येक कार्य के लिये पहिले ही से समय निर्धारित कर लेना असम्भव है, मनुष्य को चाहिये कि अनावश्यक कार्यों में समय न लगाकर अपने नित्य के कार्यों की ओर ध्यान दे और उसी में जो आवश्यक समझे करे। औरों ने यह बताया कि चाहे जितना ध्यान दे, राजा अकेला उचित रूप से प्रत्येक कार्य के लिये समय नहीं निश्चित कर सकता। उसे पण्डितों की एक समिति बनानी चाहिये और यह समिति उसे प्रत्येक कार्य के लिये समय निश्चित करने में सहायक होगी। परन्तु कुछ अन्य लोगों ने यह भी बताया कि बहुत से ऐसे कार्य हैं जिन पर समिति की सम्मति की प्रतीक्षा नहीं की जा सकती, उनके विषय में तुरन्त निर्णय कर लेना आवश्यक है और यह निर्णय करने के लिये, भविष्य का ज्ञान होने की जरूरत है और भविष्य का ज्ञान केवल तान्त्रिकों को होता है अतएव प्रत्येक कार्य के लिये उचित समय जानने के लिये तान्त्रिकों की सम्मति लेनी चाहिये।

इसी प्रकार दूसरे प्रश्न के उत्तर भी भिन्न-भिन्न थे। कुछ लोगों ने बताया कि राजा को सबसे अधिक मन्त्रियों की आवश्यकता है। कुछ ने पुरोहितों की, कुछ ने वैद्यों की और कुछ ने योद्धाओं की आवश्यकता बतायी।

तीसरे प्रश्न, सबसे आवश्यक कर्तव्य के विषय में कुछ लोगों ने कहा कि 'विज्ञान' सर्वोच्च विषय है, कुछ लोगों ने कहा—'युद्ध कौशल,' कुछ लोगों ने कहा—'उपासना'।

सभी उत्तर भिन्न-भिन्न थे। अतएव राजा ने किसी को भी स्वीकार न किया और न किसी को पुरस्कार ही दिया। परन्तु इन प्रश्नो के यथार्थ उत्तर पानेकी अभिलाषा उसे बनी रही इससे राजाने एक ऐसे साधु की सम्मति लेना निश्चय किया जो अपने ज्ञान के लिये बहुत दूर-दूर तक विख्यात था।

साधु एक जगल मे रहता था, यह जगल वह कभी छोडकर बाहर न जाता और केवल साधारण लोगो से भेंट करता था। इसलिये राजा ने सादे वस्त्र पहने और साधु की कन्दरा से दूर ही वह अपने घोडों से उतर गया और अपने शरीर रक्षकको पीछे छोड कर अकेला साधु के पास गया।

जिस समय राजा वहा पहुँचा, साधु अपनी कुटी के सामने धरती गोड रहा था। साधु ने राजा को देखकर उसका स्वागत किया और अपने काम मे लगा रहा। साधु दुर्बल और कमजोर था। अपनी कुदाली से थोडी-थोड़ी धरती खोदकर वह दम ले लिया करता था।

राजा उसके निकट जा कर बोला—"ज्ञानी साधु, मैं तुम्हारे पास तीन प्रश्नों के उत्तर पाने की आशा से आया हूँ। मैं किस प्रकार से उचित कार्य उचित समय पर कर सकता हूँ? किस प्रकार के मनुष्यों की मुझे सब से अधिक आवश्यकता है, और इसलिये औरों की अपेक्षा मैं किन पर अधिक ध्यान दू? और

कौन-कौन ऐसे बड़े आवश्यक कार्य हैं जिन पर मैं सब से पहिले ध्यान दूं।"

साधु ने राजा की बातें सुनीं परन्तु उनका कुछ उत्तर नहीं दिया। उसने अपने हाथ से पसीना पोंछा और गोड़ना फिरसे आरम्भ कर दिया।

राजा ने कहा—"तुम थक गये हो, लाओ मुझे कुदाली दे दो। थोड़ी देर मैं तुम्हारा काम कर दूं।"

साधु ने कहा—"धन्यवाद है।" यह कह कर उसने। कुदाली राजा को दे दी और जमीन पर बैठ गया।

दो क्यारियां गोड़ चुकने के बाद राजा ने हाथ रोका और अपने प्रश्नों को दुहराया। साधु ने फिर भी कुछ उत्तर नहीं दिया। उठकर उसने कुदाली के लिये हाथ बढ़ाया और कहा—"अब तुम दम ले लो। लाओ मैं भी जरा सी मिहनत कर लूं।"

परन्तु राजा ने कुदाली न लौटायी और जमीन गोड़ता रहा। एक घंटा बीता दो घंटे बीते। सूर्य वृक्षों के पीछे डूबने लगा, अन्त में राजा ने कुदाली को धरती मे मार कर कहा—

"हे ज्ञानी पुरुष, मैं अपने प्रश्नोंका उत्तर पानेके लिये तुम्हारे पास आया था। यदि तुम उत्तर नहीं देना चाहते हो तो वैसा कह दो मैं घर वापस जाऊं।"

साधु ने कहा—"देखो कोई दौड़ा हुआ यहां आ रहा है, इसे देखें।"

राजा ने घूमकर देखा कि एक दढियल आदमी जगल से दौडता हुआ निकला। वह मनुष्य अपने हाथों से अपना पेट दवाये हुए था और उसके हाथों के नीचे से रुधिर वह रहा था। जब वह राजा के पास पहुँचा तो धीमे अस्फुट शब्दों में कुछ कहता हुआ मूर्छित होकर गिर पडा। राजा और साधुने मिलकर उसके कपडे खोले। उसके पेट में एक बड़ा घाव था। राजा ने उसे अच्छी तरह धोया और अपने रुमाल तथा साधु के तौलिये से उसकी पट्टी बाँधी। परन्तु खून न रुका। राजा ने बार बार गरम खून में भींगी हुई पट्टी को खोलकर, घाव धोकर, फिर से पट्टी बाधी। अन्त मे रुधिर का जाना बन्द हुआ, उस मनुष्य को कुछ चेत हुआ। तब उसने पीने के लिए कुछ माँगा। राजा ने उसे ताजा पानी लाकर पिलाया। इस बीच मे सूर्यास्त हो चुका था और ठडक हो आई थी। अतएव साधु की सहायता से राजा घायल आदमी को कुटी के भीतर ले गया और वहाँ उसे बिस्तर पर लिटा दिया। बिस्तर पर लेटने के बाद उस मनुष्य ने अपनी आँखें बन्द कर लीं और चुपचाप पडा रहा। परन्तु राजा भी पैदल चलने के कारण और परिश्रम करने के कारण, इतना थक गया था कि वह भी दर्वाजे के सहारे लेटा और सो गया। गहरी नींद लग गयी। गर्मी की छोटी रात शीघ्र ही बीत गयी, तब वह उठा। जब वह सवेरे उठा तो कुछ देर तक उसे यही समझ में न आया कि मैं कहाँ हूँ। थोडी देर

बाद उसे उस अपरिचित दढ़ियल व्यक्ति का हाल भी मालूम हुआ जो विस्तर पर लेटा हुआ वडी एकाग्रता से राजा की ओर दृष्टि लगाये हुए था।

जब दाढ़ीवाले पुरुष ने देखा कि राजा जगा हुआ है और मेरी ओर देख रहा है तो उसने दुर्बल स्वर में कहा—"मुझे क्षमा करो।"

राजा ने कहा—"मैं तुम्हे जानता भी नहीं हूँ। फिर तुमने मेरा कोई अपराध नहीं किया है जिसके लिये मैं तुम्हें क्षमा करूँ।"

"तुम मुझे नहीं जानते हो, लेकिन मैं तुम्हे जानता हूँ। मैं तुम्हारा वह शत्रु हूँ जिसने तुम से वदला लेने की प्रतिज्ञा की थी। कारण यह कि तुमने मेरे भाई का वध किया और उसकी जायदाद अपहृत कर ली। मुझे मालूम हुआ कि तुम साधु के पास अकेले गये हो और मैंने यह निश्चय किया कि जब लौटोगे तब मैं तुम्हारी हत्या करूँगा। परन्तु दिन बीत गया और तुम लौटे नहीं। इसलिये मैं तुम्हे ढूँढने के लिये अपने गुप्त स्थान से निकला। तुम्हारे शरीर रक्षकों का सामना हो गया और उन्होंने मुझे पहचान कर घायल किया। मैं उनसे वचकर भागा अवश्य, लेकिन यदि तुमने मेरे घाव की पट्टी न की होती तो रुधिर निकलने के कारण मैं अवश्य मर जाता। मैंने तुम्हें मारना चाहा था, लेकिन तुमने मेरी जान वचायी। अब यदि मैं जिऊँ और तुम्हारी

ऐसी इच्छा हो तो मैं तुम्हारा सब से सच्चा गुलाम होकर रहूँगा और अपने पुत्रो को भी इसी वात की आज्ञा दूँगा। मुझे क्षमा करो।"

अपने शत्रु से इस प्रकार सहज मे सुलह हो जाने से तथा मित्र लाभ से, राजा को वडी प्रसन्नता हुई। राजा ने उसे क्षमा कर दिया और कहा कि अपने नौकरों को तथा वैद्य को तुम्हारी सुश्रूषा के लिए भेजूँगा। राजा ने उसकी जायदाद लौटा देने का भी वचन दिया।

इस प्रकार उस घायल व्यक्ति से विदा होकर राजा बाहर आया और साधु को देखने लगा। लौटने से पूर्व, वह एक बार फिर अपने प्रश्नों के उत्तर के लिये साधु से प्रार्थना करना चाहता था। साधु वाहर घुटनों के वल खडा हुआ पिछले दिन गोडी हुई क्यारियोमें बीज वो रहा था।

राजा उसके निकट जाकर बोला—

"हे ज्ञानी पुरुष, अपने प्रश्नों के उत्तर के लिये, मैं तुमसे अन्तिम वार प्रार्थना करता हूँ।"

अपने दुवले पैरो को उसी भाति टेके हुए ऊपर सर उठाक राजा को खड़े देखकर साधु ने कहा—"तुम्हे उत्तर मि चुका है?"

राजा ने पूछा—"क्या उत्तर मिला? तुम्हारा क तात्पर्य है?"

साधु ने कहा—"तुमने नहीं समझा ? मेरी दुर्बलता पर यदि तुम कल तरस न खाते और मेरी क्यारियाँ खोदे बिना लौट जाते तो यह मनुष्य तुम पर आक्रमण करता और तुम उस समय पछताते कि मैं साधु के पास क्यों न ठहर गया। तुम्हारा सबसे मूल्यवान् समय वह था जब कि तुम धरती खोद रहे थे। मैं सब से आवश्यक व्यक्ति था, मेरा उपकार करना तुम्हारा सब से परम कर्तव्य था। उसके बाद जब वह आदमी हम लोगों की ओर दौड़ा हुआ आया तब सब से मूल्यवान् समय तुम्हारे लिये वह था जब तुम उसकी सुश्रूषा कर रहे थे, क्योंकि यदि तुमने उसकी पट्टी न की होती तो तुमसे मैत्री भाव किये बिना ही वह मर जाता। वही तुम्हारे लिये परमावश्यक व्यक्ति था और उसके लिये जो कुछ तुमने किया वही तुम्हारा परम कर्तव्य था। इसलिये यह ध्यान रखो कि वर्तमान समय ही सब से आवश्यक समय है। यह परमावश्यक इसलिये है कि इसी समय पर तुम्हें अधिकार है। परमावश्यक व्यक्ति वही है जिसके साथ तुम हो—कोई नहीं जानता कि किसी दूसरे से तुम्हारी भेंट हो या न हो और उसका उपकार करना ही तुम्हारा परमावश्यक कर्तव्य है क्योंकि इसी निमित्त मनुष्य संसार में जन्म लेता है।"

शैतान का बच्चा और रोटी का टुकड़ा



एक गरीब किसान एक दिन सवेरे हल जोतने के लिये चला, नाश्ता करने के लिये उसने अपने साथ रोटी का एक टुकड़ा ले लिया। खेत में पहुँच कर किसान ने अपना हल ठीक किया, रोटी को अपने कोट में लपेट कर एक झाड़ी के नीचे रख दिया, और काम में लग गया। कुछ देर बाद जब उसका घोड़ा थक गया और उसे आप भी भूख लगी तो उसने हल खड़ा कर दिया, घोड़े को खोलकर चरने के लिये छोड़ दिया और कोट में रक्खे हुए नाश्ते को लेने चला।

किसान ने अपना कोट उठाया, लेकिन रोटी गायब थी। उसने इधर-उधर चारों ओर देखा, कोट उलट कर झाड़ा, लेकिन रोटी का पता न था। मामला किसान की समझ में न आया। उसने सोचा—"बड़े अचम्भे की बात है। यहाँ तो कोई दिखाई भी नहीं पड़ा। फिर यह रोटी गई तो कहा गई।"

बात यह थी कि जिस समय किसान हल जोत रहा था, वह रोटी शैतान के बच्चे ने चुरा ली थी। वह झाड़ी के पीछे छिपा बैठा था। इस बात की प्रतीक्षा कर रहा था कि [illegible] गालियां दे और शैतान का नाम मुंह से निकले [illegible]

किसान को नाश्ता गायब हो जाने का रज था। लेकिन उसने कहा—"अब हो ही क्या सकता है। मैं भूख के मारे कुछ मर तो जाऊगा नहीं। आखिर किसी भूखे ने ही रोटी ली होगी। ईश्वर उसका भला करे।"

यह कह कर वह कुएँ पर गया, वहा पानी पीकर कुछ देर दम लिया। इसके बाद अपने घोडे को पकड कर उसने फिर हल में लगाया और खेत जोतने लग गया।

किसान को पाप की ओर रत करने मे जब शैतान का बच्चा असफल हुआ तो वह बहुत झेंपा। उसने जाकर सारा हाल अपने स्वामी शैतान से कहा सुनाया।

जिस प्रकार उसने रोटी का टुकडा चुराया था, जिस प्रकार किसान ने गाली देने की जगह 'ईश्वर उसका भला करे' कहा था— यह सब वृत्तान्त शैतान के बच्चे ने अपने स्वामी से कहा। शैतान बहुत बिगडा। बोला—"अगर उस मनुष्य पर तुम्हारा कोई वश नहीं चला तो यह तुम्हारा ही दोष है। तुम अपना काम नहीं जानते। जो किसान लोग और उनकी स्त्रिया ऐसी ही वृत्ति धारण कर लें तो फिर हम लोगो का काम सध चुका। देखो चुप होकर बैठ रहने की बात नहीं है। शीघ्र ही जाओ और हालत सुधारो। अगर आज से तीन साल के भीतर तुम उस किसान को अच्छी तरह वश में न कर लोगे तो मैं तुम्हे दण्ड दूँगा।"

शैतान का बच्चा डरा। वह फिर धरती पर आया। और अपनी त्रुटि को दूर करने का उपाय सोचने लगा। उसे बहुत विचार करने के अनन्तर यह मार्ग ठीक जान पड़ा। इसी के अनुसार उसने कार्य-क्रम निश्चित किया।

शैतान के बच्चे ने मजदूर का भेष बनाया और जाकर उस गरीब किसान के यहां नौकरी कर ली।

पहिले वर्ष तो उसने किसान को नीची भूमि में अन्न बोने की सलाह दी। किसान ने उसकी सलाह मान कर नीची भूमि में अन्न बोया। उस साल बहुत सूखा पड़ा और लोगों की फस्लें सूर्य की तपन से जल गईं। लेकिन इस गरीब किसान की फ़स्ल बहुत अच्छी हुई। उसमें घनी, लम्बी और पूरी बालें आईं। साल भर के खर्च से कहीं अधिक पैदावार हुई।

दूसरे वर्ष, शैतान के बच्चे ने किसान को यह सलाह दी कि अन्न पहाड़ी पर बोओ। इस वर्ष बड़ी वृष्टि हुई और लोगों की फस्लें पानी की बहुतायत से गल गईं, उनकी बालें मारी गईं लेकिन इस किसान की फ़स्ल भरी पूरी हुई। उसने पहिले साल से भी अधिक अन्न पाया। उसे इतना अन्न मिला कि उसकी समझ में न आया कि इतने अन्न का क्या करूँ।

इसके बाद शैतान के बच्चे ने किसान को अन्न से मद खींचना सिखा दिया। किसान बहुत कड़ी मद खींचने लगा। मद खींचकर आप भी पीता और यार-दोस्तों को भी पिलाता।

इसके बाद शैतान का बच्चा अपने स्वामी के पास पहुँचा और वहा उसने अपनी करतूत का बहुत गर्व पूर्वक वर्णन किया। शैतान ने कहा—'चलो, मैं आप आकर सब हाल देखूगा।'

शैतान किसान के घर पर आया। उसने देखा कि किसान ने अपने अमीर पडोसियों को निमन्त्रण दे रक्खा है। वह मेहमानो को मद पिलाने मे लगा हुआ है। उसकी स्त्री भी अभ्यागतों को मद पिला रही थी। असयोग से वह मेज से टकरा गई उसके हाथ से मद का भरा हुआ प्याला छूट कर धरती पर गिर कर टूट गया।

किसान क्रोध में आकर स्त्री को डाटने लगा। "हरामजादी तूने यह क्या किया? लूली कहीं की! इसे तलैया का पानी समझ रक्खा है। ऐसी अच्छी वस्तु को जमीन पर ढाल दिया।"

शैतान के बच्चे ने अपने स्वामी शैतान से, हाथ की कुहनी से ठेलते—हुये कहा, "देखिये यह वही मनुष्य है जिसने रोटी के गायब होने की कुछ परवाह न की थी—उस समय जब कि उसके पास केवल एक ही टुकडा था।"

किसान अपनी स्त्री को झिडकता रहा और आप लोगों को मद पिलाने लगा। इसी बीच में एक गरीब किसान, थका-माँदा बिना बुलाये वहा आ पहुँचा। लोगों को मद पीते देख उन्हें वदगी करके वहीं बैठ गया। दिन भर मिहनत करके वह थक गया था, उसकी भी दो घूट मद पीने की इच्छा हुई। वह

बेचारा बडी देर तक आसरा देखता रहा। उसके मुँह में पानी आ रहा था। लेकिन किसान ने मद देना दूर रहा, भुनभुना कर कहा,—"यहा ऐरे-गैरों को मद नहीं पिलाया जाता।"

शैतान यह सुनकर बहुत प्रसन्न हुआ लेकिन उसके बच्चे ने मुह चटकार के कहा,—"अभी जरा ठहरिये। आगे क्या होता है वह भी तो देख लीजिए।"

मेहमानों ने मद पी, मेजवान ने भी प्याले साफ किये। फिर क्या था, गप्पें उडने लगीं।

शैतान इन लोगों की बातें सुनता रहा और अपने बच्चे की पीठ ठोंकता रहा। उसने कहा,—"मद पीकर जब यह लोग इतने मक्कार बन रहे हैं, एक दूसरे को धोखा दे रहे हैं तो ये लोग शीघ्र ही हमारे हाथों में आ जायँगे।"

शैतान के बच्चे ने कहा—"घबडाइये न, देखते जाइये। अभी एक एक प्याला और पहुँचने दीजिए। यही लोग जो लोमडियों की तरह दुम हिला रहे हैं और एक-दूसरे को धोखा दे रहे है—यहीं लोग जरा देर मे जगली भेडियो की तरह नजर आवेंगे।"

एक एक प्याला और पीना था कि सारी मडली और भी बहकने लगी। शोरगुल मचा, गदी गदी बातें कही जाने लगीं। लच्छेदार बातों की जगह गाली-गलौज मच गई। थोडी देर में हाथा पाई की भी नौबत आई। मुक्के चलने लगे। घर-बाहर वाले सभी पिटे।

शैतान और भी खुश हुआ। उसने कहा—"खूब ही रही।" लेकिन शैतान के बच्चे ने कहा—"जरा और ठहर जाइये। सब से मजे की बात तो आगे आने को है। तीसरा प्याला पी लेने दीजिए, ये लोग जो भेडियों की तरह चीख रहे हैं अभी सुअर बने जाते हैं।"

किसानों ने एक एक प्याला और उडाया। फिर तो उनमें और जानवरो मे कुछ भेद ही न रह गया। बिना मतलब चीखने चिल्लाने लगे। कोई दूसरे की बात सुनता कब था ?

,इसके बाद महफिल बर्खास्त हुई। एक एक, दो-दो, तीन-तीन करके सब लडखडाते हुये गली तक पहुँचे। मालिक मकान मेहमानों को पहुँचाने गया। लेकिन वहा मोरी में मुह के बल गिर गया और सिर से पैर तक लस्त पस्त होकर सुअर की तरह चिल्लाता हुआ वहीं पडा रहा।

शैतान यह देखकर और भी प्रसन्न हुआ। बोला—"यह चाल तुम्हारी अव्वल दर्जे की रही। रोटी के बारे मे जो भूल हुई थी उसका पूरा प्रतिकार हो गया। लेकिन मुझे अब यह बताओ कि यह मद बनती कैसे है ? इसमें तुमने पहिले लोमडीका खून जरूर मिलाया होगा। इसीसे किसान लोमडी की भाँति मक्कार हो गये थे। फिर, मैं अनुमान करता हूँ कि तुम ने भेड़िये का भी खून मिलाया होगा, इसी से भेड़िये की तरह खूँख्वार हो गये

थे और अन्त में उनका आचरण सुअर की तरह कराने के लिये तुमने सुअर का खून भी मिलाया होगा।"

शैतान के बच्चे ने कहा—"मैंने यह सब कुछ भी नहीं किया। मैंने केवल यह किया कि किसान के पास आवश्यकता से अधिक अन्न हो जाय। मनुष्य में जानवरों का रक्त आप ही मौजूद रहता है। जब तक उसे भोजन के लिये केवल पर्याप्त अन्न मिलता है तब तक वह सीमा के भीतर रहता है। जब ऐसी अवस्था थी तब तो किसान ने एकमात्र रोटी के टुकडे के चले जाने की परवाह न की। जब उसके पास आवश्यकता से अधिक अन्न हो गया तो उसे चैन उड़ाने की सूझी। मैंने उसे मस्ती का एक मार्ग—मद पान—दिखा दिया। जब उसने ईश्वर की सुन्दर देन का यह उपयोग किया तो लोमडी, भेडिया, सुअर सभी के खून उसमें दौड आये। यदि मद पीने की ही आदत बनी रही तो भी वह सदा जानवर बना रहेगा।"

शैतान ने अपने बच्चे की प्रशंसा की, उसकी पहिली भूल को माफ करके एक प्रतिष्ठित पद प्रदान किया।

मूर्ख ईवान

किसी समय एक देश के किसी प्रांत में एक धनी किसान रहा करता था। उसके तीन बेटे थे। साइमन सैनिक था, टरास साहूकार और ईवान मूर्ख था। इनके अतिरिक्त उसके मार्था नाम की एक अविवाहिता, गूंगी-बहरी पुत्री भी थी। सैनिक साइमन तो राजा की सेना में जाकर भर्ती हो गया, साहूकार टरास एक नगर में जाकर व्यापार करने लगा, मूर्ख ईवान बहिन सहित घर पर रह गया और खेती-बारी में लगा रहा।

सैनिक साइमन ने एक उच्च पद और एक इलाका प्राप्त किया और एक अमीर की पुत्री से विवाह किया। उसे भारी वेतन मिलता था, इलाक़ा भी उसका बडा था, तो भी उसे ख़र्च को पूरा न पडता था। जो कुछ वह कमाता उसकी स्त्री ख़र्च में उडा देती, उन लोगो के पास रुपया बच न पाता।

इसलिये सैनिक साइमन अपने इलाक़े की आय एकत्रित करने गया। परन्तु उसके कारिन्दे ने कहा—"आय कहाँ से हो? न हमारे पास जानवर हैं, न औजार, न हल, न हेंगा, न घोडे। हमे पहले यह सब वस्तुए मिले तो आमदनी हो।"

इस पर सैनिक साइमन अपने पिता के पास जाकर बोला—"पिता, तुम अमीर हो, लेकिन तुमने मुझे कुछ नहीं दिया।

अपने धन का तिहाई भाग मुझे बॉट दो। मैं भी अपने इलाके की उन्नति करूँ।"

परन्तु उस वृद्ध ने कहा—"तुमने मेरे घर में क्या कमाई करके भेजा था जो मैं तुम्हें तिहाई बॉट दू ? यह तो ईवान और लडकी के प्रति वडे अन्याय की बात है।"

परन्तु साइमन ने कहा—"वह मूर्ख है, लडकी कॉरी रह गई हैं, फिर गूगी-बहरी भी है, सम्पत्ति लेकर वे लोग क्या करेंगे ?"

वृद्ध ने कहा—"ईवान से पूछ देखे।"

ईवान ने कहा—"जो वह चाहें, ले लें।"

अतएव सैनिक साइमन ने पिता की सपत्ति मे से अपना हिस्सा ले लिया और उसे अपने इलाके पर पहुँचा दिया और फिर राजा की नौकरी पर चला गया।

टरास साहूकार ने भी वहुत धन कमाया, एक सौदागर के घर में विवाह किया, लेकिन धन की लालसा बनी रही। इससे वह भी अपने पिता के पास आकर कहने लगा कि 'मेरा हिस्सा बॉट दो।'

परन्तु वह वृद्ध टरास को भी हिस्सा देने पर राजी न हुआ। कहा—"तुमने हमारे यहाँ क्या लाकर दिया था ? घर में जो कुछ है ईवान की कमाई है, हम उसके साथ और अपनी कन्या के साथ क्यों अन्याय करें ?"

परन्तु टरास ने कहा—"वह तो मूर्ख है। उसे किस वस्तु की आवश्यकता? विवाह वह कर नहीं सकता, उसके साथ विवाह करेगा कौन? और गूंगी लड़की को भी किसी वस्तु की आवश्यकता नहीं हो सकती।" फिर उसने कहा—"देखो, ईवान, मुझे आधा अन्न बाँट दो, लोहा-लगड़ मुझे चाहिये नहीं। और जानवरों में से मैं केवल वह भूरा घोड़ा लूँगा, वह तुम्हारे हलके काम का भी नहीं है।"

ईवान हँसा, बोला—"तुम्हें जो चाहिये, ले लो। मैं और के लिये प्रयत्न करूँगा।"

अतएव एक भाग टरास को भी मिला। अन्न तो उसने लाद कर शहर में भेज दिया। भूरा घोड़ा भी ले गया। ईवान के पास किसानी करने के लिये एक बुड्ढी घोड़ी बच रही। माता-पिता की सेवा का भार भी उसी पर था।

(२)

बुड्ढे शैतान को यह बात बहुत बुरी लगी कि तीनों भाइयों में राज़ी-राज़ी बँटवारा हो गया और सब शान्ति-पूर्वक जुदा हो गये। उसने अपने तीन दूतों को बुलाया।

कहा—"देखो, यह तीन भाई हैं। सैनिक साइमन, टरास साहूकार और मूर्ख ईवान। इन्हें आपस में झगड़ना चाहिये था, लेकिन यह सुलह से रहते हैं। आपस में हिलते-मिलते हैं। मूर्ख ईवान ने सब खेल बिगाड़ दिया। तुम तीनों जाओ और

इनके पीछे लगो और इन्हे ऐसी राह पर लाओ कि एक-दूसरे की आँखें निकाल-निकाल लें। बोलो, यह काम तुमसे हो सकेगा ?"

उन लोगों ने उत्तर दिया—"हाँ हो सकेगा।"

"अच्छा, अपना काम कैसे आरम्भ करोगे ?"

"क्यों, पहिले तो एक-एक का सत्यानाश करेगे। फिर जब सब रोटियो के मुहताज हो जायँगे तो उन्हें एक साथ कर देंगे। फिर तो वे आपस मे लडे बिना नही रह सकते।"

"बहुत ठीक! तुम लोग अपने हुनर मे पक्के हो! अच्छा, जाओ और जब तक उनका सिर से सिर न लड जाय, याद रक्खो लौटना मत, नहीं तो खाल सलामत न रहेगी।"

दूत लोग एक दलदल में पहुँचे और वहाँ पहुँच कर आपस में सलाह करने लगे कि कैसे कार्य आरम्भ किया जाय। पहिले तो सभी झगडते रहे, सभी चाहते थे कि हमे हल्का काम मिले। अन्त में इस बात की चिट्ठी डाली गई कि कौन दूत किस भाई के पीछे लगे और यह निश्चय पाया कि यदि किसी एक का काम पहिले समाप्त हो जाय तो वह आकर दूसरे की सहायता करे। चिट्ठी पडी, दूतों ने वहीं पर फिर मिलने का समय निश्चित किया और अपने-अपने काम पर गये।

निश्चित समय आया, दूत लोग अपने समझौते के अनुसार वहीं दलदल में फिर इकट्ठा हुये। हर एक अपना-अपना हाल सुनाने लगा। पहिला जो सैनिक साइमन के पीछे लगा था,

बोला—"हमारा काम तो खूब हो रहा है। साइमन कल अपने पिता के घर पहुँच जायगा।"

उसके साथियों ने पूछा—"भला, तुमने किया क्या ?"

उसने उत्तर दिया, "पहिले तो मैंने साइमन में ऐसा जोश भरा कि उसने राजा से कहा कि मैं सारे ससार को जीत लूगा। राजा ने उसे सेनापति बना दिया और हिन्दुस्तान के राजा से युद्ध करने के लिये भेज दिया। युद्ध के लिये सेनायें एकत्रित हुई। मैंने एक रात पहिले ही, साइमन की सेना में जितनी बारूद थी भिगो दी। उधर हिन्दुस्तान के राजा के लिये फूस के अगणित सिपाही पैदा कर दिये। जब साइमन के सैनिकों को चारो तरफ से घेरे हुये देखा तो वे डर गये। साइमन ने इनपर गोले चलाने की आज्ञा दी परन्तु सीलन के मारे तोप और बारूद छुटी ही नहीं। इस पर साइमन के सैनिक और भी डरे और भेड़ों की तरह भागने लगे। हिदुस्तान के राजा ने सब को मार डाला। साइमन बहुत अपमानित हुआ है, उसका इलाका छिन गया है, कल उसे सूली देने का दिन है। मुझे अब एक दिन का काम शेष रह गया है। उसे कैदखाने से भगा देना है जिसमें वह अपने घर जा सके। कल के बाद मुझे छुट्टी है, जो चाहे उसी की सहायता कर सकता हूँ।"

दूसरा दूत, जो टरास के पीछे पड़ा था, वह भी अपना हाल कहने लगा, बोला—"मुझे सहायता की आवश्यकता नहीं है।

मेरा काम ठीक चल रहा है। टरास अब एक सप्ताह से अधिक नहीं ठहर सकता। पहिले तो मैंने उसे लालची और मोटा बनाया, उसकी तृष्णा इतनी बढी कि जो वस्तु देखता उसी को खरीद लेने की इच्छा होती। ढेरों चीजें उसने खरीद डाली हैं और इसी में सब रुपया खर्च कर डाला है। अब उधार लेने लग गया है। कर्ज उसके गले का बोझ हो गया है और ऐसा है कि इससे अब वह मुक्त नहीं हो सकता। एकही सप्ताह मे, मियाद पूरी हो जायगी और मैं इसके पूर्व ही उसका सब माल-जथा सत्यनाश कर दूगा। वह कर्ज न दे पावेगा अन्त में वह भी बाप के घर पहुँचेगा।"

इसके बाद ईवान वाले दूत से सब हाल पूछा गया। उन्होंने कहा—"अब तुम भी कह डालो। कैसा समाचार है?"

उसने उत्तर दिया—"भाई, मेरा समाचार ठीक नहीं है। पहले तो मैंने उसकी मदिरा में थूक दिया जिससे उसका पेट दुखने लगा। इसके बाद मैं उसके खेत में गया और धरती को पीट-पीट कर पत्थर जैसी कडी कर दिया, जिसमें वह उसे जोत न पावे। मैंने समझा था कि वह इसमें हल न चलावेगा, परन्तु मूर्ख तो है ही, उसे भी जोतने लगा। पेट के दर्द के मारे कॉखता जाता था और हल जोतता जाता था। मैंने उसका हल तोड डाला, परन्तु वह घर गया दूसरा हल ले आया और फिर खेत जोतने लगा। अब की बार मैं धरती में समा गया और हल के

लोहे को पकड़ लिया। परन्तु पकड़ा न गया। उसने अपनी देह का सब बल लगा दिया, लोहा तेज था, मेरे हाथ भी कट गये। अब उसने सब खेत जोत डाला है। एक टुकड़ा बस बच रहा है। भाइयो, आओ मेरी सहायता करो नहीं तो इससे पार न पा सकेंगे और हमारी सब मेहनत अकारथ जायगी। अगर यह मूर्ख खेती में लगा रहा तो उसके भाइयो को भी कमी न रहेगी। यह दोनों को खिला कर खायगा।"

सैनिक साइमन के पीछे लगने वाले दूत ने अगले दिन से उसे सहायता देने का वचन दिया और सब फिर अपने-अपने काम पर गये।

(३)

एक टुकड़े को छोड़ कर सारा खेत तो ईवान जोत ही चुका था, उसने इसे भी समाप्त किया। उसके पेट मे दर्द होता रहा लेकिन वह अपने काम मे लगा रहा। उसने जोत की रस्सी ढीली की, हल फेरा, अपने काम मे लगा रहा। एक पटरी जोत कर उलटा आ रहा था। अचानक हल रुकने लगा, ऐसा जान पड़ा कि किसी जड़ में फँस गया है। बात यह थी कि उस दूत ने हल के लोहे मे टाँग फँसा दी थी और उसे रोके हुये था।

ईवान ने सोचा—"बड़े आश्चर्य की बात है, यहाँ तो जड़ भी नहीं थी यह जड़ कहाँ से आ गई।"

ईवान ने मिट्टी के नीचे हाथ डाल दिया। हाथ में कोई वस्तु मुलायम-सी जान पडी। उसने उसे पकड कर खींच लिया। जड़ ही की भाँति काली-काली वस्तु थी। परन्तु वह ऐंठती जा रही थी। अरे यह तो जीता-जागता शैतान का बच्चा है।

ईवान बोला—"धत्ते रे की !" यह कह कर वह उसे उठाकर हल पर दे मारनेवाला था, परन्तु दूत दात दिखाने लगा। बोला—"मुझे मारो मत, जो कहो मैं करने को तैयार हूँ।"

"तू क्या कर सकता है ?"

"जो आज्ञा दें।"

ईवान ने अपना सिर खुजलाया।

बोला—"मेरा पेट दुख रहा है, उसे अच्छा कर सकता है ?"

"क्यों नहीं ?"

"अच्छा तो, अच्छा कर।"

दूत मिट्टी के भीतर पञ्जो को डाल कर ढूँढने लगा। फिर उसने छोटे-छोटे जडों की एक गुत्थी ईवान को दी। कहा-

"इसमें से जो एक जड निकाल कर खा लेगा, उसके सब रोग दूर हो जायँगे।"

ईवान ने जडों को लेकर अलग किया और उनमे से एक खा गया उसके पेट का दर्द फौरन जाता रहा। दूत ने फिर प्रार्थना की—"कि मुझे जाने दो। मैं धरती में समा जाउगा। फिर कभी न आऊगा।"

ईवान बोला—"अच्छी बात है, जा, भगवान् तेरा भला करे।"

भगवान का नाम सुनते ही दूत धरती मे समा गया। पानी मे जैसे पत्थर का टुकड़ा फेको तो लोप हो जाता है, उसी तरह वह भी लोप हो गया। एक छेद धरती में बन गया।

ईवान ने जड़ी के शेष दो टुकड़े अपनी टोपी में रख लिये। और अपने काम में लगा रहा। जब बचा हुआ भाग भी जोत लिया, तो हल लेकर घर चला आया। घोड़े की जोत खोल कर उसे छोड़ दिया और अपनी झोपड़ी के भीतर गया। देखा कि बड़ा भाई सैनिक साइमन स्त्री सहित आया हुआ है और भोजन पर बैठा है। साइमन का इलाक़ा छिन गया था। स्वय किसी प्रकार जान कैदख़ाने से बचाकर भाग आया था और अब अपने बाप के घर मे रहने के लिये आया था।

साइमन ने ईवान को देखकर कहा,—"मैं तुम्हारे यहा रहने आया हूँ। जब तक दूसरी नौकरी नहीं लग जाती, मुझे और मेरी स्त्री को अपने ही यहा भोजन दो।"

ईवान ने कहा—"अच्छी बात है, हमारे यहाँ खुशी से रहो।"

परन्तु जब ईवान चौकी पर बैठने लगा, तो साइमन की स्त्री को उसके शरीर की गध अच्छी न लगी। अपने पति से बोली—"मैं इस गन्दे किसान के साथ बैठकर नहीं खा सकती।"

इसपर सैनिक साइमन ने कहा—"मेरी स्त्री कहती है कि तुम्हारे शरीर से दुर्गन्ध आती है। तुम बाहर बैठकर भोजन करो तो अच्छा है।"

ईवान ने कहा—"बहुत अच्छा, रात तो बाहर काटनी ही है, मुझे घोड़ी को चराने जाना है।"

ईवान ने कुछ रोटिया लेलीं। अपना कोट उठाया और घोडी लेकर खेत की ओर चल दिया।

(४)

उस रात अपना कार्य समाप्त करके, साइमन वाला दूत, जैसा निश्चय हुआ था, ईवान वाले दूत की सहायता करके, मूर्ख ईवान को परास्त करने के लिये आया। वह आकर खेत में ढूढता रहा। उसे अपने साथी का तो कोई पता न लगा। उसने धरती में वह छेद देखा।

उसने सोचा—"यह स्पष्ट है कि मेरे साथी पर कोई आपत्ति अवश्य पडी है। अब मुझे उसका स्थान लेना चाहिये। खेत तो जोता जा चुका है, अतएव इस मूर्ख का चर-भूमि में पीछा करना होगा।"

यह सोचकर दूत चरभूमि में पहुँचा। उसने ईवान की चर-भूमि को जल से सराबोर कर दिया। घास के ऊपर तमाम कीचड़ हो गई।

सवेरा होते ही ईवान चरागाह से घर लौटा, हँसिये को तेज किया, और घास काटने के लिये चला। घास काटना शुरू किया। दो ही एकबार हँसिया चलाई थी कि उसकी धार गोठिल पड़ गई। काटती ही न थी। उसे फिर से तेज करने की जरूरत थी। ईवान कुछ देर तक किसी प्रकार हँसिया चलाता रहा। अन्त में कहा—"ऐसे काम न चलेगा। घर ही पर जाना होगा। कोई औजार लाकर इसे तेज करूंगा, रोटी का एक टुकड़ा भी लेता आऊंगा। चाहे एक हफ्ता बीत जाय जब तक घास काट न डालूँगा छोड़ूंगा नहीं।"

दूत ने यह सुना तो मन में सोचा—"यह मूर्ख बड़ा बेढब है। इस प्रकार इससे पार न पाऊंगा। कोई दूसरा उपाय करना पड़ेगा।"

ईवान लौटा। उसने अपनी हँसिया तेज की और घास काटने लगा। दूत घास में छिप गया, हँसिये को पैर से दबाने लगा, उसकी नोक धरती में धँसने लगी। ईवान को बड़ी मिहनत करनी पड़ी, लेकिन उसने सारे चरागाह को साफ़ कर दिया। बस तराई में थोड़ी-सी घास काटने को बच रही। दूत तराई में भी पहुँचा। सोचा—"चाहे मेरे पंजे कट जायँ, अब इन्हें घास छीलने न दूंगा।"

ईवान तराई में भी पहुँचा। घास घनी न थी तो भी हँसिया उसमें फँस-फँस जाती। ईवान को क्रोध आया। वह पूरा

बलगलग कर हँसिया चलाने लगा। दूत को हारना पड़ा, वह हँसिये का साथ न दे सका, काम भी टेढा था, वह एक झाड़ी मे छिप रहा। ईवान हँसिया चलाता रहा। झाडी को पकडकर एक हाथ मारा तो दूत की आधी पूँछ कट गई। इसके बाद उसने घास काटना समाप्त किया और अपनी बहिन से उस पीटने के लिये कहकर आप चरी काटने चला। पूँछ कटा दूत उससे पहिले पहुँचा हुआ था। उसने चरी को ऐसा गुथ दिया कि हँसिया काम न दी। ईवान घर जाकर दूसरी हँसिया ले आया। इससे काटने लगा और सारी चरी काट डाली।

उसने कहा—"इसके बाद अब जई की पारी है।

पुँछकटा दूत सुन रहा था। उसने सोचा—"चरी में तो यह बाजी मार ले गया, देखता हूँ जई मे कैसे जीतता है। सबेरा होने दो।"

सबेरे दूत, भागा हुआ जई के खेत मे आया। लेकिन जई पहिले ही कट चुकी थी। जिसमें दाना अधिक न झरे, ईवान ने रात ही में जई काट डाली थी। दूत को क्रोध आ गया। बोला—

"इस मूर्ख ने मेरी सारी देह काट डाली, मुझे थका मारा। पूरी लड़ाई ठान ली है। दुष्ट सोता भी नहीं, कोई इसका साथ कैसे दे। इसके चारे की टाल मे जा बैठूगा। उसे सड़ा डालूँगा।"

यह सोचकर वह चरी की टाल मे घुस गया। डाँठो में वैठकर उसे सड़ाने लगा। उसमे आप भी गर्माने लगा और वहीं सो गया।

ईवान ने घोड़ी जोती। बहिन के साथ मिलकर चरी गाडी पर लादने आया। वह टाल के पास आया और चरी गाडी पर लादने लगा। उसने दो बोझ लादा। कँटियेसे और खींच रहा था, कँटिया दूत के पीठ में चुभ गई उसने कँटिया उठाई तो उसके दाँतो मे चिपटा हुआ, जीता-जागता, पुछकटा ऐंठता, बिलबिलाता, कूदने का प्रयत्न करता हुआ शैतान का बच्चा निकला।

"क्यों दुष्ट तू फिर आ गया ?"

दूत ने कहा मैं दूसरा हूँ। वह तो मेरा भाई था। मैं तुम्हारे भाई साइमन के पीछे लगा था।"

ईवान ने कहा—"खैर तू चाहे जो हो, तेरे भाग्य मे भी वही है।"

वह उसे गाड़ी पर उठाकर पटकने ही वाला था कि दूत चिल्ला उठा। "मुझे जाने दो, मैं तुम्हारा पीछा तो छोड़ ही दूगा, जो कहो वह भी करने को तैयार हूँ।"

"तू क्या कर सकता है ?"

"जिस चीज़ से कहो सैनिकों को तैयार कर दू।"

"परन्तु वह किस काम के ?"

"उनसे जो चाहो करा लो, जैसा कहोगे वैसा ही करेंगे।"

"वह गाना गा सकेंगे ?"

'हाँ कहोगे तो क्यों नहीं गावेंगे।"

"अच्छा तो थोड़े से सिपाही बनाओ।"

दूत ने कहा—"यह लो, चरी की एक आटी उठा लो, इसे जमीन पर पटको और बस यही कहो कि—

'आँटिया मेरा कहना मान,
जितनी सींके उतने ज्वान।'

बस इसमें जितनी सीकें हैं उतने सिपाही बन जायँगे।

ईवान ने एक आँटी उठाई और उसे जमीन पर पटका और जो दूत ने कहा था वही दुहराया। आँटी खुल गई। उसमें जितनी डाठें थी सब सिपाही बन गई। आगे तुडुही और ढोल बज रही थी और पीछे फौज की फौज थी।

ईवान हँसा। बोला—

"वाह वाह! क्या अच्छा तमाशा है। लडकिया इसे देखकर कितना खुश होगी।"

दूतने कहा—"अच्छा अब मुझे जाने दो।"

ईवान ने कहा—"न। अन्न पीटने पर जो खर बचेगा, उससे मैं सिपाही बनाऊगा। नहीं तो अच्छा भला अन्न व्यर्थ नाश होगा। यह बताओ कि यह सब कैसे फिर से आँटी बन जाय। मैं अन्न पीट लेना चाहता हूँ।"

दूत ने कहा—"कहो—

'देखो, मेरा कहना मान,
खर बन जाओ फिर से ज्वान।'

ईवान ने यह कहा। मोटरी फिर से बन गई।
फिर दूत प्रार्थना करने लगा—"अब मुझे जाने दो।"

"अच्छी बात है"। यह कह कर ईवान ने उसे गाड़ी पर दबाया और उसे हाथ से पकड़कर कँटिया खींच ली। कहा—"भगवान तेरा भला करे।" जैसे उसने भगवान का नाम सुना, दूत पृथ्वी में समा गया। जैसा पानी में पत्थर का ढेला लोप हो जाता है उसी प्रकार वह भी धरती में लोप हो गया। धरती में केवल एक छेद बना रह गया।

ईवान घर लौटा। वहाँ उसने अपने दूसरे भाई टरास को भी स्त्री सहित लौटा पाया। वह लोग भोजन करने बैठे थे।

टरास साहूकार ने अपना ऋण नहीं चुकाया था। लहने-वालों के डर से भाग कर बाप के घर आ गया था। ईवान को देखकर बोला—"देखो जब तक मुझे दूसरा धन्धा न मिल जाय मुझे और मेरी स्त्री को अपने यहाँ रक्खो।'

ईवान ने कहा—"बहुत अच्छा, चाहो तो यहीं रहो।"

ईवान ने अपना कोट उतारा और मेज के आगे बैठ गया, लेकिन साहूकार की स्त्री ने कहा—"इस गँवार के साथ मैं नहीं बैठ सकती। इसके पसीने से दुर्गन्धि आ रही है।"

इस पर टरास साहूकार ने कहा—"ईवान तुम्हारी देह से कडी दुर्गन्ध आती है। तुम वाहर जाकर भोजन करो।"

ईवान ने कहा—"वहुत अच्छा"। थोडी सी रोटी लेकर वह वाहर हो रहा। कहा—"मेरा तो घोडी चराने का समय आ ही गया है।"

(५)

उस रात टरास वाला दूत भी छुट्टी पाकर, जैसा निश्चय हुआ था, अपने साथियों की सहायता करके मूर्ख ईवान को परास्त करने के लिये आ गया। वह अनाज के खेत मे पहुँचा। अपने साथियो को वहुत ढूंढा लेकिन किसी का पता न चला। वस धरती मे एक छेद मिला। इसके वाद वह चर-भूमि मे गया। वहाँ तराई में उसे एक दूत की कटी हुई पूँछ मिली। चरी के खेत मे एक दूसरा छेद मिला।

उसने सोचा—"स्पष्ट है कि मेरे साथियों पर कोई आपत्ति आई है। अव मुझे उनका स्थान लेना पडा और इस मूर्ख का पीछा करना पडा।"

अतएव वह दूत ईवान को ढूँढने निकला। वह अनाज पीट चुका था और अव पेड काट रहा था। दोनों भाइयो के चले आने से ईवान के घर में जगह की तङ्गी हो गई थी। इससे दोनों भाइयों ने ईवान से कहा कि हम नया घर वनावेंगे लकडी काट लाओ।

दूत जंगल में दौड़ा गया और पेड़ की शाखाओं पर जा बैठा और ईवान के काम में विघ्न डालने लगा। ईवान ने एक पेड़ को जड़ से ऐसे ढंग से काटा कि वह साफ अलग गिर पड़े। लेकिन गिरते समय वह पलटा सा गया और दूसरे वृक्ष की डालों में जा फँसा। उसे टालने के लिये ईवान ने एक दूसरी लकड़ी काटी और बड़ी कठिनाई से उसे धरती पर उतारा। इसके बाद दूसरे वृक्ष के काटने मे लगा। फिर वही बात हुई। फिर बड़ी कठिनाई से उसने पेड़ अलग किया। तीसरा वृक्ष काटना आरम्भ किया, फिर वही बात हुई।

ईवान ने सोचा था कि पचास पेड़ तो काट लूँगा, परन्तु अभी दस पेड़ भी न काट पाया था कि सन्ध्या हो गई और वह भी थक गया। उसके मुह की भाप कुहरे की भांति जंगल में फैलने लगी। लेकिन वह अपने काम मे लगा रहा। उसने एक पेड़ की जड़ और काटी लेकिन उसकी कमर दुखने लगी और खड़ा न हुआ जाता था। कुल्हाड़ी को पेड़ में लगी छोड़ कर वह दम लेने लगा।

दूत ने देखा कि ईवान ने काम बन्द कर दिया। वह बहुत प्रसन्न हुआ। सोचा—"अब जाकर थका है। अब यह क्या और काटेगा? आओ हम भी जरा दम मार लें।"

दूत एक शाख पर बैठ कर मुँह बिचकाने लगा। ईवान थोड़ी ही देर में फिर उठा, अपनी कुल्हाड़ी को खींच कर वृक्ष

से निकाल लिया और वृक्ष पर दूसरी ओर से ऐसी जोर क
हाथ चलाया कि वृक्ष भहरा कर गिर पड़ा। दूत को इस बा
की कब आशा थी। उसे अपना पैर बचाने का भी मौक़ा
मिला। पेड़ जो गिरा तो उसी में उसका पञ्जा दब गया
ईवान डालों को काटने लगा। उसी समय देखा कि वह दू
पेड से लटका हुआ है। ईवान को बडा आश्चर्य हुआ।

बोला—"दुष्ट कहीं के! तू फिर आ गया।"

दूत ने कहा—"मैं वह नहीं, मैं तो दूसरा दूत हूँ। मैं तुम्ह
भाई टरास के पीछे लगा था।"

"जो भी हो, अब तुम्हारा समय आ गया है।" यह कह क
ईवान ने कुल्हाडी घुमाई और उसकी मूँठ से उसे कुचलने
वाला था कि दूत चिल्ला उठा और दया-प्रार्थना करने लगा। बोल
'मुझे मारो मत, तुम जो कहो मैं करने के लिये तैयार हूँ।"

"तू क्या कर सकता है?"

"जितनी कहो उतनी अशर्फियाँ तुम्हारे लिये बना दू।"

"अच्छा थोडी सी बना।"

दूत ने उसे अशर्फियाँ बनाने का ढंग बता दिया। कहा-
"इस ओक* की पत्तियाँ ले लो, इसे अपने हथेली में रखक
मींजो धरती पर सोना गिरेगा।"

---

* वृक्ष विशेष।

ईवान ने कुछ पत्तियों को लेकर हाथ में मींजा। हाथ से अशर्फियाँ झड़ने लगीं। उसने कहा—"छुट्टियों के दिन लड़कों के खेलने का बहुत अच्छा सामान है।"

दूत ने कहा—"अच्छा, अब मुझे जाने दो।"

"अच्छी बात है" यह कह कर ईवान ने डाल खींच ली और कहा "भाग जा ईश्वर तेरा भला करे।"

ईश्वर का नाम सुनते ही दूत धरती में ऐसा समा गया जैसे पानी में पत्थर का ढेला समा जाता है। पृथ्वी में केवल एक छेद बन गया।

(६)

अच्छा, भाइयों ने अपने अपने घर बनाये और अलग अलग रहने लगे। जब ईवान ने फसल काट ली तो मद खींचा और अपने भाइयों को त्योहार के दिन निमन्त्रण दिया। लेकिन भाई लोग न आये।

उन्होंने कहा—"किसानी त्योहारों की हमें परवाह नहीं है।"

अतएव ईवान ने किसानों और उनकी स्त्रियों की ही दावत की। आप भी इतनी मद पी गया कि कुछ नशा हो गया। गली में नाच हो रहा था। वहा चला आया और स्त्रियों से कहने लगा कि मेरे गुणानुवाद में एक गीत गाओ। फिर तुम्हें वह चीज दूंगा कि जो तुमने जिन्दगी भर न पाया हो।"

स्त्रियाँ हँसने लगी और उसका गुणानुवाद गाने लगीं। जब गा चुकीं तो बोलीं—"अब लाओ क्या देते थे।"

ईवान बोला—"मैं अभी लाता हूँ।"

यह कह कर उसने एक टोकरा उठाया और जगल की ओर दौडा गया। स्त्रियाँ हँसने लगीं, बोलीं—"मूर्ख तो है ही।" फिर आपस मे और और बाते करने लगीं।

परन्तु ईवान शीघ्र ही दौडा हुआ वापस आया। टोकरी में कुछ भारी वस्तु भरी थी। कहा—

"क्या मैं तुम्हे यह दे दू ?"

"हाँ, लाओ।"

ईवान ने एक मुट्ठी अशर्फी भर के स्त्रियो के आगे फेंक दी। किस भाँति वे उसे उठाने के लिये टूटीं—यह देखने की बात थी। मर्द लोग भी उसी पर टूटे और आपस में नोच-खसोट करने लगे एक बुढिया बेचारी कुचल कर मरते-मरते बच गई। ईवान हँसा।

कहा—"अरे मूर्खो, तुमने बुढिया दादी को क्यो पीस डाला ? शान्त रहो, देखो मैं और भी देता हूँ।" यह कहकर उसने उसके आगे और भी फेक दिया और भी भीड लग गई। ईवान ने सब अशर्फियाँ लुटा दीं। लोग "और और" चिल्लाते रहे लेकिन ईवान ने कहा—"अब मेरे पास अशर्फियाँ नहीं बची हैं। फिर

दूसरे दिन और अशर्फियां दूंगा। आओ अब हम सब नाचें, और तुम लोग गाने गाओ।'

स्त्रियाँ गाना गाने लगीं।

उसने कहा, "तुम्हारा गाना किसी काम का नहीं है।"

वे बोलीं, "इस से अच्छा गाना तुम्हे कहाँ नसीब होगा?"

"देखो अभी दिखाता हूँ।"

यह कह कर ईवान, दौड़ा दौड़ा खलिहान में गया। एक आँटी उठा लाया। पीट कर दाना निकाल लिया और आँटी को ठीक कर के उसी धरती पर पटक कर कहा, "अच्छा देखो।" फिर कहा—

"आँटिया, मेरा कहना मान,
जितनी सींकें उतने ज्वान।"

आँटी खुल गई और उसमे जितने खर थे सब सिपाही बन गये। तुड़्ही और ताशे बजने लगे। ईवान ने सिपाहियों से कहा— गाओ और बाजा बजाओ। ईवान उन्हें सड़क पर लेगया। देखने वाले बड़े आश्चर्य मे थे। सिपाही लोग गाते-बजाते थे। ईवान ने कहा कोई मेरे पीछे न आवे, यह कहकर वह सिपाहियों को खलियान में लेजाकर और उन्हे फिर गायब करके आँटी बना लिया और आँटी अपनी जगह पर फेंक दी।

इसके बाद वह फिर घर पर लौट आया और जाकर अस्तबल में सो रहा।

(७)

सैनिक साइमन ने यह बातें सुनीं तो दूसरे दिन सबेरे ही अपने भाई के पास आया।

बोला—"मुझे बताओ कि यह सब सिपाही तुम कहां से लाये और फिर सब के सब कहां चले गये।"

ईवान ने कहा—"तुमसे मतलब ?"

"मुझसे मतलब ? अरे, इन सिपाहियों द्वारा आदमी जो चाहे कर ले। आदमी चाहे तो एक राज्य जीत ले।"

ईवान को बडा आश्चर्य हुआ।

उसने कहा—"हाँ। ऐसा है तो तुमने मुझसे पहिले ही क्यों न कहा ? जितने कहो उतने सिपाही बना दूं। अब की बहिनने और हमने बहुत खर इकट्ठा किया है। यह अच्छा हुआ।"

ईवान अपने भाई को खलिहान में ले गया और कहा—"यदि मैं तुम्हे कुछ सैनिक बना दू तो उनके साथ यहाँ से सीधे चले जाना क्योंकि हमारे पास उन्हे खिलाने भर को नहीं है। उन्हें खिलाने लगें तो सारा गाँव एक ही दिन मे चुक जाय।"

सैनिक साइमन ने वचन दिया कि मैं सिपाहियों को लेकर चला जाऊगा। इस पर ईवान ने उन्हें बनाना शुरू किया। एक आँटी धरती पर पटका, एक दल तैयार हुआ। दूसरी से दूसरा। इसी तरह इतने सिपाहियों के दल हो गये कि सारा खेत भर गया।

ईवान ने पूछा "बस ?"

साइमन बहुत प्रसन्न हुआ, बोला—"हाँ, इससे काम चल जायगा। ईवान, मैं तुम्हें धन्यवाद देता हूँ।"

ईवान ने कहा—"अच्छी बात है, अगर तुम्हे और सिपाहियों की आवश्यकता हो तो लौट कर कहना। मैं और बना दूँगा। अब की रार की कोई कमी नहीं है।"

सैनिक साइमन ने अपनी सेना एकत्रित की, उसे सिखा पढा कर ठीक किया और अपने साथ लेकर युद्ध करने चल दिया।

सैनिक साइमन गया भी न होगा कि टरास साहूकार आ पहुँचा। उसे भी कल वाला समाचार मिल चुका था। उसने अपने भाई से कहा—

"मुझे बताओ तुम अशर्फियाँ कहा से लाये। काम शुरू करने के लिये मेरे पास कुछ अशर्फियाँ होतीं तो मैं इसीसे सारे ससार का धन खींच लेता।"

ईवान को बड़ा आश्चर्य हुआ। कहा—

"ऐसी बात है! तो फिर तुमने पहिले क्यों नहीं कहा। जितनी कहो उतनी अशर्फियाँ बना दूँ।"

उसका भाई बहुत प्रसन्न हुआ, बोला—"तब तक तीन टोकरे भर अशर्फियाँ बना दो।"

ईवान—"अच्छी बात है। मेरे साथ जङ्गल मे आओ। या, अच्छा तो यह है कि घोडी जोत लो नहीं तो इतना बोझ तुम उठाओगे कैसे ?"

दोनो घोड़ी जोत कर जङ्गल की ओर चले। ईवान ओक की पत्तियाँ हाथ से मीँजने लगा। अशर्फियो का एक ढेर लग गया। पूछा—

"वस ?"

टरास मारे खुशी के फूल गया। बोला—"इस समय तो इससे काम चल जायगा। ईवान, मैं तुम्हे धन्यवाद देता हूँ।"

ईवान ने कहा—"अच्छी बात है, और अशर्फियो की आवश्यकता हो तो लौट कर कहना, मैं और बना दूँगा। पत्तियो की कोई कमी नहीं है।"

इस प्रकार दोनो भाई चले गये। साइमन तो युद्ध करने के लिये और टरास लेवा-बेची करने के लिये। सैनिक साइमन ने एक राज्य विजय कर लिया। टरास साहूकार ने वडा धन पैदा किया

जब दोनो भाइयों की भेँट हुई तो एक-दूसरे से अपना हाल कहने लगे। साइमन ने बताया कि मुझे सिपाही कहाँ से मिले। टरास ने बताया कि मुझे धन कैसे मिला।

सैनिक साइमन ने कहा—"मैंने एक राज्य जीत लिया है, बड़ी शान-शौकत से रहता हूँ लेकिन सिपाहियों को देने के लिये धन पूरा नहीं पडता।

टरास साहूकार ने कहा—"मेरे पास द्रव्य बहुत है, लेकिन उसकी रक्षा करने वाला कोई नहीं है।"

इस पर सैनिक साइमन कहने लगा कि आओ भाई के पास चलें। मैं उससे और सिपाही माँगूँगा और तुम्हें उन सिपाहियों को दे दूँगा, वे तुम्हारे द्रव्य की रक्षा करेंगे। तुम और द्रव्य माँगकर मुझे दे देना, मैं अपने सैनिकों का पेट भरूँगा।"

यह सलाह कर के दोनों ईवान के पास आये। साइमन ने कहा—"प्यारे भाई, मेरे पास सिपाहियों की कमी है। दो चार आँटी के और सिपाही बना दो।"

ईवान ने सिर हिलाया।

बोला—"न। अब मैं सिपाहियों को नहीं बनाऊँगा।"

"लेकिन तुमने वचन दिया था कि बना दूँगा।"

"मैं जानता हूँ कि वचन दिया था, लेकिन बनाऊँगा नहीं।"

"मूर्ख! क्यों न बनायेगा ?"

"इसलिये न बनाऊँगा कि तुम्हारे सैनिकों ने एक आदमी को मार डाला है। उस दिन सड़क के पास मैं खेत जोत रहा था। देखा कि एक स्त्री, एक गाड़ी पर टिकठी लादे रोती चली जा रही है। मैंने पूछा कि कौन मर गया। उसने कहा—'साइमन के सिपाहियों ने मेरे पतिको युद्ध में मार डाला।' मैं समझता था कि सिपाही लोग केवल बाजा बजावेंगे। परन्तु उन्होंने एक

आदमी को मार डाला। अब मैं तुम्हारे लिये और सिपाही नहीं बना सकता।"

वह अपनी बात पर डटा रहा और फिर और सिपाही नहीं बनाये।

टरास साहूकार भी ईवान से प्रार्थना करने लगा कि मुझे और अशर्फिया बना दो। परन्तु ईवान ने इस पर भी सिर हिलाया।

उसने कहा—"न। मैं और नहीं बना सकता।"

"तुमने वचन नहीं दिया था?

"जरूर दिया था, लेकिन अब मैं और न बनाऊँगा।"

"मूर्ख, क्यो न बनायेगा?"

"इसलिये कि तुम्हारी अशर्फियाँ, माइकेल की लडकी की गाय ले गई।"

"कैसे?"

"कैसे क्या, ले गई। माइकेल की पुत्री के पास एक गाय थी। उसके बाल-बच्चे उसका दूध पिया करते थे। उस दिन उसके बच्चे मेरे यहा दूध माँगने आये। मैंने कहा—"तुम्हारी गाय कहाँ गई।" उन्होंने जवाब दिया, "टरास साहूकार का कारिन्दा आया और उसने माँ को सोने के तीन टुकडे दिये और माँ ने उसे गाय दे दी। अब हम लोग दूध कहाँ से पायें।" मैं जानता था कि तुम अशर्फियों से खेल करोगे, परन्तु तुम बच्चों की गाय ले गये। अब मैं तुम्हारे लिए और न बनाऊँगा।"

ईवान अपनी बात पर डटा रहा, उसने और अशर्फियाँ नहीं बनाईं। तब दोनों भाई चले गये। जाने लगे तो आपस में सलाह करने लगे कि अब क्या करना चाहिये।

साइमन ने कहा—"देखो, मैं बताता हूँ, क्या करना चाहिये। तुम हमें द्रव्य दे दो जिसमें हम सिपाहियों का पेट भरें और मैं तुम्हें अपना आधा राज और सैनिकों को दे दूँगा जिसमें वे तुम्हारे द्रव्य की रक्षा करें। टारस मान गया। भाइयों ने आपस में बाँट-चोंट लिया। दो के दोनों राजा बन गये और अमीर हो गये।"

(८)

ईवान अपना घर ही पर रहा करता, बूढे माता-पिता का भरण-पोषण करता और अपनी गूँगी बहिन के साथ खेती-बारी का काम देखता। ऐसा हुआ कि ईवान की खलिहान रखानेवाली कुत्ती बीमार हो गयी। उसे खुजली हो गई और वह मरने लगी। ईवान को उस पर दया आई तो उसने अपनी बहिन से थोड़ी-सी रोटी ले ली और उसे टोपी में रखकर चला और जाकर रोटी कुत्ती के आगे फेंक दी। टोपी फटी हुई थी। रोटी के साथ एक छोटी-सी जड़ी (जो दूत से मिली थी) भी गिर पड़ी। बुड्ढी कुतिया ने रोटी के साथ उसे भी खा लिया। फिर क्या था, कूदने और भूँकने लगी और दुम हिला-हिलाकर खेल करने लगी। साराश यह कि फिर जैसी की तैसी अच्छी हो गयी।

राजा बहुत प्रसन्न हुआ। उसने ईवान को अपने पास बुला कर बैठाया और उसे अच्छे-अच्छे वस्त्र पहिनवाये।

उसने कहा—"हमारे तुम दामाद बनो।"

ईवान ने कहा—"बहुत अच्छा।"

ईवान ने राजकुमारी से व्याह कर लिया। थोड़े ही दिन बाद राजा मर गया। ईवान ने राज पाया। अब तीनों भाई राजा हो गये।

(९)

तीनों भाई रहने और राज्य करने लगे। सबसे बड़े भाई, सैनिक साइमन की खूब बढती हुई। फूस के सिपाहियो द्वारा उसने सचमुच के सिपाहियों को एकत्र कर लिया। उसने अपने राज्य भर से दस घर पीछे एक सिपाही लेकर फौज मे भरना आरम्भ कर दिया, सिपाही भी लम्बे, अच्छे डील-डौल और आकृति के होते थे। उसने ऐसे बहुत से सैनिक एकत्र करके उन्हें शिक्षा दी। जब कोई उसका प्रतिरोध करता तो वह इन्ही सैनिको को भेज कर उन्हे परास्त करता। इससे सभी उससे डरने लगे और वह भी आराम मे रहने लगा। जिस वस्तु पर दृष्टि डाली और उसकी इच्छा की वह वस्तु उसे प्राप्त हो जाती। वह अपने सैनिकों द्वारा जो वस्तु चाहता प्राप्त कर लेता।

टरास साहूकार की भी चैन से कटती थी। ईवान से जो धन उसने प्राप्त किया था उसे उसने व्यर्थ नहीं जाने दिया वरन्

उसकी वृद्धि की। उसने अपने राज्य में कानून और व्यवस्था का प्रचार किया। अपना धन तहखानों में रखता और लोगों पर कर लगाता। उसने प्रति व्यक्ति पर विशेष कर लगाया, चलने फिरने पर, सवारी पर कर लगाया, और जूते, मोजे और कपड़े पर कर लगाया। जिस वस्तु की इच्छा करता उसे प्राप्त हो जाती। द्रव्य के जोर से लोगों से जो वस्तु चाहता मँगा लेता और जो कार्य चाहता करा लेता—क्योंकि सभी को द्रव्य की इच्छा थी।

मूर्ख ईवान की भी कुछ बुरी नहीं गुजरती थी। अपने ससुर को मिट्टी देने के अनन्तर उसने अपने राजकीय वस्त्र उतार कर अपनी स्त्री को दिये और कहा कि इन्हे पेटी मे रख दो। उसने अपनी गाढे की क़मीज पहिन ली, अपना पुराना पाजामा पहिना, किसान के जूते पहिने और फिर अपने काम में लगा।

उसने कहा—"इसमे मेरा मन नहीं लगता। मैं मोटा होता जा रहा हूँ, भूख नहीं खुलती, नींद कम आती है।" अतएव, उसने अपने माँ-बाप को और गूँगी-बहिन को अपने पास बुला लिया और पहिले की भाँति वह अपने काम मे लग गया।

लोगों ने कहा—"आप तो राजा हैं, ऐसा क्यों करते हैं।"

उसने कहा—"हा, परन्तु राजा को भी खाने की आवश्यकता होती है।"

एक मंत्री ने आकर कहा—"वेतन देने के लिये हमारे पास द्रव्य नहीं रहा।"

उसने उत्तर दिया—"अच्छी बात है, वेतन न दो।"

"तब नौकरी कौन करेगा, लोग काम छोड़ देंगे।"

अच्छी बात है, छोड़ देने दो। अपने धंधे में लगने के लिये उन्हें समय मिलेगा। खाद-पाँस की चिन्ता करेंगे। इसकी बड़ी आवश्यकता है।"

लोग ईवान के पास न्याय के लिये भी आये। एक ने कहा—"इसने मेरा धन चुरा लिया है।" ईवान ने कहा—"अच्छी बात है, इससे यह बात स्पष्ट है कि उसे धन की आवश्यकता थी।"

इससे सब जान गये कि ईवान मूर्ख है। और उसकी स्त्री ने उससे कहा—"लोग कहते हैं कि तुम मूर्ख हो।"

ईवान ने कहा—"अच्छी बात है।"

उसकी स्त्री ने बहुत विचार किया, परन्तु वह भी मूर्ख थी। उसने सोचा—"क्या मैं अपने पति के विरुद्ध जा सकती हूँ? जहाँ-जहाँ सुई जाती है वहा धागा भी पीछे-पीछे जाता है।"

उसने भी अपने राजकीय वस्त्र उतार कर पेटी में रख दिये और अपने पति की गूँगी बहिन से जाकर काम सीखने लगी। उसने काम सीख कर पति की सहायता करना आरम्भ कर दिया।

ईवान के राज्य से सब बुद्धिमान लोग बाहर निकल गये, केवल मूर्ख लोग बच रहे।

किसी के पास धन नहीं था। सभी मिहनत करके जीवन व्यतीत करते थे। आप खाते थे, औरों को भी खिलाते थे।

(१०)

बुड्ढा शैतान इस बात की प्रतीक्षा ही करता रह गया कि हमारे दूत तीनों भाइयों के सत्यानाश का समाचार लाते होंगे। जब उसे कोई भी समाचार न मिला तो वह स्वयं खबर लेने के लिये निकला। उसने बहुत खोजा परन्तु तीनों में से एक का भी पता न चला। हां धरती में जो तीन छेद बन गये थे उन्हें उसने देखा।

उसने सोचा—"जान पड़ता है कि ये लोग अपने उद्योग में असफल रहे, अब मुझे अपने आप यह काम हाथ में लेना पड़ेगा।"

अतएव वह तीनों भाइयों को देखने चला। परन्तु उनमें से कोई भी अपनी पुरानी जगह पर नहीं मिला। उसने तीनों को तीन भिन्न-भिन्न राज्यों में राज्य करते पाया। इससे बुड्ढे शैतान को बहुत बुरा लगा।

उसने कहा—"अच्छा अब इस काम में मैं अपना ही हाथ डालता हूँ।"

सबसे प्रथम वह राजा साइमन के पास गया। वह अ असली भेष में नहीं गया। उसने सेनापति का रूप धारण कि और सवारी पर चढ़ कर साइमन के महल पर पहुँचा।

बोला—"राजा साइमन मैंने सुना है कि आप एक बडे योद्
हैं और, चूँकि मैं भी युद्धकला में निपुण हूँ, मैं आपकी नौक
करना चाहता हूँ।"

राजा साइमन ने उससे प्रश्न किये और यह देखकर
आदमी कुशल है, उसे अपने यहा रख लिया।

नया सेनापति राजा साइमन को शिक्षा देने लगा कि कि
प्रकार एक बलशाली सेना बनाना चाहिये।

उसने कहा—"पहिले तो हमे सेना मे और सैनिक भ
करने चाहिये। आपके राज्य में बहुत से ऐसे लोग हैं जो व्य
साय रहित हैं। हमे सभी युवको को भरती कर लेना चाहि
एक भी युवक न छोडा जाय। इससे आपकी सेना सख्या
पँचगुनी हो जायगी। दूसरे हमे नई बन्दूकें और तोपें
करनी चाहियें। मैं ऐसी बन्दूकों का प्रचार करूँगा जो
दमसे सौ-सौ गोलिया मटर बराबर छोडेंगी। ऐसी तोपें ब
ऊँगा जो आदमियों, घोड़ो, दीवालों सभी को भस्म कर सकेंगी

राजा साइमन ने नये सेनापति की सभी बाते ध्यानपू
सुनीं और आज्ञा दी कि सभी युवक सेना मे भरती किये जाय
कोई भी छूटने न पावें। उसने नवीन प्रकार की बन्दूके
तोपों को तैयार करने के लिए नये कारखाने खुलवाये। इ
बाद शीघ्र ही उसने पडोस के एक राज्य के साथ युद्ध छेड़ दि
जब सेनाओं का आमना-सामना हुआ तो राजा साइमन

आज्ञा दी कि नई बन्दूकों और तोपों से विपक्षी सेना पर गोलों की वर्षा की जाय। एक ही गोलाबारी में विपक्षी की आधी सेना हताहत तथा भस्म हो गई। विपक्षी राजा इतना सहम गया कि उसने अपने राज्य का पतन कर दिया। राजा साइमन बहुत प्रसन्न हुआ।

उसने सोचा—"अब मैं हिन्दुस्तान के राजा पर विजय प्राप्त करूँगा।

परन्तु हिन्दुस्तान के राजा को राजा साइमन के आविष्कारों का पहले ही से पता चल गया था। उसने उन आविष्कारों को तो ग्रहण ही कर लिया था साथ ही और अपने आविष्कार भी कर लिये थे। हिन्दुस्तान के राजा ने केवल सभी युवकों को ही नहीं, वरन् सभी अविवाहिता स्त्रियों को भी भरती कर लिया था और राजा साइमन की सेना से भी बड़ी सेना एकत्रित कर ली थी। उसने राजा साइमन की बन्दूकों और तोपों की नक़ल तो कर ही ली थी, आकाश में उड़ कर बम फेंकने का भी उपाय निकाल लिया था।

राजा साइमन हिन्दुस्तान के राजा से युद्ध करने के लिये चला। वह समझता था कि जैसे पड़ोसी राजा को परास्त किया है वैसे ही उसे भी हरा दूँगा। परन्तु यहाँ उसकी दाल न गल पाई। हिन्दुस्तान के राजा ने साइमन की सेना को समीप आने ही न दिया। उसने स्त्रियों से आकाश में उड़ कर साइमन की सेना पर बमगोले बरसाने को कह दिया। स्त्रियों ने

बोला—"राजा साइमन मैंने सुना है कि आप एक बड़े योद्धा हैं और, चूँकि मैं भी युद्धकला में निपुण हूँ, मैं आपकी नौकरी करना चाहता हूँ।"

राजा साइमन ने उससे प्रश्न किये और यह देखकर कि आदमी कुशल है, उसे अपने यहा रख लिया।

नया सेनापति राजा साइमन को शिक्षा देने लगा कि किस प्रकार एक बलशाली सेना बनाना चाहिये।

उसने कहा—"पहिले तो हमे सेना मे और सैनिक भरती करने चाहिये। आपके राज्य में बहुत से ऐसे लोग हैं जो व्यवसाय रहित हैं। हमें सभी युवको को भरती कर लेना चाहिये, एक भी युवक न छोडा जाय। इससे आपकी सेना सख्या में पॅचगुनी हो जायगी। दूसरे हमे नई बन्दूकें और तोपें प्राप्त करनी चाहिये। मैं ऐसी बन्दूको का प्रचार करूँगा जो एक दमसे सौ-सौ गोलिया मटर बराबर छोडेंगी। ऐसी तोपें बनाऊँगा जो आदमियों, घोडे, दीवालों सभी को भस्म कर सकेंगी।"

राजा साइमन ने नये सेनापति की सभी बातें ध्यानपूर्वक सुनीं और आज्ञा दी कि सभी युवक सेना में भरती किये जायँ—कोई भी छूटने न पावें। उसने नवीन प्रकार की बन्दूकें और तोपों को तैयार करने के लिए नये कारखाने खुलवाये। इसके बाद शीघ्र ही उसने पड़ोस के एक राज्य के साथ युद्ध छेड दिया। जब सेनाओं का आमना-सामना हुआ तो राजा साइमन ने

आज्ञा दी कि नई बन्दूकों और तोपों से विपक्षी सेना पर गोलों की वर्षा की जाय। एक ही गोलाबारी में विपक्षी की आधी सेना हताहत तथा भस्म हो गई। विपक्षी राजा इतना सहम गया कि उसने अपने राज्य का पतन कर दिया। राजा साइमन बहुत प्रसन्न हुआ।

उसने सोचा—"अब मैं हिन्दुस्तान के राजा पर विजय प्राप्त करूँगा।

परन्तु हिन्दुस्तान के राजा को राजा साइमन के आविष्कारो का पहले ही से पता चल गया था। उसने उन आविष्कारों को तो ग्रहण ही कर लिया था साथ ही और अपने आविष्कार भी कर लिये थे। हिन्दुस्तान के राजा ने केवल सभी युवको को ही नहीं, वरन् सभी अविवाहिता स्त्रियों को भी भरती कर लिया था और राजा साइमन की सेना से भी बड़ी सेना एकत्रित कर ली थी। उसने राजा साइमन की बन्दूका और तोपों की नकल तो कर ही ली थी, आकाश में उड कर बम फेंकने का भी उपाय निकाल लिया था।

राजा साइमन हिन्दुस्तान के राजा से युद्ध करने के लिये चला। वह समझता था कि जैसे पडोसी राजा को परास्त किया है वैसे ही उसे भी हरा दूँगा। परन्तु यहाँ उसकी दाल न गल पाई। हिन्दुस्तान के राजा ने साइमन की सेना को समीप आने ही न दिया। उसने स्त्रियों से आकाश में उड कर साइमन की सेना पर बमगोले बरसाने को कह दिया। स्त्रियों ने

"सौदागर ने सब साड खरीद लिये। वे उसके हौज़ में पानी भर रहे हैं।"

राजा का अब कोई काम ही न चलता। उसके यहा कोई काम ही करने न आता—सभी सौदागर के यहा जाकर काम करते। और सौदागर से रुपये लाकर राजा का कर चुका देते।

राजा के पास धन इतना जमा हो गया कि रखने को स्थान न रहा। परन्तु उसका जीवन बड़ा दु खमय हो गया। उसके लम्बे-चौडे मसूबे सब हवा हो गये। किसी प्रकार जीवन काटने की लग रही थी परन्तु उसमें भी कठिनाइया होने लगीं। सभी सामान घटने लगे। धीरे-धीरे उसके रसोइये, साईस और नौकर भी उसे छोड कर सौदागर के पास चले गये। भोजन के लाले पड गये। बाजार से कोई वस्तु खरीदने को आदमी जाता तो यही जवाब लाता कि सब वस्तुयें सौदागर के हाथ बिक चुकी हैं। लोग राजा के पास कर देने के लिये द्रव्य ही ले आते।

राजा टरास बड़ा क्रोधित हुआ। उसने सौदागर को देश से बाहर निकाल दिया। परन्तु सौदागर राज की सीमा से ठीक बाहर जाकर बस रहा और उसने अपना पुराना ढग जारी रक्खा। रुपये के लालच से लोग सभी वस्तुए राजा के पास न लेजाकर उसके ही पास ले जाते।

राजा टरास के लिये मुसीबत हो गई। कई दिन तक बिना भोजन के रहना पड़ा। इस बात तक की सुन-गुन फैल

रही थी कि सौदागर कहता है कि मैं स्वय राजा को खरीद लूँगा। राजा टरास वहुत भयभीत हुआ। उसकी समझ में न आया कि क्या करूँ।

इसी बीच मे उसका भाई सैनिक साइमन भी उसके पास आ गया और कहने लगा, "हिन्दुस्तान के राजा ने मुझे हरा दिया है, मेरी सहायता करो।"

परन्तु यहा राजा टरास की जान के आप ही लाले पड रहे थे। उसने कहा—"मैंने आप दो दिनों से अन्न नहीं किया है।"

(११)

दो भाइयों को परास्त करके बुड्ढा शैतान ईवान के पास पहुँचा। उसने सेनापति का भेष रख लिया और ईवान से कहने लगा कि आप एक सेना का सगठन कीजिए।

बोला—"बिना सेना के राजा की शोभा नहीं। मुझे आज्ञा मात्र दीजिये, मैं आपकी प्रजा में से लोगों को एकत्रित करके एक सेना बना लूँगा।"

ईवान ने उसकी बातों को सुना। फिर कहा—"अच्छी बात है, सेना बना लो और उसे अच्छे-अच्छे गीत सिखा दो। मैं उसके गीत सुनना पसन्द करूँगा।"

अतएव शैतान ईवान के राज्य में फौज की भरती करने के लिये गया। उसने लोगों मे कहा कि 'आओ, सेना में भरती हो

जाओ। सब को एक-एक वोतल शराव और एक-एक सुन्दर लाल टोपी मिलेगी।"

लोग हँसने लगे।

बोले—"हमे शराव की कमी नहीं है। शराव हम आप बना लेते हैं। रही टोपियाँ, सो हमारी स्त्रियाँ सभी किस्म की टोपिया बना लेती हैं। धारीदार और गोट लगी हुई भी बना लेती हैं।"

अतएव कोई भी सेना में भरती न हुआ।

बुड्ढा शैतान ईवान के पास आकर कहने लगा। "आपकी मूर्ख प्रजा ख़ुशी से सेना मे भरती न होगी। आपको उन्हें विवश करना पडेगा।"

ईवान ने कहा—"अच्छी बात है, यह भी कर देखो।"

अतएव शैतान ने यह सूचना निकाली कि सभी को सेना में भरती होना पडेगा। जो ऐसा करने से इनकार करेगा उसे ईवान द्वारा प्राण-दड मिलेगा।"

लोग सेनापति के पास आकर पूछने लगे—"आप कहते हैं कि जो लोग सेना मे भरती न होंगे उन्हें राजा प्राणदड देगा, परन्तु आप ने यह न वताया कि जो लोग भरती होंगे उन्हे क्या होगा। हमने सुना है कि सैनिकों की जान जाया करती है।"

"हाँ, कभी कभी ऐसा भी होता है।"

यह सुनकर तो लोगों ने हठ पकड़ लिया।

कहने लगे—'हम भरती होने न जावेंगे। जब दोनो ही तरह मरना है तो घर पर रह कर ही मरना अच्छा है।'

बुड्ढे शैतान ने कहा—"मूर्खो, तुम लोग बड़े मूर्ख हो! सैनिक की जान जा भी सकती है और बच भी सकती है। परन्तु यदि तुम भरती न होगे तो राजा तुम्हारी जान अवश्य ही ले लेगा।"

लोग बड़े चक्कर मे आये और स्वयं मूर्ख ईवान से सलाह लेने चले।

उन्होंने कहा—"एक सेनापति आया है, वह कहता है कि सबको सेना में भरती होना पड़ेगा। वह कहता है कि अगर तुम सेना मे भरती हो जाओगे तो तुम्हारी जान जा भी सकती है और बच भी सकती है परन्तु सेना मे न भरती होने पर ईवान तुम्हें अवश्य प्राण दण्ड देगा। क्या यह सत्य है ?"

ईवान हँसा, बोला—"मैं अकेले भला तुम सब इतने आदमियों को कैसे मार सकूँगा ? मैं मूर्ख न होता तो तुम्हें समझाता भी, यह बात, सच मे, मेरी समझ मे भी नहीं आती।"

लोग कहने लगे—"तब फिर हम लोग भरती न होंगे।"

ईवान ने कहा—"अच्छी बात है, न भरती हो।"

अतएव लोग लौटकर सेनापति के पास गये और उससे कहा, 'हम सेना मे भरती न होंगे।' बुड्ढे शैतान ने देखा कि यहा मेरी दाल न गलेगी।

वह राज्य छोड कर चला गया। जाकर टरकान के राजा के यहा रहने लगा और उसका विश्वास-पात्र बन गया।

उसने टरकान के राजा से कहा कि, "हमे राजा ईवान के राज्य पर आक्रमण करना चाहिये। वहा रुपया तो अवश्य न हाथ आयेगा परन्तु अन्न और पशुओ और और वस्तुओं की कमी नहीं है।"

टरकान के राजा ने युद्ध की तैयारी आरम्भ कर दी। उसने बडी भारी सेना एकत्रित की, उन्हें बदूकों और तोपो से सजाया और ईवान के राज्य की सरहद पर लडाई करने के लिये चढाई कर दी।

ईवान ने कहा—"अच्छी बात है, उसे आने दो।"

टरकान के राजा ने सरहद पार करके, ईवान की सेना का पता लगाने के लिये सैनिकों की टोली भेजी। उन्होंने बहुत पता लगाया परन्तु वहाँ सेना कहाँ थी। पहले तो इन्तिजार करते रहे कि सेना अब आती है परन्तु सेना का कहीं पता न था। टरकान के राजा ने गाँवों पर अधिकार कर लेने की आज्ञा दी। सैनिक लोग एक गाँव में आये। गाँव के नर-नारी सैनिकों को देखने के लिये निकल पड़े और आश्चर्य करने लगे। सैनिक लोग अन्न और पशुओं को छीनने लगे। लोगों ने उन्हे रोका नहीं, जो लेना चाहते थे ले लेने दिया। सैनिक लोग दूसरे गाव में पहुँचे, वहा भी यही हाल रहा। एक दिन, दो दिन सैनिक

लोग यही करते रहे परन्तु जहा-जहा जाते यही हाल होता। सैनिक लोग जो चाहते गाव वाले उन्हें ले लेने देते, कोई रोकता न, वरन् लोगो ने सैनिको से कहा कि तुम भी हमारे यहा आकर रहो। कहते—"वेचारो, अपने देश मे तुम्हारी कठिनाई से वसर होती है तो हमारे देश मे आकर क्यो नहीं वस जाते ?"

सैनिक लोग इधर-उधर धावा करते रहे परन्तु उन्हे सामना करने वाली सेना न मिली। गाँव के लोग उन्हे खिलाते-पिलाते, लूटने से कोई रोकता न और अन्त मे गाँववाले यही कहते कि अपने देश में तुम्हे तगी है तो यहीं आकर वस जाओ। सैनिकों का जी भी इस प्रकार ऊब गया। वे टारकान के राजा के यहाँ आकर कहने लगे, 'हम यहा नहीं लड़ सकते, हमें और चाहे जहा ले चलिये। लडना हो तो एक बात भी है, लेकिन यह कौन-सी लड़ाई है ? यह तो पानी को तलवार से काटना है ! यहा हम युद्ध न करेंगे। टारकान का राजा बहुत क्रुद्ध हुआ। उसने सैनिकों को आज्ञा दी, "सारे राज्य में उथल-पुथल कर डालो। गाँवों का नाश कर दो, मकानों और गल्ले में आग लगा दो, पशुओ को मार डालो और अगर तुम मेरी आज्ञा का पालन न करोगे तो तुम्ही को मरवा डालूँगा।"

सैनिक भयभीत हुये और राजा की आज्ञा का पालन करने लगे। मकानो को और अनाज को फूँकना और पशुओं की हत्या करना—यही सैनिकों का काम रह गया। मूर्खों ने इस

पर भी किसी का प्रतिरोध न किया। वे रोते मात्र थे। बुड्ढे पुरुष रोते, बुड्ढी स्त्रिया रोती, युवा लोग रोते।

वे कहते—"तुम हमारा नुकसान क्यो करते हो ? इन भली वस्तुओ का नाश क्यो करते हो। यदि तुम्हें इनकी आवश्यकता हो तो तुम इन्हे खुशी से ले जाओ। तुम आप इन्हें क्यों नहीं ले लेते ?"

अन्त मे सैनिकों से यह काम न किया गया। उन्होंने कहा यह व्यर्थ का अत्याचार हमसे न होगा। सेना टूट कर तितर-बितर हो गई।

(१२)

बुड्ढे शैतान की यह चाल भी नहीं चली। वह सैनिकों द्वारा भी ईवान पर विजय न प्राप्त कर सका। अन्त में उसने एक भले मानुस का का भेष बनाया और ईवान के राज्य में आकर बस गया। जिस प्रकार उसने टरास को धन द्वारा परास्त किया था उसी पर उसने अब ईवान को भी परास्त करना चाहा।

उसने कहा—"मैं आप की भलाई चाहता हूँ। आपको सभ्य और बुद्धिमान बनाना चाहता हूँ। मैं आप लोगों के बीच में रह कर एक मकान बनाऊँगा। और आप लोगों को व्यापार करना सिखाऊँगा।"

ईवान ने कहा—"अच्छी बात है। तुम्हारी ऐसी ही इच्छा है तो आकर हमारे यहाँ रहो।"

दूसरे दिन सवेरे ही यह भला मानुस नगर के चौरहे पर एक बोरे मे सोने की अशर्फियाँ भर कर और कागज का एक तख्ता लेकर पहुँचा। बोला—"तुम्हारा सब लोगों का जीवन शूकर के जीवन के समान है। मैं तुम्हे जीवन का यथार्थ ढग बताना चाहता हूँ। मेरे लिये इस नक्शे का एक घर बनाओ। मैं जिस प्रकार बताऊँगा वैसे तुम्हें काम करना होगा। मैं तुम्हें सोने की अशर्फियाँ मजदूरी मे दूँगा।" यह कह कर उसने लोगों को सोने की अशर्फियाँ दिखाई।

मूर्ख लोग अचम्भे मे आ गये। उनके यहाँ मुद्रा का व्यवहार तो होता न था। वे आपस में वस्तुओं की बदली कर लिया करते या वस्तुओ के बदले मजदूरी कर दिया करते थे। सोने की मुद्राये उन्होंने बडे आश्चर्य के साथ देखीं।

वे बोले—"कैसी सुन्दर छोटी-छोटी वस्तुए हैं।"

अब वे लोग अपनी वस्तुओ तथा मजदूरी की बदली इस भलेमानुस के सोने के टुकडो से करने लगे। बुड्ढा शैतान सोना उसी प्रकार लुटाने लगा जिस प्रकार कि उसने टरास के राज्य मे लुटाया था। लोग सभी वस्तुए सोने से बदल लेते और सोने के बदले मजदूरी भी करते।

बुड्ढा शैतान बहुत प्रसन्न हुआ। उसने सोचा काम तो बडे ढग से चल रहा है। अब मैं इस मूर्ख का उसी प्रकार सत्यानाश कर दूँगा जिस प्रकार मैंने टरास का नाश किया था।

परन्तु इन मूर्खोंके पास जब सोने के टुकड़े कुछ हो गये तो उन्होंने इन टुकड़ों से अपनी स्त्रियों के लिये हार बनवा दिये। युवतियाँ इनसे अपने काकुलो को सजाने लगीं। बच्चे इनसे गली मे खेल खेलने लगे। जब लोगो के पास अशर्फ़ियाँ बहुत हो गई तो उन्होंने अशर्फियाँ लेना बन्द कर दिया। परन्तु अभी उस भलेमानुस का महल आधा भी नहीं बन पाया था। और साल भर के खर्च के लिये अनाज भी नहीं जुटा था और न पशुओ का ही इन्तिज़ाम हो सका था। उसने लोगो को काम करने के लिये बुलवाया, उनसे अन्न तथा पशु लाने तथा सब के लिये बहुत सी अशर्फ़िया देने की बात कही। सभी चीजो के अलग अलग दाम बताये गये।

परन्तु न कोई काम करने आया और न कोई सामान ही लाया। कभी कभी एकाध लड़के लडकिया आकर एकाध अण्डे देकर अशर्फ़िया ले जाते। इनके अतिरिक्त कोई न आता। अब उसके पास खाने को भी न बचा। भूख लगने पर वह भला मानुस गाँव मे कुछ भोजन खरीदने निकला। एक किसान के यहाँ पहुँचा। एक मुर्गी के लिये एक अशर्फी देना चाहा, लेकिन घरवाली ने कहा, 'इसकी मुझे आवश्यकता नहीं है।'

बोली—"यों हीं मेरे पास बहुत सी अशर्फ़ियाँ पड़ी हैं।"

इसके बाद वह एक विधवा के घर पर गया। एक अशर्फी देकर एक मछली माँगी।

यह बोली—"धाना मुझे यह न चाहिये। घर में कोई बाल-बच्चे भी नहीं हैं जो इसे खेलें। रहा देखने के लिये, सो मेरे पास तीन अशर्फियाँ आप रक्खी हुई है।

एक और किसान के यहाँ एक अशर्फी देकर रोटी लेनी चाही। परन्तु उसने भी अशर्फी लेने से इनकार किया।

कहने लगा—"मुझे इसकी आवश्यकता नहीं है। हा मसीह के नाम पर माँगते हो तो ठहरो, मैं घर वाली से कहता हूँ, तुम्हें एक टुकडा रोटी ला देगी।"

शैतान धरती पर थूक कर भाग गया।

मसीह का नाम सुनने से उसे ऐसा दु ख हुआ जैसे कि कोई शरीर मे छुरी भोंकता हो। मसीह के नाम पर रोटी का टुकड़ा लेना तो शैतान के लिये बहुत दूर रहा।

अन्त मे उसे रोटी न मिली। अशर्फियो की किसी को आवश्यकता न थी। जिसके पास वह जाता वही कहता कि या तो कोई और वस्तु लाओ या मसीह के नाम पर माँग रहे हो तो लो।'

बुड्ढे शैतान के पास द्रव्य को छोड़ कर और कुछ था ही नहीं। काम से वह कोसो भागता था। मसीह के नाम पर कुछ लेना नहीं चाहता था। शैतान को बहुत क्रोध आया।

बोला—"जब मैं द्रव्य दे रहा हूँ तो तुम और कोई वस्तु क्यो माँगते हो? इससे—सोने से—तुम क्या नहीं खरीद सकते हो?

किससे मजदूरी नहीं करा सकते हो ?" परन्तु मूर्खों ने उसकी एक न सुनी।

बुड्ढा शैतान अन्त मे विना भोजन किये सो रहा।

" इसके वाद यह समाचार मूर्ख ईवान के कानो तक पहुँचा। लोगो ने उससे आकर पूछा कि क्या करना चाहिये ?

एक भला आदमी आ गया है। खाना पीना, अच्छे वस्त्र पहनना तो चाहता है लेकिन न काम करना चाहता है और न मसीह के नाम पर कुछ भीख लेना चाहता है। अशर्फिया देता है। पहिले तो लोगो ने अशर्फियो के वदले उसे सव कुछ दिया लेकिन अव किसी को अशर्फिया न चाहिये। कोई उसे कुछ देता नहीं। किया क्या जाय ? यही हाल रहा तो वह शीघ्र ही मर जायगा।"

ईवान ने यह हाल सुना।

फिर कहा—"अच्छी वात है, लोग इसे वारी-वारी भोजन दो, जिस प्रकार गडरिये को भोजन देते हैं।"❀

और कोई चारा न था। वुड्ढा शैतान इस प्रकार लोगो के घर से वारी-वारी भोजन पाता।

इस प्रकार ईवान के यहाँ से भी भोजन पाने की वारी आई।

❀ रूस में ऐसी प्रथा थी।

बुड्ढा शैतान भोजन करने आया। ईवान की गूँगी बहिन खाना पका रही थी।

ईवान की बहिन का यह नियम था कि वह इस प्रकार भोजन के लिये आने वालो के हाथ देख लिया करती थी तब उन्हें भोजन कराती थीं। जिनके हाथ कोमल और चिकने होते थे उन्हें तो वह जूठन और बचा हुआ भोजन देती थी, परन्तु जिनके हाथ कडे और खुरदरे होते थे उन्हें मेज पर बैठा कर भोजन कराती थी। इससे उसका तात्पर्य यह था कि सचमुच मिहनत-मजदूरी करने वाले अच्छा भोजन पावें और आलसी लोग उसे धोखा न दे सकें।

बुड्ढा शैतान मेज पर भोजन करने आ बैठा परन्तु उस गूँगी ने आकर उसका हाथ पकड लिया और उसे बडे ध्यान से देखने लगी। शैतान के हाथ में कडापन न था और न मिहनत के कोई चिन्ह थे। उसके हाथ साफ चिकने थे और उसके नाखून लम्बे थे। गूँगी ने बरांकर शैतान को मेज से खींच कर अलग कर दिया। ईवान की स्त्री बोल उठी—"भले आदमी बुरा न मानो। मेरी बहिन किसी ऐसे आदमी को मेज पर नहीं बैठने देती जिसके हाथों पर मिहनत के चिन्ह नहीं होते। लेकिन जरा ठहर जाओ, और लोग खा लेंगे तो तुम्हें भी भोजन मिल जायगा।"

बुड्ढा शैतान इस वात पर बहुत नाराज़ हुआ कि राजा के घर आकर भी सुअर की भाँति भोजन मिले। उसने ईवान, से कहा—"तुम्हारे राज्य का यह नियम कि हर आदमी अपने हाथों से मजूरी का काम करे वडी मूर्खता का नियम है। यह तुम्हारी ही मूर्खता की उपज हैं। क्या सभी मनुष्य मज़दूरी किया करते हैं? आख़िर बुद्धिमान् लोग किस वस्तु का उपयोग करते हैं?"

परन्तु ईवान ने कहा—"हम मूर्खों को इसका क्या पता? हम लोग तो अपना काम अधिकतर अपने हाथों और पीठ के बल पर करते हैं।"

"तुम मूर्ख हो जो ऐसा करते हो। मैं तुम्हे दिमाग से काम करना सिखाऊँगा। तव तुम जानोगे कि हाथ से काम करने से अच्छा दिमाग से काम करना है।"

ईवान अचम्भे में आ गया।

उसने कहा, "यदि ऐसी वात है तो फिर इसमे क्या झूठ है कि हम लाग मूर्ख हैं!"

शैतान कहता रहा—"हा, सिर से या दिमाग से काम करना इतना सरल नहीं है। तुम हमे भोजन इस लिये नहीं देते कि हमारे हाथो पर मिहनत के चिन्ह नहीं हैं। तुम क्या जानो कि सिर से काम करना कहीं अधिक कठिन है। कभी कभी मिहनत के मारे सिर फटने लग जाता है।"

ईवान सोचने लगा।

फिर बोला—"मित्र, अगर तुम्हारी ऐसी दशा हो जाती है तो तुम क्यों अपने आपको इस प्रकार दण्ड देते हो? सिर फटने में क्या आनन्द आता है? क्या हाथों और पीठ के बल से काम करना इससे कहीं अधिक सरल नहीं है?"

परन्तु शैतान ने जवाब दिया—"अरे मैं तो तुम मूर्खों पर तरस खाकर यह आपत्ति सिर पर उठाता हूँ। यदि इस प्रकार मैं त्रास न उठाऊं तो तुम लोग सदा मूर्ख बने रहो। परन्तु मैंने सिर के बूते भी काम किया है और यह तुम्हें भी सिखा सकता हूँ।"

ईवान फिर अचम्भे में आया।

बोला—"ऐसा है।तो हमें अवश्य सिखा दो, जिससे हाथों के थक जाने और दुखने पर हम सिर से ही काम निकाला करें।"

शैतान ने सिखाना स्वीकार किया।

अतएव ईवान ने अपने राज्य भर में इस बात का ढिंढोरा पिटवा दिया, "एक भलामानुस आया है जिसका कहना है कि हाथों की जगह सिर से काम करना सिखा सकता हूँ। और वह यह भी कहता है कि सिर के द्वारा हाथों से अधिक काम हो सकता है। लोगों को आकर यह शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये।"

ईवान के राज्य में एक ऊँचा मीनार था। उसमें बहुत सी

सीढियाँ थीं और सब से ऊपर एक लालटेन लगी हुई थी। ईवान इस भलेमानुस को उस मीनार के ऊपर ले गया—जिसमें लोग उसे अच्छी तरह देख सक।

लोग समझ रहे थे कि वह सचमुच दिखायेगा कि हाथ का काम सिर से कैसे होता है। परन्तु शैतान केवल इस बात की शिक्षा देता रहा कि मनुष्य बिना कार्य किये हुये कैसे जीवन व्यतीत कर सकता है। लोग उसकी बातें जरा भी न समझे। वह लोग कुछ समय तक तो यह तमाशा देखते रहे और विचार करते रहे, फिर अपने अपने काम पर चले गये।

बुड्ढा शैतान उस मीनार पर दिन भर खडा रहा, उसके बाद दूसरे दिन भी खडा रहा और बकता रहा। परन्तु वहाँ खड़े-खडे उसे भूख लग आई। और मूर्खों ने इसकी आवश्यकता न समझी कि भोजन उसके पास ऊपर पहुँचा दें। उन्होंने समझा कि जब यह हाथों से अधिक अपने सिर से काम ले सकता है तो अपने पेट के लिये उसे क्या चिन्ता हो सकती है?

बुड्ढा शैतान एक दिन तक और इसी तरह व्याख्यान देता रहा। लोग निकट तक आते, उसे तनिक देर तक देखते और फिर लौट जाते।

ईवान ने पूछा—"क्यो, भले आदमी ने सिर से काम करना आरम्भ किया कि नहीं?"

लोगों ने कहा—"अभी नहीं, अभी तक उसका मुँह चला जा रहा है।"

बुड्ढा शैतान एक दिन तक और मीनार पर खडा वकता रहा, परन्तु अब उसे कमजोरी आने लगी। इतनी कमजोरी आ गई कि वह लडखडाया और उसका सिर लालटेन के खभे से टकरा गया। एक आदमी ने यह देख कर ईवान की स्त्री का ध्यान इधर आकर्षित किया।

वह अपने पति के पास दौड कर खेत मे पहुँची। ईवान खेत मे काम कर रहा था। वह कहने लगी, "आओ, देखो, लोग कहते हैं कि भलेमानुस ने सिर से काम करना आरम्भ कर दिया।"

"ऐसी वात है ?" कहता हुआ ईवान अपने घोडों को फेर कर मीनार के पास आया। शैतान विल्कुल वेकार हो रहा था। उसका सिर वार-वार खम्भे से टकरा जाता। जैसे ही ईवान वहाँ पहुँचा वैसे ही शैतान का पैर फिसल गया। और वह धम, धम, धम करता हुआ सीढियों से गिरता हुआ जमीन पर आ गया। हाँ प्रत्येक सीढी पर उसका सर ऐसा टकराया कि नीचे आते-आते वहुत चोट आ गई।

ईवान वोला—"भला आदमी सच कहता था कि कभी-कभी सिर फटने लगता है। छाले पड जाने मे बुरा हाल है। इसका सिर फूल आयेगा।"

जब बुड्ढा शैतान सीढियों से नीचे आ गया तो उसने अपना सिर धरती पर पटक दिया। ईवान उसके पास जाकर यह देखने ही वाला था कि उसने कितना काम किया, इतने में धरती फट गई और वह उसी के भीतर समा गया। केवल एक छेद बाकी रह गया।

ईवान ने अपना सिर खुजलाया।

"कैसी बुरी बात है! अरे, यह तो उन्हीं शैतानों मे से एक जान पडता है। यह उन सब का बाप रहा होगा।"

ईवान अब भी जीवित है, उसके राज्य मे दर्शक लोग झुड के झुड पहुँचा करते हैं। उसके भाई भी उसी के पास आ गये हैं। वह उनका भी पेट भरता है। जो भी उससे भोजन माँगता है उससे वह कहता है "अच्छी बात है, ठहरो हमारे पास सभी वस्तुऐं मौजूद हैं।"

इस राज्य का केवल एक नियम है। जिसके हाथो पर मिहनत के चिह्न होते हैं उसे तो मेज पर भोजन मिलता है और जिसके हाथों पर ऐसे चिह्न नहीं होते वह औरो के खाने पर जो बच रहता है वह पाता है।

Printed by S P Khanna, at the Hindi Sahitya Press, Allahabad